भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 277 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शुक्रवार 01 सितम्बर 2021 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस हजार वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

स्वामी श्री योगी सत्यम्
क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान
प्रयागराज
10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

कांग्रेस में मचे घमासान पर जी-23 नेताओं के बाद अब पी चिदंबरम आए सामने, बोले- असहाय महसूस कर रहा हूं

नई दिल्ली (एजेंसी)। पंजाब कांग्रेस में जारी संकट को लेकर कपिल सिब्बल, गुलाम नबी आजाद, मनीष तिवारी के बाद अब पी चिदंबरम ने भी पार्टी के खिलाफ आवाज बुलंद कर दी है। पी चिदंबरम ने गुरुवार को एक ट्वीट करते हुए कहा कि जब हम पार्टी मंचों के भीतर सार्थक बातचीत शुरू नहीं कर पाते हैं तो मैं असहाय महसूस करता हूं। इसके साथ-साथ चिदंबरम ने कपिल सिब्बल के घर के सामने हुए विरोध प्रदर्शन को लेकर भी आवाज उठाई है। बता दें कि नवजोत सिंह सिद्धू की ओर से पंजाब कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने के बाद राज्य में एक नया राजनीतिक संकट खड़ा हो गया है।

देश में हर चौथे वयस्क को लग चुकी हैं कोरोना वैक्सीन की दोनों डोज, अकेले सितंबर में लगे 23 करोड़ से अधिक टीके

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में 18 साल से अधिक उम्र के हर चौथे वयस्क को कोरोना वैक्सीन की दोनों डोज लग चुकी है। जबकि 69 फीसद को एक डोज लग चुकी है। अकेले सितंबर महीने में देश में वैक्सीन की 23 करोड़ से अधिक डोज दी गई जो मई में दी गई डोज की तुलना में लगभग चार गुना अधिक है। टीकाकरण की तेज रफ्तार के बावजूद सरकार ने आगामी त्योहारी सीजन में लोगों से भीड़-भाड़ से बचने और कोरोना उपयुक्त व्यवहार के पालन करने को कहा है। देश में कोरोना टीकाकरण की स्थिति की जानकारी देते हुए केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव राजेश भूषण ने कहा कि बुधवार तक देश में वैक्सीन के कुल 88.35 करोड़ डोज लग गए थे और माना जा रहा है कि गुरुवार को यह 89 करोड़ डोज का आंकड़ा पार कर जाएगा। हिमाचल प्रदेश, चंडीगढ़, गोवा, सिक्किम, लक्षद्वीप और अंडमान-निकोबार जैसे छोटे राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में सौ फीसद लोगों को पहला डोज दिया जा चुका है।

वहीं मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, गुजरात, केरल जैसे 10 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में 80 फीसद से अधिक लोगों को एक डोज मिल चुका है। जबकि राजस्थान, पंजाब, कर्नाटक, छत्तीसगढ़ जैसे 15 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में 60 से 80 फीसद के बीच और उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, बंगाल जैसे सात राज्यों में अब तक 60 फीसद से कम वयस्क आबादी को एक डोज मिल पाया है।स्वास्थ्य मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि देश में कोरोना टीकाकरण की रफ्तार तय रोडमैप के हिसाब से चल रही है और 31 दिसंबर तक सभी वयस्कों के संपूर्ण टीकाकरण का लक्ष्य कमोबेश हासिल कर लिया जाएगा। दरअसल देश में वयस्क आबादी 93-94 करोड़ है और उनके संपूर्ण टीकाकरण के लिए 186-188 करोड़ डोज की जरूरत पड़ेगी। गुरुवार तक लगभग 89 करोड़ डोज लगने के बाद अगले तीन महीने में संपूर्ण टीकाकरण के लिए 100 करोड़ से कम डोज की जरूरत पड़ेगी।

भारत बायोटेक और सीरम इंस्टीट्यूट अक्टूबर महीने में 30 करोड़ डोज सप्लाई करने जा रही है। नवंबर और दिसंबर में इसके और बढ़ने की उम्मीद है। इसके साथ ही राजेश भूषण ने कहा कि जायडस-कैडिला की वैक्सीन भी जल्द ही टीकाकरण अभियान का हिस्सा बन जाएगी। वहीं बायोलाजिकल ई की वैक्सीन के भी अक्टूबर-नवंबर तक आने की उम्मीद है। यही कारण है कि सरकार ने देश के टीकाकरण अभियान के बाद बची हुई अतिरिक्त वैक्सीन को अक्टूबर से दूसरे देशों को सप्लाई करने की अनुमति देने का फैसला किया है। केंद्र सरकार ने प्रधानमंत्री के जन्मदिन के अवसर पर टीकाकरण की अधिक संख्या को दिखाने के लिए पुराने आंकड़े को शामिल किये जाने के आरोप को खारिज कर दिया है।

एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी बने नए वायुसेना प्रमुख

नई दिल्ली (एजेंसी)। एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी भारतीय वायुसेना के नए प्रमुख बन गए हैं। उन्होंने आरकेएस भदौरिया की जगह ली है। एयर चीफ मार्शल विवेक राम चौधरी जो चीन के साथ संकट के चरम के दौरान लद्दाख सेक्टर के प्रभारी थे, उन्होंने गुरुवार को एयर चीफ मार्शल आरकेएस भदौरिया से नए वायु सेना प्रमुख के रूप में पदभार संभाला। निवर्तमान वायुसेना अध्यक्ष आरकेएस भदौरिया आज वायुसेना से रिटायर हो गए। रिटायरमेंट से पहले निवर्तमान वायुसेना चीफ ने आज दिल्ली में राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। आरकेएस भदौरिया 42 साल की सेवा के बाद सेवानिवृत्त हुए हैं। इस दौरान उन्होंने 36 राफेल और 83 मार्क1ए स्वदेशी तेजस जेट सहित दो मेगा लड़ाकू विमान सौदों में अहम भूमिका निभाई थी। उनका करियर 'पैथर्स' स्क्वाड के साथ श्छ-21 की उड़ान के शुरू हुआ था और फिर उसी एयरबेस पर और उसी स्क्वाड्रन के साथ ही समाप्त हुआ। पूर्व एयर चीफ मार्शल आरकेएस भदौरिया ने 13 सितंबर को 23 वर्ग, हलवारा में वायु सेना प्रमुख के रूप में एक लड़ाकू विमान में अपनी अंतिम उड़ान भरी। एयर चीफ मार्शल भदौरिया ने सितंबर 2019 में वायुसेना प्रमुख का पद संभाला था।

मनीष गुप्ता हत्याकांडः मुख्यमंत्री योगी बोले- दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करें

लखनऊ (एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखपुर में कानपुर के व्यवसाई मनीष गुप्ता की पुलिस द्वारा पीट कर की गई हत्या के मामले में कड़ा रुख अपनाया है। उन्होंने कहा है कि गंभीर अपराधों में लिप्त पुलिस अधिकारी व कर्मी बर्खास्त किए जाएंगे। उन्होंने मातहतों को निर्देश दिए हैं कि वह दागी पुलिस कर्मियों और अधिकारियों की सूची उपलब्ध कराएं। पुलिस कर्मियों द्वारा संचालित अवैध गतिविधियां किसी भी हाल में स्वीकार्य नहीं हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ ने टीम-9 की बैठक में कहा कि हाल के दिनों में कई पुलिस अधिकारियों व कर्मियों के अवैध गतिविधियों में लिप्त होने की शिकायतें मिली हैं। इस तरह की शिकायतें स्वीकार्य नहीं हैं। विभाग में ऐसे पुलिस कर्मियों के लिए कोई स्थान नहीं है। ऐसे लोगों के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रमाण के साथ ऐसे लोगों को चिन्हित कर सूची उपलब्ध कराएं। उन्होंने कहा कि पूरे प्रदेश में दागियों के

अपराध में लिप्त अफसरों को बर्खास्त करें

खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि अति गंभीर अपराधों में लिप्त पुलिस अधिकारियों और कार्मिकों की बर्खास्तगी की जाए। इसके अलावा दागी पुलिस अधिकारियों व कर्मियों को फील्ड में तैनाती न दी जाए।

डीजीपी मुकुल गोयल ने बताया कि दागी पुलिस कर्मियों व अधिकारियों को चिन्हित करने के लिए दो अलग-अलग समितियां बनाई गई हैं। अपर पुलिस अधीक्षक और पुलिस उपाधीक्षक की जांच के लिए बनाई गई कमेटी में डीजी इंटेलीजेंस डीएस चौहान को अध्यक्ष और एडीजी कानून व्यवस्था प्रशांत कुमार व सचिव गृह विभाग तरुण गाबा को सदस्य बनाया गया है। जबकि दूसरी समिति जो इंस्पेक्टर और सब इंस्पेक्टर की स्क्रूटनी करेगी उसमें एडीजी कानून व्यवस्था को अध्यक्ष और एडीजी स्थापना संजय सिंघल व सचिव गृह बीडी पाल्सन को सदस्य बनाया गया है। डीजीपी ने बताया कि जल्द ही यह दोनों समितियां अपनी रिपोर्ट देंगी और फिर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

कचरा मुक्त होंगे शहर, जल सुरक्षा की मिलेगी गारंटी : पीएम मोदी

आज लांच करेंगे स्वच्छ भारत मिशन और अमृत का दूसरा चरण

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्वच्छता अभियान की सफलता के बाद शहरों को कचरा मुक्त बनाने और उन्हें जल सुरक्षा प्रदान करने वाली दो प्रमुख योजनाओं का शुक्रवार को यहां प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शुभारंभ करेंगे। अगले पांच वर्षों के भीतर शहरों से निकलने वाले कचरे का वैज्ञानिक प्रबंधन किया जाएगा, जिससे महानगरों व शहरों के बाहरी हिस्से में कूड़े के पहाड़ बनने की नौबत नहीं आएगी। इसी तरह देश के सभी शहरों में हर घर को जल के लिए नल कनेक्शन से जोड़ा जाएगा। इसके साथ ही शहरों के सीवेज के पानी को साफ कर दोबारा उपयोग करने लायक बनाया जाएगा।

प्रधानमंत्री मोदी शुक्रवार को स्वच्छ भारत मिशन और 'अमृत' के दूसरे चरण की शुरुआत करेंगे। स्वच्छता अभियान के पहले चरण की सफलता के बाद उसे बनाए रखने और नए मुकाम तक पहुंचाने के लिए प्रधानमंत्री मोदी की पहल पर दूसरे चरण की तैयारी कर ली गई है। इसके तहत साफ-सफाई से निकलने वाले कूड़े का प्रबंधन बहुत जरूरी है। 2014 तक शहरी क्षेत्रों से निकलने वाले मात्र 18 फीसद यानी 26 हजार टन कूड़े का ही निस्तारण होता था। यह अब बढ़कर 70 फीसद यानी 95 हजार टन तक पहुंच गया है। अब भी 30 हजार टन से अधिक कूड़ा बिना निस्तारण के फेंका जाता है। शहरी विकास मंत्रालय का दावा है कि वह स्वच्छता मिशन में तकरीबन 45 फीसद शहरी आबादी को साथ जोड़कर आगे बढ़ रहा है।

केंद्रीय शहरी विकास सचिव डीएस मिश्र ने अनौपचारिक बातचीत में बताया कि स्वच्छता क्षेत्र में तकरीबन 10 हजार से अधिक उत्पाद तैयार हो गए हैं। नए उद्यम से रोजगार के बड़े अवसर तैयार हुए हैं। सरकारी पोर्टल जेम्स पर हजार उत्पाद बेचे जा रहे हैं। कायाकल्प व शहरी परिवर्तन के लिए तैयार अटल मिशन (अमृत) के दूसरे चरण को पूरी तरह डिजिटल बनाया जाएगा। शहर आधारित कार्य योजना तैयार की जाएगी। शहरी सीमाओं के गांवों में भी सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। किसी भी शहर को वित्तीय मदद उसकी योजनाओं के कार्यान्वयन के बाद दी जाएगी। निजी क्षेत्र की पूरी सहभागिता होगी। अमृत योजना में जल सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। शहरी क्षेत्रों से निकले सीवेज के पानी का प्रसंस्करण कर उसकी दोबारा आपूर्ति पर जोर दिया जाएगा। अगले पांच वर्षों के भीतर देश के सभी शहरों को तीन स्टार वाला बनाने का लक्ष्य है। शहरी क्षेत्र के औद्योगिक क्षेत्रों के 40 फीसद पानी की मांग को ट्रीटेड सीवेज के पानी से पूरा किया जाएगा। 20 फीसद सीवेज के ट्रीटेड पानी का उपयोग शौचालयों में फ्लुश के लिए किया जा सकता है।

भवानीपुर उपचुनावः आरोप-प्रत्यारोपों के बीच मतदान रहा शांतिपूर्ण

कोलकाता (एजेंसी)। भवानीपुर उपचुनाव में गुरुवार को आरोप-प्रत्यारोपों और छिटपुट घटनाओं के बीच मतदान शांतिपूर्ण ढंग से पूरा हो गया। यहां पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी अपना पद बरकरार रखने के लिए चुनाव लड़ रही हैं। शाम पांच बजे तक इस सीट पर करीब 53.32 फीसदी मतदान हुआ। चुनाव आयोग ने कहा कि कुल कितना मतदान हुआ इसका आंकड़ा शुक्रवार को मिलेगा। मुर्शिदाबाद के समसेरगंज और जंगीपुर सीटों पर क्रमशः 78.60 प्रतिशत और 76.12 प्रतिशत मतदान हुआ। यहां दो उम्मीदवारों की मृत्यु के बाद अप्रैल-मई विधानसभा चुनाव के दौरान मतदान रद्द करना पड़ा था। भवानीपुर में तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो एवं सीएम ममता बनर्जी का मुकाबला भाजपा की प्रियंका टिबरेवाल और माकपा के श्रीजीब विश्वास से था। ममता बनर्जी ने मित्रा इंस्टीट्यूशन स्कूल में अपना वोट डाला। निर्वाचन क्षेत्र के कुछ इलाकों से भाजपा और टीएमसी समर्थकों के बीच हाथापाई की छिटपुट घटनाएं भी हुईं। भाजपा उम्मीदवार प्रियंका ने कहा कि टीएमसी ने वार्ड नंबर 72 के पोलिंग

बूथ पर जबरन मतदान रुकवा दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि फिरहाद हाकिम और सुब्रत मुखर्जी अपने क्षेत्र में मतदाताओं को प्रभावित कर रहे थे। भाजपा ने दोनों नेताओं के खिलाफ चुनाव आयोग में शिकायत दर्ज कराई।

हालांकि, हाकिम ने आरोपों को निराधार बताया। उन्होंने कहा कि क्या सड़क किनारे चाय पीने से मतदाताओं पर प्रभाव पड़ता है? भाजपा जानती है कि वह उपचुनाव हार जाएगी और अब बेकार बहाना बना रही है। भवानीपुर में एक बूथ के बाहर टीएमसी और भाजपा के समर्थकों के बीच मामूली हाथापाई की सूचना मिली थी, कहा गया था कि सत्तारूढ़ दल नकली मतदाताओं को मतदान केंद्र के अंदर ला रही है। यहां सुरक्षा बलों ने स्थिति को नियंत्रण में किया। टीएमसी ने चुनाव आयोग में शिकायत भी दर्ज की, जिसमें टिबरेवाल पर 20 कारों के साथ घूमने और मतदाताओं को डराने-धमकाने का आरोप लगाया। प्रियंका ने इस आरोप से इनकार किया। भाजपा ने बाद में आरोप लगाया कि उसके पोलिंग एजेंटों को कई बूथों के अंदर प्रवेश नहीं दिया गया। हाकिम ने कहा कि ऐसे दावे राजनीति से प्रेरित हैं। एक अन्य घटना में हिंदुस्तान अवाम मोर्चा-सेकुलर के चुनाव एजेंट के तौर पर कार्य कर रहे भाजपा नेता कल्याण चौबे पर हमला हुआ। चौबे ने कहा कि एक स्कूल में बने पोलिंग बूथ में दो लोग फर्जी वोटिंग करने आए थे। हमने उन्हें रंगे हाथों पकड़ा और पुलिस व केंद्रीय बलों को सूचित किया। इसके कुछ देर बाद 8-10 लोग बाइक पर आए और मुझ पर और मेरी कार पर डंडों और पत्थरों से हमला बोल दिया।

डिप्टी सीएम केशव मौर्य का दावा, योगी सरकार ने यूपी को अपराध मुक्त और भ्रष्टाचार मुक्त बनाने का किया काम

मेरठ (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने किसान आंदोलन को लेकर विपक्षी दलों पर तीखा हमला बोला है। गुरुवार को मेरठ के एकदिवसीय दौरे पर पहुंचे केशव ने कहा कि जनता के नकारे हुए सपा, बसपा, कांग्रेस और रालोद जैसे दल आंदोलन चला रहे हैं। ये दल पर्दे के पीछे से किसानों के नाम पर राजनीति कर रहे हैं। इस दौरान, उन्होंने मेरठ में करोड़ों की योजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया। उपमुख्यमंत्री केशव मौर्य गुरुवार को एकदिवसीय दौरे पर मेरठ पहुंचे।

यहां मेवला फ्लाईओवर के नामकरण के बाद सर्किट हाउस में पीडब्लूडी, सेतु निगम की करोड़ों रुपये की योजनाओं का शिलान्यास, लोकार्पण किया। सर्किट हाउस में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने सरकार की उपलब्धियां गिनाते हुए दावा किया कि अपराध मुक्त और भ्रष्टाचार मुक्त उप्र बनाने का काम किया गया। अब प्रदेश में गुंडों की नहीं, कानून की सरकार है। उन्होंने कहा कि भाजपा सबका साथ सबका विकास के तहत काम कर रही है। जो सीट जीते हैं, वहां काम हो रहा है और जो नहीं जीते वहां भी काम कर रहे हैं।

दिल्ली के डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया का ऐलान

यूपी में आप की सरकार बनी तो 25 प्रतिशत तक करेंगे शिक्षा का बजट

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। दिल्ली के उप मुख्यमंत्री एवं शिक्षामंत्री मनीष सिसोदिया गुरुवार को प्रयागराज आए। सर्किट हाउस में उन्होंने पत्रकारों से कहा कि उत्तर प्रदेश में आम आदमी पार्टी की सरकार बनेगी तो शिक्षा का बजट 13 से बढ़ाकर 25 फीसदी किया जाएगा।

आप का जनाधार यूपी में तेजी से बढ़ रहा, जिससे वर्तमान सरकार डरी है। उत्तर प्रदेश में शिक्षा की हालत बहुत खराब है। राजनीतिक पाटियों ने जाति और धर्म की नीति प्रमुख मानते हुए शिक्षा को गर्त में डाल दिया है। प्राथमिक शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है, सभी दुखी है। शासन से मिलकर निजी स्कूलों में मनमानी फीस वसूली जा रही है। चुनावी चंदे के लिए शिक्षा का बाजारीकरण करने वालों पर कार्रवाई नहीं की जा रही है।आप की सरकार बनेगी तो मनमानी फीस वसूलने वालों पर सख्त अभियान

चलेगा। दिल्ली के उपमुख्यमंत्री ने कहा कि हम यूपी के चुनाव में विकल्प नहीं प्रमाण के साथ आएंगे। शिक्षा का स्तर बेहतर होगा तो सभी का भविष्य भी सुरक्षित रहेगा, जिसके लिए हम शिक्षा को मुद्दा बनाकर लोगों के बीच पहुंच रहे हैं। यूपी में बिजली की कीमत मनमाने तरीके से बढ़ाई जा रही है। हम सत्ता में आएंगे तो किसानों को मुफ्त बिजली देंगे और घरेलू कनेक्शन लेने वालों को 300 यूनिट तक बिजली फ्री मिलेगी।गोरखपुर की घटना की सीबीआई जांच कराने की मांग करते हुए उन्होंने मृतक के परिजन को पांच करोड़ का मुआवजा और परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी देने की मांग की। एक सवाल के जवाब में मनीष सिसोदिया ने कहा कि आम आदमी पार्टी विधान सभा चुनाव में किसी से गठबंधन किए बिना सभी सीटों पर चुनाव लड़ेगी। कहा कि दिल्ली के शिक्षा मॉडल को देश-दुनिया में सराहा जा रहा है।

खबर संक्षेप

बिजली के करेंट से छात्र की दर्दनाक मौत

कोराव। नगर पंचायत कोराव में बिजली के करेंट से झुलस कर क्लास 4 का छात्र आदर्श पुत्र दिलीप कोल की दर्द नाक मौत हो गई। बताया जाता है कि उक्त छात्र एक कोचिंग चलाने वाले के छत पर मौजूद था। और ग्यारह हजार बोल्ट का तार नीचे लटक रहा था। जिसे छात्र को तार टच हो गया। और मौके पर ही मौत हो गई। मृतक प्रिजनों में कोहराम मच गया। पुलिस मौके पर पहुंची और शव कब्जे में लिया और पोस्ट मार्टम के लिए भेज दिया।

वैक्सीनेशन को लेकर भारी उत्साह

करछना। सी एच सी करछना की स्वास्थ्य टीम के द्वारा प्राथमिक विद्यालय पतुलकी बसही में टीकाकरण शिविर लगाया गया । वैक्सीनेशन को लेकर ग्रामीणों में भारी उत्साह देखने को मिला देर शाम आठ बजे तक लोग टीका करण के लिए आते रहे। स्वास्थ्य टीम में शामिल मधुबाला मौर्या, अभिलाशा दीक्षित ,शशि किरन पाण्डेय,विद्योत्तमा सिंह, सरिता विश्वकर्मा ,राकेश तिवारी ,संतोष द्विवेदी की कार्य प्रकृति एवम मधुर व्यवहार लोगो मे चर्चा का विषय रहा।सोनू यादव ,अवनीश यादव ,दीन नाथ पांडेय ,अरविंद सिंह का सहयोग प्रशंशनीय रहा ।ग्राम प्रधान पूरे दिन वैक्सीनेशन कैम्प की मॉनिटरिंग करते हुए टीम को सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करते रहे।

पत्रकार के निधन पर शोकसभा, दी श्रद्धांजलि

घूरपुर। बारा तहसील के शिवराजपुर निवासी पत्रकार सुधीर सिंह की मौत की सूचना मिलते ही पत्रकारों में शोक की लहर दौड़ गई । क्षेत्रीय पत्रकारों ने मीडिया सेंटर घूरपुर में भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के मंडल अध्यक्ष आलोक त्रिपाठी के नेतृत्व में शोकसभा कर दिवंगत पत्रकार की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रख ईश्वर से प्रार्थना की । बतादें की पत्रकार सुधीर सिंह विगत एक पखवाड़े पूर्व सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गए थे ।जिनका इलाज अस्पताल में चल रहा था ,लेकिन गहरी चोट होने के चलते उनकी हालत में सुधार नहीं हुआ और बुधवार की सुबह सुधीर ने अंतिम सांस ली । इस घटना को सुनते ही पत्रकार संगठनों में शोक की लहर दौड़ गई । घूरपुर के मीडिया सेंटर पर एकत्र पत्रकारों जेपी शुक्ल ,आलोक त्रिपाठी, आरके शर्मा, अजय द्विवेदी,मो आरिफ, प्रवीण मिश्र, राजेश निषाद, अतुल यादव, एसपी सिंह आदि ने दिवंगत पत्रकार सुधीर सिंह को श्रद्धाजलि देते हुए उनकी आत्मा की शांति के ईश्वर से प्रार्थना की ।

एसटीएफ ने नैनी से पकड़ी ढ़ाई सौ किलो नशीला पदार्थ

अखंड भारत संदेश

इनोवा कार छोड़कर आरोपी फरार, तलाश में जुटी टीम

नैनी। एसटीएफ टीम ने बीती रात नैनी क्षेत्र से भारी पैमाने पर नशीला पदार्थ को बरामद करने में भारी सफलता प्राप्त की है, लेकिन टीम को चकमा देकर आरोपी नशीला पदार्थ से भरे इनोवा कार को छोड़कर फरार हो गए। जिसे कब्जे में लेकर बरामद सामग्रियों को नैनी पुलिस के हवाले कर दिया गया है।

जानकारी के मुताबिक बुधवार रात को एसटीएफ के आला अफसरों को जरिए मुखबिर से सूचना मिली कि एक चार पहिया वाहन में आंध्र प्रदेश से भारी पैमाने पर नशीला पदार्थ लादकर प्रयागराज पहुंचने वाले हैं। सूत्रों के मुताबिक जरिए मुखबिर की सटीक सूचना मिलते ही एसटीएफ अफसर वेद प्रकाश पांडेय के नेतृत्व में गठित टीम नैनी कोतवाली क्षेत्र के एग्रीकल्चर पुलिस चौकी के तहत खान चौराहे के समीप पहुंची और कुछ देर इंतजार के बाद एक चार पहिया वाहन (इनोवा कार) सामने से आती दिखाई पड़ने पर टीम ने रुकने के लिए इशारा किया तो उक्त कार पर सवार लोगों ने कार की स्पीड बढ़ा दी और आगे की ओर तेज रफ्तार से फरार होने लगे। टीम के जवानों ने उक्त कार का पीछा करते हुए नैनी के शाहजी का पूरा गांव के समीप पहुंचे। जब तक कार सवार लोगों को वह पकड़ पाते, सभी अंधेरे में वाहन को खड़ी कर मौके का फायदा उठाते हुए फरार हो गए। जब टीम ने वाहन को कब्जे में लेकर जांच पड़ताल की तो उसके अंदर बोरे में भरे नशीला पदार्थ (गांजा) लगभग ढाई सौ किलो बरामद किया गया। टीम ने समस्त बरामद सामग्रियों को कब्जे में लेकर कोतवाली पुलिस के सुपुर्द कर दिए। वहीं कार पर सवार नशे के सौदागरों को पकड़ने के लिए टीम जुटी हुई है।

आधा दर्जन जुआरी गिरफ्तार, नकदी बरामद

नैनी। औद्योगिक क्षेत्र के नेवादा समोगर ग्राम सभा के अंतर्गत एक पेट्रोल पंप के पीछे जुआ खेल रहे जुआरियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर उनके कब्जे से हजारों रुपए नकदी बरामद करते हुए गुरुवार को चालान कर दिए। जानकारी के मुताबिक औद्योगिक क्षेत्र इंस्पेक्टर अनुपम शर्मा को जरिए मुखबिर से सूचना मिली कि कुछ लोग नेवादा समोगर ग्राम सभा के अंतर्गत एक पेट्रोल पंप के पीछे सार्वजनिक स्थल पर जुआ खेल रहे हैं। सटीक सूचना मिलते ही इंस्पेक्टर अनुपम शर्मा के निर्देश पर उप निरीक्षक मनोज कुमार, नवीन कुमार सिंह, रवि कटियार, राहुल तोमर, बलिराम कुमार व कांस्टेबल श्याम सुंदर, विकास कुमार, राजेंद्र कुमार, अमित गुप्ता और नंदकिशोर उक्त स्थान पर पहुंचे और घेराबंदी करते हुए जुआरियों को गिरफ्तार कर लिए। इस दौरान कई जुआरी मौके का फायदा उठाते हुए फरार हो गए। हालांकि पुलिस के जवानों ने आधा दर्जन जुआरियों को गिरफ्तार कर औद्योगिक क्षेत्र थाने पर उठा लाए। पुलिस के मुताबिक पकड़े गए जुआरियों में करछना थाना क्षेत्र के हरदुआ गांव निवासी देवेंद्र कुमार शुक्ला, करेहा गांव निवासी इसरार अहमद, सुहेल अहमद मंसूरी, औद्योगिक क्षेत्र के रामपुर गांव निवासी शैलेश पांडेय, हंडिया थाना क्षेत्र के सैदाबाद स्थित वियूर गांव निवासी अंसार अहमद, कानपुर जिले के बर्रा थाना क्षेत्र स्थित गुजैनी गांव निवासी संजय सिंह शामिल हैं। पकड़े गए जुआरियों के कब्जे व जामा तलाशी के दौरान पुलिस ने लगभग 19 हजार 10 रुपए नकदी समेत 52 ताश के पत्ते को बरामद किया। वहीं पुलिस ने पकड़े गए जुआरियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करते हुए जुआ अधिनियम के तहत चालान कर दिए।

जिला प्रशासन ने केंद्रीय कारागार नैनी का किया त्रैमासिक निरीक्षण

जनपद न्यायाधीश व जिलाधिकारी डीआईजी एसएसपी गुरुवार को केन्द्रीय कारागार नैनी का त्रैमासिक निरीक्षण करते

अखंड भारत संदेश

नैनी। जनपद न्यायाधीश अमरजीत त्रिपाठी, जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री एवं डीआईजी/एसएसपी सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी ने गुरूवार को केन्द्रीय कारागार नैनी का त्रैमासिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने बन्दी-कैदियों के बारे? में जानकारी प्राप्त करते हुए बैरक के अंदर जाकर कैदियों से बातचीत करते हुए पूछा कि किसी प्रकार की परेशानी तो नहीं है। उन्होंने बैरक के अंदर साफ-सफाई, खाने के मीनू को भी देखा। जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि 15 दिनों के अंदर ए0सी0एम0 आदि आकर निरंतर निरीक्षण करते रहेंगे। उन्होंने स्टाफ रजिस्टर तथा बीमारी की वजह से कितने बंदी अस्पताल में है, जानकारी प्राप्त की। साथ ही वरिष्ठ जेल अधीक्षक

पीएन पांडेय से भी जानकारी भी प्राप्त की। इतना ही नहीं है जेल के अंदर व बाहर लगे सीसीटीवी कैमरे को भी खंगाला। निरीक्षण के दौरान सीजेएम, एडीएम सिटी मदन पाल, एस0पी0 यमुनापार सौरभ दीक्षित सहित अन्य सभी सम्बंधित अधिकारीगण मौजूद रहे।

मंदिर से उपकरण चोरी, आरोपी गिरफ्तार

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के चक दाऊद नगर स्थित एक मंदिर से चोर मौका पाते ही उपकरण उड़ा दिए। तहरीर मिलने पर पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर मामले की जांच पड़ताल करने में जुटी हुई थी। मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने शातिर चोर को गिरफ्तार कर चोरी के उपकरण को बरामद करते हुए उसका चालान कर दिए। जानकारी के मुताबिक नैनी कोतवाली क्षेत्र के चक दाउद नगर स्थित राधा रमण महिला इंटर कॉलेज गेट के समीप मां शीतला देवी मंदिर स्थापित है। चोर मौका पाते ही मंदिर से उपकरण चोरी कर फरार हो गए। तहरीर मिलने पर कोतवाली में अज्ञात चोर के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस जांच पड़ताल करने में जुटी हुई थी। गुरुवार को नैनी कस्बा पुलिस चौकी में तैनात एसआई अमित कुमार सिंह और कांस्टेबल अजीत कुमार प्रजापति जरिए मुखबिर से सूचना मिली कि उक्त मंदिर में जो चोर चोरी किया है, वह इस समय मललहारा रेलवे फाटक के निकट मौजूद है। सटीक सूचना मिलते ही उपनिरीक्षक अमित कुमार सिंह व कांस्टेबल अजीत कुमार प्रजापति पहुंचे और घेराबंदी करते हुए उसे पकड़कर नैनी कोतवाली उठा लाए। पुलिस के मुताबिक पकड़े गए चोर के कब्जे से मंदिर से उड़ाए गए उपकरण को बरामद कर लिया गया। पकड़ा गया आरोपी काजीपुर निवासी विवेक पांडेय पुत्र श्री कांत पांडेय है और उसके खिलाफ पुलिस ने कानूनी कार्रवाई करते हुए चालान कर दिया है।

शंकरलाल पाण्डेय को चुनाव विभाग का बनाया गया सह संयोजक

लालापुर। भारतीय जनता पार्टी प्रयागराज यमुनापार के 28 विभागों के संयोजक घोषित किये गए। इसी क्रम में लालापुर के शंकरलाल पाण्डेय को चुनाव प्रबंधन विभाग का सह संयोजक बनाया गया। सोमवार को शंकरलाल पाण्डेय को उनके आवास पर लोगों ने बधाई दी। इस दौरान श्री पाण्डेय ने लोगों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मेरे बड़े भाई स्वर्गीय कृष्णा लाल पाण्डेय ने भाजपाई थे जो आज इस दुनिया मे नहीं उन्ही के नाक्सो कदम पर चल रहा हु मेरे भाई और मै बचपन से लेकर आज तक लगातार भारतीय जनता पार्टी के समर्थन में रहा हूं और आजीवन भारतीय जनता पार्टी के दामन को नहीं छोडूंगा। श्री पाण्डेय ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी द्वारा दी गई इस नई जिम्मेदारी का मैं बखूबी निर्वहन करुँगा और सदैव भाजपा के लिए समर्पित रहूंगा, भारतीय जनता पार्टी को केंद्र मे आये अभी मात्र 7 साल हुए हैं और देश हमारा इतना शक्तिशाली हो चुका है कि कोई भी देश हमारे भारतवर्ष पर नजर उठाने से पहले सौ बार सोचता है, क्यूंकि दुश्मन को उसी की भाषा मे मुहतोड़ जवाब देना भाजपा की सरकार में भारत ने भी बखूबी सीख लिया है।

न्यूज झरोखा

सहसों ब्लॉक में कृत्रिम अंग एवं दिव्यांग प्रमाण पत्र के लिए आयोजित हुआ चिन्हांकन शिविर

सहसों। विकासखण्ड सहसों में शासन द्वारा पंडित जवाहरलाल नेहरू इंटर कॉलेज परिसर में आयोजित कृत्रिम अंग एवं यू डी आई डी कार्ड तथा दिव्यांग प्रमाण पत्र के लिए चिन्हांकन शिविर में गुरुवार को क्षेत्र के विभिन्न गांव से 405 दिव्यांग जनों ने अपना पंजीकरण कराया। जिसमें ट्राई साइकिल के लिए 211, यू डी आई डी कार्ड के लिए 128, व दिव्यांग प्रमाण पत्र के लिए 66 लाभार्थियों का चयन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ब्लाक प्रमुख गीता सिंह ने फीता काटकर किया। इस मौके पर उन्होंने अपने संबोधन में कहा सरकार द्वारा दिव्यांग जनों को दी जा रही कृत्रिम अंग निसंदेह उनके रोजगार तथा सफल जीवन के लिए बहुत ही कारगर होगा। इस मौके पर भाजपा नेता राकेश बहादुर सिंह , प्रमुख प्रतिनिधि शिव नारायण सिंह गप्पू , खण्ड विकास अधिकारी दिव्या सिंह, प्रभारी वीडियो निखिल मोहन, सहायक विकास अधिकारी पंचायत के सी पांडे , शिव गोविंद, जेई गिरजा शंकर यादव, हेमंत सिंह, अजय राना, मोहम्मद असलम सहित भारी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता हैं : अनिल विश्वकर्मा

जसरा। नियमित व्यायाम, योग, शुद्ध वायु इत्यादि के माध्यम से ह्रदय बहुत ही मजबूत एवम स्वस्थ रहता हैं। ह्रदय मानव के शरीर का बहुत ही अहम अंग होता हैं यदि किसी भी लापरवाही के कारण ह्रदय प्रभावित होता हैं तो इसका असर सम्पूर्ण शरीर पर होगा जिसके दुष्प्रभाव बहुत ही घातक होंगें इसलिए हम सभी लोगों को उक्त बिन्दुओ को ध्यान मे रखते हुए ह्रदय के साथ शरीर को स्वस्थ एवम सुडौल रखना होगा क्योंकि स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता हैं उक्त बातें कमला स्मारक इंटर कालेज मे आयोजित विश्व ह्रदय दिवस के अवसर पर विद्यालय के प्रबंधक श्री अनिल विश्वकर्मा बतौर मुख्य वक्ता छात्र /छात्राओं के सम्बोधन मे बोल रहें थे। इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती अलका विश्वकर्मा ने भी डेंगू, मलेरिया इत्यादि संक्रामक बीमारियों के प्रभाव एवम रोकथाम हेतु विद्यार्थियों को जागरूक की। इस अवसर पर विद्यालय के छात्र /छात्राओं के साथ शिक्षकगण भी मौजूद रहें।

नागरिक पीजी कालेज जंघई में बीएड विभाग द्वारा स्काउट गाइड प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

जंघई। नागरिक पीजी कालेज जंघई में बीएड विभाग द्वारा स्काउट गाइड प्रशिक्षण शिविर के अंतर्गत महाविद्यालय में कैंप फायर एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।प्राचार्य डॉ प्रमोद कुमार तिवारी द्वारा टेंट निरीक्षण कर समस्त प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया गया।इस अवसर पर डॉ कविता गुप्ता, डॉ नीरज, डॉ अरविंद कुमार मौर्य, डॉ प्रमोद कुमार पांडेय, डॉ ओमप्रकाश मिश्र आदि शिक्षक उपस्थित रहे।संपूर्ण कार्यक्रम स्काउट और गाइड प्रशिक्षकों जाकिर हुसैन एवं सरिता कनौजिया के सरंक्षण में आयोजित हुआ।

सपा के पूर्व जिलाध्यक्ष पंधारी यादव ने किया बाढ़ प्रभावित गाँवो का दौरा

प्रतापपुर। समाजवादी पार्टी के पूर्व जिलाध्यक्ष व लोकसभा फूलपुर के पूर्व प्रत्याशी रहे पंधारी यादव ने वृहस्पतिवार को प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र के सरजूपट्टी, कटेहरी, खखैचा सहित दर्जनो बाढ़ प्रभावित गाँवो का दौरा कर लोगो की समस्याए सुनी और मौके पर ही अधिकारियों से बात कर स्थिति से अवगत कराया।लगातर हुई बरसात और वरुणा नदी के बढ़े जलस्तर की वजह से प्रतापपुर क्षेत्र के दर्जनों गाँव बाढ़ प्रभावित होने से एक तरह जहां लोगो का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है वही किसानों की कई बीघे धान की फसल भी पूरी तरह बर्बाद हो गई है।बाढ़ की समस्या झेल रहे ग्रामीण और किसानों ने बताया शासन-प्रसाशन व किसी जनप्रतिनिधि ने अब तक कोई सुध नही लिया जिसको लेकर लोगो मे भारी आक्रोश है। वृहस्पतिवार को सपा के पूर्व जिलाध्यक्ष के दौरे के बाद लोगो आस जगी है। श्री यादव ने कहा कि अधिकारियों को स्थिति से अवगत करा दिया हूँ। समाजवादी पार्टी द्वारा हरसंभव बाढ़ से प्रभावित ग्रामीणों व किसानों की मदद किया जायेगा।

उदयबीर प्रजापति बने भाजयुमो मंडल अध्यक्ष

प्रतापपुर। भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा गंगापार जिलाध्यक्ष नवीन सिंह पटेल ने वृहस्पतिवार को युवा मोर्चा के मंडल अध्यक्षो की सूची जारी कर दिया।प्रतापपुर मंडल से पिडौना निवासी उदयवीर प्रजापति को प्रतापपुर मंडल अध्यक्ष का दायित्व दिया गया है।उनके इस मनोनयन पर मंडल अध्यक्ष आशुतोष त्रिपाठी, वरिष्ठ भाजपा नेता संजय बनकटा, आईटी सेल संयोजक प्रतापपुर प्रमोद यादव, सूर्या यादव, रुद्र प्रताप सिंह, महावीर मिश्रा, अतुल सिंह, विनय दूबे, लालेश पटेल, शनि पटेल, सूरज जायसवाल, राहुल यादव सहित तमाम लोगो ने नवीन दायित्व के बधाई एवं शुभकामना दिया।

नियमित व्यायाम व खानपान ही हृदय रोग से बचाव : डॉ अमित

सहसों। प्रतिदिन नियमित व्यायाम तथा उचित खानपान से ही मानव जिंदगी में हृदय रोग से बचने का सही उपाय है। आजकल भागदौड़, तनाव से भरी मनुष्यों की जिंदगी तथा उचित खानपान का ना होना भी हृदय रोग का खतरा आज की युवा पीढ़ी में बहुतायत देखा जा रहा है। उक्त बातें हरि ओम चैरिटेबल ट्रस्ट सहसों के द्वारा हरिओम चिकित्सालय सहसों बाईपास पर बुधवार को एक गोष्ठी के दौरान डॉ अमित यादव ने कही। उन्होंने कहा इस खतरे को कम करने के लिए अपने आचार विचार, आहार व्यवहार में बदलाव लाने की जरूरत है। ऐसे में प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन 5 किलोमीटर पैदल टहलने से बहुत ही कम हो जाता है। इसके साथ साथ तली हुई, मसालेदार युक्त भोजन से बचने की बेहद जरूरत है खाने में सदैव ताजे फल, हरी पत्तेदार सब्जियां, सादा भोजन लेना अपनी दिनचर्या में लाने से गुरेज न करें। इसी प्रकार उपस्थित डॉक्टर पीसी गुप्ता ने कहा कि वे रोग से बचाव के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी दिनचर्या को ठीक ढंग से रखनी चाहिए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी नियमित जांच कराते रहना चाहिए। खून में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़नी से रोग का खतरा बहुत ज्यादा होता है। इसलिए इन सब चीजों पर बेहद ध्यान देने की जरूरत होनी चाहिए। गोष्ठी में प्रमुख रूप से उपस्थित नीरज पांडे, राजेश कुमार, बच्चा, चंद्रप्रकाश केसरवानी, प्रधान सहसों विष्णु केसरवानी, इंजीनियर बद्री प्रसाद सिंह, रेनू प्रजापति आदि रहे।

एक ही रात चोरों ने दो दुकानों को बनाया निशाना

करछना। थाना क्षेत्र के कटका बैरियर स्थित दो दुकानों से चोरों में एक साथ निशाना बनाते हुए नगदी समेत हजारों के सामान को पार कर दिया। करछना के बसही गांव निवासी डॉ.पवन पुत्र हीरालाल व सिरसा थाना मेजा निवासी बबलू पुत्र काशी प्रसाद ने कटका में मेडिकल व ज्वेलरी की दुकान खोल रखी है। रोज की तरह बुधवार देरशाम दोनों लोग अपनी-अपनी दुकान बंद कर घर चले गये। इसी बीच रात में चोरों ने मेडिकल की दुकान से 15 हजार रुपए नगद व कीमती दवा भी पार कर दी,वहीं दूसरी तरफ ज्वेलरी की दुकान से हजारों रुपए तक के आभूषण को चोरों ने साथ उठा ले गए। सुबह होने पर घटना की जानकारी होते ही आसपास के लोगों ने दोनों दुकानदारों को इसकी जानकारी दी। दोनों दुकानदार मौके पर पहुंचे और दुकान में देखा तो सामान गायब था। भुक्तभोगी ने डायल 112 व भीरपुर चौकी पर सूचना दी। सूचना पर पहुंचे भीरपुर चौकी इंचार्ज शिवांशु पांडेय ने जांच पड़ताल कर वापस चले गये।

भाजपा कार्यालय पर चुनाव को लेकर हुई योजनात्मक बैठक

अखंड भारत संदेश

बैठक करते जिला अध्यक्ष विभव नाथ भारती सहित अन्य पदाधिकारी

प्रयागराज। बुधवार के दिन भाजपा जिला कार्यालय पर भारतीय जनता पार्टी यमुनापार जिला प्रभारी ओंकार केसरी,जिलाध्यक्ष विभवनाथ भारती ने सुबह 10 बजे से सभी मोर्चे,जिला पदाधिकारियो व विधायको के संग क्रमश अलग-अलग निर्धारित समयो मे अलग अलग मोर्चो के जिला कार्यकारणी पदाधिकारियों, सदस्यों के साथ 2022 विधानसभा तैयारियो को लेकर समीक्षात्मक योजनात्मक बैठको का दौर चला। जिसमें कई महत्त्वपूर्ण फैसले लिए गए। और सभी पदाधिकारियों को दी गई उत्तरदायित्व के बारे में बताते हुए पूरी जिम्मेदारी के साथ निर्वाहन किए जाने को कहा गया। बैठक में अल्पसंख्यक मोर्चा, अनुसूचित मोर्चा, पिछड़ा मोर्चा, महिला मोर्चा, किसान मोर्चा, युवा मोर्चा, और यमुनापार के कई विधायक, जिला पदाधिकारियो की बैठको का क्रमशः देर रात तक बैठको का दौर चला। जिसमे आगामी विधानसभा चुनावों की योजना बनी। बैठक मे विधायक मेजा नीलम करवरिया, विधायक कोरांव राजमणि कोल, पूर्व विधायक बारा विधान सभा संयोजक महेन्द्र बिन्द,राजेश शुक्ला, विक्रमाजीत मौर्य, पुष्पराज सिंह पटेल, विजय शंकर शुक्ला, दिलीप कुमार चतुर्वेदी, सुभाष सिंह पटेल, अरुण सिंह पप्पू, सुधाकर पांडेय, सविता शर्मा, कुशल जैन, राजमणि पासवान, सुरेश शुक्ला, आरके शर्मा आदि के साथ भारी संख्या मे सभी मोर्चे के जिला पदाधिकारी उपस्थित रहे।

गांव के विकास की मुख्य कड़ी प्रधान : डॉ.अजय

जसरा। गांव सभा का प्रमुख प्रधान हुआ करते हैं। प्रधानों को अपने कर्तव्यों की जानकारी देने के लिए ही प्रदेश सरकार एक दिवसीय परिचयात्मक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया है। उक्त बातें कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बारा विधायक डा०अजय कुमार ने विकास खंड जसरा में एक दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान जसरा ब्लॉक सभागार में कही। डा० अजय ने प्रधानों से कहा कि गांवों के प्रधान जी अपना कार्य स्वयं करें। इसके लिए प्रधान प्रतिनिधि की जरूरत नहीं होनी चाहिए। प्रदेश सरकार प्रधानों के अधिकार के प्रति जागरूक करने के लिए नित नये नये कार्यक्रमों को प्रशिक्षण के माध्यम से बताया जा रहा है। कार्यक्रम की शुरूआत अध्यक्षता कर रहे प्रमुख जसरा अजीत सिंह ने दीप प्रज्वलित कर किया। प्रशिक्षण देने के लिए मास्टर ट्रेनर डा०रिचा शेखर,डा०गिरधारी लाल, अनीस भाई द्वारा प्रोजेक्ट के माध्यम से प्रशिक्षण दिया है। प्रधानों को प्रशिक्षण के लिए सामाग्री बांटी दी गई है। ट्रेनर ने पंचायतों की बैठक और प्रधान के कर्तव्यों के बारे में जानकारी दी और पंचायत विकास योजना के पांचों चरण के बारे में बताया। ट्रेनर डा०रिचा शेखर ने केन्द्रीय एवं राज्य वित्त आयोग की जानकारी दी और पंचायतों में ई गवर्नेंस की स्थापना और स्वराज के बारे में बताया। प्रशिक्षण के समापन पर प्रमुख अजीत सिंह ने सभी प्रधानों को प्रमाण पत्र दिया। कार्यक्रम का संचालन एडीओआईएसबी रामपाल व संयोजक एडीओपी श्यामलाल तिवारी रहे। कार्यक्रम में प्रधान संघ के अध्यक्ष दारासिंह पटेल,लल्लू सिंह, आशीष सोनकर, बृजेश सोनकर,बृजेश बिन्द,राममनोहर कुशवाहा, सुरेन्द्र सोनकर, कौशलेंद्र सिंह, विजय बी पटेल,सूरज यादव के साथ ही सचिव राजीव मिश्र,मनोज प्रजापति, यशवंत सिंह,अमित शुक्ल,नितेश कुमार,अतुल शंकर नीलकमल,बीएमएम नमिता सिंह, वेद प्रकाश द्विवेदी आदि सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

ब्यापारियों कारोबारी मनीष गुप्ता को दी श्रद्धांजलि

जारी। गुरुवार को शाम 5 बजे जारी नहर चोराहे पर ब्यापारियों ने एक बैठक करके कानपुर कारोबारी मनीष गुप्ता को गोरखपुर पुलिस प्रशासन द्वारा मार पीटकर हत्या किए जाने पर सलिप्त पुलिस अधिकारियो के खिलाफ कठोर सजा की मांग की है एवं पत्नी मीनाक्षी गुप्ता को जीवन यापन करने के लिए सरकारी नौकरी दो करोड़ रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जाय जारी बाजार के दर्जनों ब्यापारियों ने मृतक कारोबारी मनीष गुप्ता को दो मिनट मौन रख कर श्रद्धांजलि अर्पित किया मुख्य रूप से रोहन केशरवानी, बबलू केशरवानी, सतीश गुप्ता,विनोद केशरवानी, अजय केशरवानी,सूरज केशरवानी, विकास गुप्ता, नीरज श्रीवास्तव, राजू केशरवानी, समेत दर्जनों लोग मौजूद रहे।

मेजा थाना परिसर में पीस कमेटी की बैठक संपन्न

अखंड भारत संदेश

त्योहारों के मद्देनजर मेजा थाना परिसर में पीस कमेटी की बैठक करते हिन्दु-मुस्लिम धर्मों के लोग व एसडीएम सीओ

मेजा रोड। आगामी त्यौहार दुर्गा पूजा दशहरा को लेकर मेजा थाना परिसर में गुरुवार को पीस कमेटी की बैठक की गयी। बैठक में क्षेत्र के व्यापारी, ग्राम प्रधान, गणमान्य नागरिक समेत हिन्दू और मुस्लिम धर्मों के लोग मौजूद रहे। बैठक की अध्यक्षता एसडीएम मेजा व क्षेत्राधिकारी ने किया। बैठक में एसडीएम व क्षेत्राधिकारी ने उपस्थित लोगों से उनकी समस्याओं के बारे में जानकारी ली। एसडीएम रेनू सिंह ने बैठक में मौजूद लोगों को दुर्गा पूजा दशहरा जैसे बड़े पर्व को शांति और सौहार्द पूर्ण वातावरण में मनाने की अपील की। एसडीएम ने कहा कि गांव और कस्बे में कोई भी संदिग्ध दिखे या पर्व में उपद्रव के दौरान बाधा डाले तो तुरंत पुलिस को सूचना दें,जिससे पुलिस सूचना मिलते ही तुरंत कार्रवाई कर सके। क्षेत्राधिकारी भीम कुमार गौतम ने कहा कि किसी भी तरह के अफवाहों पर ध्यान न दें। किसी भी समस्या पर तत्काल अवगत कराये। थाना प्रभारी अरुण कुमार चतुर्वेदी ने कहा कि आगामी त्यौहार को मिल जुलकर हर्षोल्लास और आपसी भाई चारें के साथ मनाया जाना चाहिए। दुर्गा पूजा के पर्व को लेकर ग्रामिणों को साफ हिदायते दी गई है कि गांव में और क्षेत्र में डीजे, दारू, दबंगई, हुड़दंग की सम्भावना हो तो उसकी सूचना सम्बन्धित चौकी अथवा मुझे अवगत कराएं। बैठक में मेजारोड व्यापार मंडल संरक्षक ई० नित्यानंद उपाध्याय,अध्यक्ष पप्पू उपाध्याय,मंत्री ओपी पाण्डेय, गुरु शुक्ला, राजीवमणि नाथ तिवारी समाजसेवी सिद्धांत तिवारी ,मेजारोड चौकी प्रभारी पंकज त्रिपाठी, सिरसा चौकी प्रभारी हरिश्चंद्र शर्मा, कोहडार चौकी प्रभारी जितेंद्र कुमार राजपूत, उपनिरीक्षकअतुल मिश्रा, उपनिरीक्षक संजय कुमार, हेड कांस्टेबल अरविंद चौबे, हेड कांस्टेबल रामधनी यादव, सौरभ राय, अपराध निरोधक के वालंटियर, ग्राम प्रधान सहित क्षेत्र के संभ्रांत लोग मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षाएं 18 अक्तूबर से

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय (इविवि) एवं संघटक महाविद्यालयों में प्रवेश के लिए परीक्षाएं 18 अक्तूबर से शुरू होने जा रही हैं। विभिन्न पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षाएं 27 अक्तूबर तक अलग-अलग तिथियों में आयोति की जाएंगी। विश्वविद्यालय के प्रवेश प्रकोष्ठ की ओर से बृहस्पतिवार को प्रवेश परीक्षा का कार्यक्रम जारी कर दिया गया। प्रवेश परीक्षाएं दो पालियों में आयोजित की जाएंगी।हालांकि इविवि प्रशासन ने अभी पाठ्यक्रमवार परीक्षा का विस्तृत कार्यक्रम जारी नहीं किया है। इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज (आईपीएस) के तहत संचालित 11 पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षाएं चार अलग-अलग तिथियों में आयोजित की जाएंगी। 18 अक्तूबर को पीजीएटी-2 और आईपीएस के कुछ पाठ्यक्रमों की परीक्षाएं प्रवेश होंगी। ये परीक्षाएं पहली और दूसरी पाली में केवल ऑनलाइन मोड में होंगी। 20 अक्तूबर को पहली एवं दूसरी शिफ्ट में पीएजीएटी-2 के तहत संचालित पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षाएं ऑनलाइन मोड में होंगी। वहीं, स्नातक (बीए, बीएएसी, बीकॉम, बीएफए, बीपीए), बीएएलएलबी, एमकॉम एवं एलएलएम की प्रवेश परीक्षाएं 20 एवं 21 अक्तूबर को पहली और दूसरी शिफ्ट में होंगी। 22 अक्तूबर को पहली एवं दूसरी शिफ्ट और 23 अक्तूबर को पहली शिफ्ट में आईपीएस के तहत संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षाएं ऑनलाइन मोड में होंगी। 27 अक्तूबर को एलएलबी और पीजीएटी-1 के विभिन्न पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षाएं ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों मोड में होंगी।

क्रियायोग आश्रम : मनाया गया लाहिड़ी महाशय का जन्मदिवस

अखंड भारत संदेश

लाहिड़ी महाशय जी के जन्म दिवस पर द्वीप प्रज्वलित करते क्रियायोग गुरु स्वामी श्री योगी सत्यम व क्रियायोग ध्यान कक्ष में उपस्थित साधक

झूँसी प्रयागराज। क्रियायोग आश्रम एवम् अनुसन्धान संस्थान में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी योगावतार लाहिड़ी महाशय जी का जन्मदिवस मनाया गया , तथा साधकों को क्रियायोग गुरु स्वामी श्री योगी सत्यम जी ने गुरुवार को ध्यान कक्ष में प्रतिदिन की तरह ध्यान के पश्चात लाहिड़ी महाशय जी के जीवन परिचय को बताएं ' स्वामी श्री योगी सत्यम जी ने कहा कि जिस प्रकार जॉन और ईसा के बीच जो कालातीत गुरु - शिष्य संबंध था, वहीं महावतार बाबा जी और लाहिड़ी महाशय के बीच भी था। मृत्युंजय गुरु अत्यंत वात्सल्य के साथ अपने शिष्य के दो जन्मों के बीच के अथाह सागर को पार कर बालक लाहिड़ी और फिर युवा लाहिड़ी द्वारा उठाए गए कदमों का मार्गदर्शन करते रहे। शिष्य के जीवन के तैतीस वें वर्ष में पदार्पण करने से पहले बाबा जी में प्रकट रूप से पुनः उस संबंध को स्थापित करना उपयुक्त नहीं समझा, जो कभी टूटा ही नहीं था। रानीखेत के पास अल्प समय के मिलन के बाद निः स्वार्थी गुरु ने अपने प्रिय शिष्य को अपने पास नहीं रखा, बल्कि लाहिड़ी महाशय जी को जगत में अपनी जीवन कार्य पूरा करने के लिए छोड़ दिया। ₹ मेरे पुत्र! जब भी तुम्हें मेरी आवश्यकता होगी, मैं आ जाऊँगा।₹ केवल अलौकिक अनन्त दिव्य प्रेम ही इस प्रकार के वचन में निहित अनंत तथ्यों की पूर्ति कर सकता है ' दिन प्रतिदिन महान गुरु एक दो साधकों को क्रियायोग की दीक्षा देते थे । अपने इन आध्यात्मिक कर्तव्य एवं व्यवसायिक तथा पारिवारिक जीवन के उत्तरदायित्व के अलावा वे शिक्षा के क्षेत्र में भी हिस्सा लेते थे। उन्होंने कई घरों में छोटी-छोटी पाठशालाएँ शुरू करवा दी थीं और काशी के बंगाली टोला मोहल्ले में एक बड़े हाई स्कूल के विकास में सक्रिय योगदान दिया था। साप्ताहिक सभाओं में, जो बाद मे ₹गीता सभा₹ के नाम से प्रतिष्ठित हुई महान गुरु अनेक जिज्ञासाओं को शास्त्रों का अर्थ समझाते थे। इन बहुमुखी गतिविधियों द्वारा लाहिड़ी महाशय जी कुछ सामान्य प्रतिवाद का उत्तर देने की चेष्टा कर रहे थे। व्यावसायिक और सामाजिक कर्त्तव्यो को निभाते - निभाते ध्यान-धारणा का समय ही कहाँ बचता है। इस महान गृहस्थ - योगी गुरु का पूर्ण संतुलित जीवन हजारों नर - नारियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना। केवल साधारण - सा वेतन पाते हुए भी , किफायती खर्च करते हुए यह आडंबर हीन गुरु जिनके पास कोई भी पहुंच सकता था, अत्यंत स्वाभाविक तरीके से सुख पूर्वक संयमित सांसारिक जीवन व्यतीत कर रहे थे। साक्षात परमात्मा के आसन पर विराजमान होते हुए भी लाहिड़ी महाशय बिना किसी भेदभाव के सभी लोगों का आदर करते थे। जब उनके भक्त उन्हें प्रणाम करते तो वह भी उत्तर में उन्हें नमस्कार करते , गुरु के पाँव छूने के प्राचीन पर वाक्य पौर्वात्य प्रथा होते हुए भी स्वयं ही शिशु सुलभ विनम्रता के साथ दूसरों के पाँव छू लेते थे पर दूसरों को कभी अपने पाँव नहीं छूने देते थे।

एमएनएनआईटी : चार छात्रों का हुआ कैंपस सेलेक्शन, 58 लाख के पैकेज पर मिली नौकरी

प्रयागराज। मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एमएनएनआईटी) में चार छात्रों का करीब 58 लाख के पैकेज पर कैंपस सेलेक्शन हुआ है। यह सभी छात्र बीटेक के हैं। एमएनएनआईटी कैंपस में आयोजित कैंपस सेलेक्शन में मल्टीनेशनल कंपनियों ने इन छात्रों का चयन किया। इसमें जो छात्र बीटेक कंप्यूटर साइंस और दो छात्र बीटेक इलेक्ट्रॉनिक्स के हैं। एमएनएनआईटी के डायरेक्टर प्रो. राजीव त्रिपाठी ने बताया कि 2020-2021 सत्र में 87 फीसद छात्रों का कैंपस सेलेक्शन हुआ था। इस सत्र में यह गति अभी धमी है। 2019-2020 शैक्षिक सत्र में 38 छात्रों को 30 लाख सालाना का पैकेज ऑफर किया गया था। सत्र 2018-2019 में 10 ऐसे छात्र थे जिन्हें 30 लाख से अधिक का पैकेज दिया गया था।प्रो. त्रिपाठी के अनुसार संस्थान में ऑनलाइन कैंपस प्लेसमेंट की प्रक्रिया 6 अगस्त 2021 से शुरू की गई थी। प्लेसमेंट में अभी तक कुल 900 छात्र-छात्राओं ने पंजीकरण कराया है। पंजीकरण कराने वाले लगभग 35% छात्रों को देश के नामी-गिरामी कंपनियों ने नौकरी का ऑफर दिया है। कोरोना के कारण कंपनियां पहले छात्र-छात्राओं का ऑनलाइन टेस्ट ले रहे हैं, इसके बाद इंटरव्यू ले रही हैं। फिर सिलेक्शन का प्रोसेस शुरू हो रहा। इससे पूर्व ऐसा नहीं था। कंपनियां संस्थान में सीधे आकर छात्रों का चयन करती थीं। एमएनएनआईटी में गूगल माइक्रोसॉफ्ट जैसी नामी गिरामी कंपनियों छात्रों को नौकरियां दी हैं पढ़ाई के दौरान ही यह कंपनियां छात्रों को नौकरियां ऑफर करती हैं।

गोवंश आश्रय स्थल की व्यवस्थाओं में कमी पाये जाने पर मुख्य पशुचिकित्साधिकारी होंगे जिम्मेदार : मण्डलायुक्त

अखंड भारत संदेश

मण्डलायुक्त संजय गोयल की अध्यक्षता में गुरूवार को मण्डल स्तरीय अनुश्रवण एवं मूल्याकंन समिति की समीक्षा बैठक में शामिल अधिकारी

प्रयागराज। मण्डलायुक्त संजय गोयल की अध्यक्षता में गुरूवार को अस्थाई/स्थायी गोवंश आश्रय स्थलों की व्यवस्थाओं एवं उनके समुचित भरण पोषण व उचित प्रबन्धन के सम्बंध में मण्डल स्तरीय अनुश्रवण एवं मूल्याकंन समिति की समीक्षा बैठक गांधी सभागार में आयोजित की गयी। बैठक में मण्डलायुक्त ने सभी गोवंश आश्रय स्थलों पर भूसा, चारा, ईयर टैगिंग, टीकाकरण सहित अन्य आवश्यक आवश्यकताओं की मुकम्मल व्यवस्था बनाये रखने के निर्देश दिए है। उन्होंने सभी मुख्य पशुचिकित्साधिकारी व पशु चिकित्साधिकारियों को नियमित रूप से गोवंश आश्रय स्थलों का भ्रमण करते हुए सभी आवश्यक व्यवस्थाओं को चुस्त-दूरूस्त बनाये रखने के निर्देश दिये है। उन्होंने हिदायत देते हुए कहा है कि गोवंश आश्रय स्थल की व्यवस्थाओं में किसी भी प्रकार की कमी पाये जाने पर मुख्य पशुचिकित्साधिकारी के साथ अन्य सम्बंधित की भी जिम्मेदारी तय की जायेगी।

बैठक में मण्डलायुक्त ने शंकरगढ़ में बनाये गये कान्हा गौशाला की व्यवस्थाओं की समीक्षा करते हुए कहा है कि वहां पर व्यवस्था में किसी भी प्रकार की कमी नहीं होनी चाहिए। यदि किसी भी प्रकार की कमी पायी गयी तो मुख्य पशुचिकित्साधिकारी की जिम्मेदारी तय की जायेगी। उन्होंने निराश्रित गोवंशों का नियमित रूप से स्वास्थ्य परीक्षण कराते रहने के निर्देश दिये है। मण्डलायुक्त ने अपर आयुक्त को भ्रमण कर वहां की व्यवस्थाओं की जानकारी प्राप्त करते हुए रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए कहा है। जनपद कौशाम्बी के सिराथू में बनने वाले कान्हा गौशाला के बारे में जानकारी प्राप्त करने पर मुख्य पशुचिकित्साधिकारी कौशाम्बी के द्वारा बताया गया कि वहां के कान्हा गौशाला के लिए दोबारा भूमि का चयन किया गया है, परंतु वहां पर रास्ते में जल-जमाव होने के कारण अभी कार्य शुरू नहीं हो पाया है, शीघ्र ही वहां पर कार्य शुरू कर लिया जायेगा। जनपद प्रतापगढ़ में बन रहे तीन गोवंश आश्रय स्थलों के प्रगति के बारे में मुख्य पशुचिकित्साधिकारी के द्वारा बताया गया कि निर्माण कार्य प्रगति पर है, उपलब्ध धन के सापेक्ष कार्य करा लिया गया है, दूसरी किश्त की मांग की गयी है, जैसे ही धन की उपलब्धता होगी, कार्य को तेजी से पूर्ण करा लिया जायेगा। मण्डलायुक्त ने मण्डल के सभी जनपदों के मुख्य पशुचिकित्साधिकारियों तथा सम्बंधित कार्यदायी संस्थाओं को निराश्रित गोवंशों आश्रय स्थलों के निर्माण कार्य को शीघ्रता से पूर्ण कराये जाने का निर्देश दिया है। मण्डलायुक्त ने गोवंश आश्रय स्थलों में रह रहे निराश्रित गोवंशों की ईयर टैगिंग और टीकाकरण का कार्य प्राथमिकता पर कराये जाने का निर्देश दिया है। ईयर टैगिंग की समीक्षा में प्रयागराज की प्रगति कम पाये जाने पर मण्डलायुक्त ने मुख्य पशुचिकित्साधिकारी को ईयर टैगिंग का कार्य तेजी से कराये जाने का निर्देश दिया है। प्रभारी अपर निदेशक श्री उदय नाथ सिंह ने बैठक में बताया कि सभी जनपदों में निराश्रित गोवंश आश्रय स्थलों के लिए भूसे एवं चारे की पर्याप्त व्यवस्था है। कहीं पर भी भूसे एवं चारें की समस्या नहीं है। इस अवसर पर अपर आयुक्तगण, उप निदेशक पंचायतीराज व अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

पांच चोर गिरफ्तार, चोरी के उपकरण बरामद

नैनी। औद्योगिक क्षेत्र पुलिस ने दो बालिग व तीन नाबालिग शातिर चोरों को गिरफ्तार कर गुरुवार को चालान कर दिए। चोरों के कब्जे से चोरी किए गए भारी मात्रा में उपकरण बरामद किया गया है।औद्योगिक क्षेत्र पुलिस चोरों के खिलाफ एक बार फिर ताबड़तोड़ कार्रवाई करते हुए पांच चोरों को गिरफ्तार करने में भारी सफलता प्राप्त की है। इसी कड़ी में गुरुवार को उप निरीक्षक नवीन कुमार सिंह, मनोज कुमार, बलिराम कुमार व कांस्टेबल अमित गुप्ता, श्याम सुंदर और राजेंद्र कुमार गस्त करते हुए रज्जू भैय्या विश्वविद्यालय के समीप पूरा पांडेय जाने वाले मार्ग पर पहुंचे। पांच लोग संदिग्ध अवस्था में दिखाई पड़ने पर जब पुलिस उनके पास पहुंची तो सभी फरार होने लगे। हालांकि पुलिस ने उन्हें दौड़ाकर पकड़ लिए और औद्योगिक क्षेत्र थाने लेकर चले आए। पुलिस के मुताबिक पकड़े गए चोरों में स स?ड़वा कला गांव निवासी शाहरुख पुत्र इरफान व इशाक अहमद पुत्र सईद अहमद शामिल हैं। जबकि इसी गांव के रहने वाले तीन अन्य चोर नाबालिग हैं। इन सभी पांचों के कब्जे से पुलिस ने चोरी किए गए 17 पीस ब्रेक पैड, एक ड्रिल मशीन, आठ बड़ा पिस्टन, 16 पीस छोटा पिस्टन, दो फ्यूल इंजेक्शन पंप लगभग 10 मीटर लंबा और केबल सहित अन्य उपकरण बरामद की है। इन पांचों शातिरों में शाहरुख पुत्र इरफान बीते लगभग दो वर्ष पूर्व नैनी कोतवाली क्षेत्र के मेवा लाल की बगिया स्थित एक बैटरी इन्वर्टर की दुकान से हजारों रुपए की बैटरी चोरी कर बेच दिया था। उस समय रिपोर्ट दर्ज न होने की वजह से उसके खिलाफ कोई भी कानूनी कार्रवाई नहीं हो पाया था। हालांकि पुलिस ने सभी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करते हुए गुरुवार को चालान कर दिए।

धोखाधड़ी : विद्युत विभाग को क्षति पहुंचा रहे चोरों को प्रवर्तन दल ने पकड़ा

विद्युत विभाग को क्षति पहुंचा रहे चोरों से बरामद मीटर व कार्रवाई करने वाले प्रवर्तन दल के सदस्य

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। बिजली विभाग की तरफ चलाए जा रहे अभियान के तहत एक बड़ी कार्रवाई की गई यह कार्रवाई पुलिस उपाधीक्षक सतर्कता प्रयागराज जोन नीरज सिंह के नेतृत्व में तथा प्रभारी प्रवर्तन दल द्वितीय प्रयागराज मनोज कुमार शुक्ला एवं उप निरीक्षक महेंद्र कुमार सिंह प्रभारी प्रवर्तन दल प्रथम प्रयागराज सहायक अभियंता भोला नाथ मिश्रा अवर अभियंता अमरेश कुमार गौड़ एवं अवर अभियंता आनंद पांडे मय पुलिस बल के साथ कार्रवाई की गई आपको बताते चलें कि विद्युत विभाग से चोरी किए गए मीटरों को बदल कर तथा डिस्प्ले उड़ाकर मीटर रीडिंग खत्म कर करोड़ों रुपए का विद्युत राजस्व की क्षति पहुंचाकर धोखाधड़ी के संबंध अभियुक्त राहुल गुप्ता उर्फ विपिन पुत्र संतोष कुमार गुप्ता निवासी 627 मुट्ठीगंज थाना जनपद प्रयागराज को गिरफ्तार किया गया है उसके कब्जे से 343 विद्युत मीटर व हाई फ्रिकवेंसी मशीन व अन्य उपकरण बरामद किए गए हैं प्रवर्तन दल अधिकारी का कहना है कि हाई फ्रिकवेंसी का इस्तेमाल मीटर डिस्प्ले को उड़ाने में किया जाता है इस पूरे प्रकरण की गहन जांच की जा रही है किसी बड़े गिरोह के शामिल होने की संभावना है ' शातिर अभियुक्त के माध्यम से मीटर बदल कर गलत तरीके से विद्युत का उपयोग करने वालों के खिलाफ इसी तरह प्रवर्तन दल के तरफ से किया कार्यवाही होती रहेगी ।

कामरेड आलोक वर्मा वर्कर्स यूनियन के चुने गये केन्द्रीय अध्यक्ष

तदोपरान्त यादव जी के निधन से रिक्त केन्द्रीय अध्यक्ष के किये चुनाव कराने का निर्णय लिया गया। वर्कर्स यूनियन के महामन्त्री कामरेड मनोज पाण्डेय की उपस्थिति में इण्डियन रेलवे इम्प्लाइज फेडरेशन के संयुक्त महामन्त्री व वर्कर्स यूनियन के केन्द्रीय कोषाध्यक्ष कामरेड संजय तिवारी व इण्डियन रेलवे इम्प्लाइज फेडरेशन के उपाध्यक्ष व एक्टू के राष्ट्रीय सचिव कामरेड कमल उसरी की देख- रेख में सम्पन्न चुनाव में झांसी में चीफ टी.एल.सी. के पद पर कार्यरत, कम्छप्ड के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष कामरेड आलोक वर्मा को सर्व सम्मति नार्थ सेन्ट्रल रेलवे वर्कर्स यूनियन का केन्द्रीय अध्यक्ष चुना गया । नव निर्वाचित अध्यक्ष को बधाई देते हुये वर्कर्स यूनियन के महामन्त्री कामरेड मनोज पाण्डेय ने बताया कि कामरेड आलोक वर्मा आठ वर्ष तक इण्डियन रेलवे लोको रनिंगमेंन आगेर्नाइजेशन के अध्यक्ष रहे है साथ ही साथ रेल मैनुअल की जबरदस्त जानकारी है । कर्मचारी नेता मनोज ने कहा कि आलोक वर्मा के साथ होने से रेल बचाओ जनान्दोलन को मजबूती मिलेगी । केन्द्रीय अध्यक्ष चुने जाने पर आलोक वर्मा को बैठक में मौजूद गिल्बर्ट रॉबर्ट, बृज किशोर उपाध्याय, कमल उसरी, संजय तिवारी, अरविन्द राय, दिलीप यादव, सैय्यद इरफात अली, अनूप सक्सेना, डी. के. राज, ए. के. चिश्ती, आर. के. साहू, मनोहर सिंह, राहुल पचौरी, अजय मधेसिया, अम्बरीष त्रिपाठी, श्रीमती सुशील देवी, नरेश कुमार मिश्र, हरिबंश पाण्डेय, शुभम पचौरी, आदि ने बधाई दिया।

प्रयागराज। इण्डियन रेलवे लोको रनिंगमेंन आगेर्नाइजेशन(कम्छप्ड) के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष कामरेड आलोक वर्मा को सर्व सम्मति से नार्थ सेन्ट्रल रेलवे वर्कर्स यूनियन का केन्द्रीय अध्यक्ष चुना गया । उक्त जानकारी देते हुए वर्कर्स यूनियन के सहायक महामंत्री व मीडिया प्रभारी सैय्यद इरफात अली ने बताया कि 29 सितम्बर को झाँसी में केन्द्रीय उपाध्यक्ष कामरेड बृज किशोर उपाध्याय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई बैठक में विगत दिनों वर्कर्स यूनियन के केन्द्रीय अध्यक्ष काम. एस. पी. एस. यादव के आकस्मिक निधन पर दुःख प्रकट करते हुए श्रधांजलि अर्पित किया गया

नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय के कुलपति ने किया विधि संकाय व संगणक विभाग का निरीक्षण, दिया दिशा निर्देश

कुलपति का विधि विभाग पहुंचने पर विभागाध्यक्ष डा. स्वप्निल त्रिपाठी स्वागत करते

प्रयागराज। गुरुवार को कुलपति, नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय प्रो. संजय कुमार श्रीवास्तव ने विधि संकाय तथा संगणक अनुप्रयोग विभाग, हनुमानगंज परिसर का निरीक्षण किया। अधिष्ठाता एवं विभागाध्यक्ष, विधि संकाय डॉ० स्वप्निल त्रिपाठी ने पुष्पगुच्छ दे कर कुलपति का स्वागत किया। इस अवसर पर कुलपति से अधिष्ठाता महोदय ने संकाय सदस्यों का परिचय कराया तथा कुलपति महोदय द्वारा विभाग में प्रवेश तथा शिक्षण कार्य में सुधार हेतु सुझाव तथा दिशा निर्देश दिए। कुलपति महोदय द्वारा हनुमानगंज परिसर का भ्रमण भी किया तथा छात्र, छात्राओं से उनकी समस्या को सुना। निरीक्षण के दौरान उप कुलसचिव वित्त श्री अनुपम सिंहा जी तथा विधि संकाय सदस्य डॉ दिलीप कुमार ,डॉ० सियाराम शुक्ल, डॉ राजीव नयन सिंह, श्रीमती श्वेता गुप्ता, श्री बंसल वचन प्रसाद ,श्री अमित कुमार, श्रीमती श्वेता गुप्ता, श्री ललित त्रिपाठी, श्री अनुराग त्रिपाठी, श्री उज्जवल दास, श्री अनुरागवर्धन सिंह उपस्थिति रहें।

भू -माफिया महिला को दे रहे जान से मारने की धमकी

अखंड भारत संदेश

कोरांव तहसील के ग्राम महुली की मालती देवी को मृतक दिखा कर जमीन भू माफिया द्वारा अपने नाम करा लेने का मामला, डीएम डीआईजी के निर्देश पर भी नहीं हुई कार्रवाई, तहसील अधिकारी राजस्व कर्मियों और भू माफिया को बचाने में जुटे

मालती पाल पत्नी सुखलाल महुली कोराव

कोरांव। तहसील कोरांव के ग्राम महुली निवासिनी मालती पाल पत्नी सुखलाल की ग्राम देवघाट में स्थित भूखंड को भू माफिया द्वारा जमीन लेखपाल को पटा कर अपने नाम करा लेने के मामले में अभी तक दोषियों के विरुद्ध प्रथिमिकी नहीं दर्ज की गई,उल्टा भूमाफिया द्वारा शिकायत वापिस लेने के लिए जान से मारने की धमकी दी जा रही है।

बता दें कि मालती नामक लघु काश्तकार को जिंदा से मृतक दिखा कर ग्राम अल्हवा कोरांव के एक भू माफिया कास्तकार सुखलाल सिंह पटेल ने पिछले वर्ष चोरी छिपे में अपने नाम लेखपाल को पटा कर भू अभिलेख में दर्ज करा लिया था। और उक्त जमीन को भू माफिया चार लाख में बेचने जा रहा था कि मृतक बनाई गई मालती को जान का हो गई। और जब इंतेखाब निकलवाया तो पता चला की में मर चुकी हूं। जिसकी शिकायत तहसील अधिकारियों को दे गई। हिला हवाली देख महिला जिला अधिकारी प्रयागराज संजय कुमार खत्री के सामने पेश हो गई। और सारी दास्तान सुनाई। उन्होंने सीधे उप जिलाधिकारी को कार्यवाही का आदेश दिया। तहसीलदार के अनुसार उक्त महिला की जमीन भू माफिया के नाम से खारिज कर उसके नाम वापिस ट्रांसफर करा दी। किन्तु भू माफियाओं के खिलाफ केस नहीं दर्ज की गई। उल्टा महिला को भू माफिया द्वारा जान से मारने की धमकी दी जा रही। महिला मालती देवी ने जिला अधिकारी और मंडलायुक्त तथा डीआईजी प्रयागराज से तत्काल उक्त अभियुक्तों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कर कानूनी कार्यवाही किए जाने की मांग की है। अन्यथा सक्षम न्यायालय का दर्जा खटखटाने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

सिविल लाइंस में सीएनजी लीकेज से मचा हड़कंप

अखंड भारत संदेश

पुलिस ने आवागमन रोका

प्रयागराज। हनुमान मंदिर चौराहे से फाफामऊ जाने वाली इंडियन ऑयल अडानी गैस ग्रुप लिमिटेड की मेन पाइप लाइन में बृहस्पतिवार की सुबह लीकेज के बाद लोगों के होश उड़ गए। इससे कई सीएनजी पंपों की आपूर्ति ठप पड़ गई। हालांकि लीकेज के बावजूद इस रूट पर पीएनजी की आपूर्ति प्रभावित नहीं होने दी गई।

घरेलू और कामर्शियल कनेक्शनों पर पीएनजी की आपूर्ति पर असर नहीं पड़ा, इससे लोगों के चूल्हे नहीं बंद हुए। भारी वाहनों के दबाव से पाइप लाइन टूटने की बात कही जा रही है। इलाके गैस लीकेज की वजह से हजारों घरों में लोगों की सांसें अंटकी रहीं। देर रात तक पाइप लाइन की मरम्मत का काम जारी रहा और पंपों को सीएनजी आपूर्ति शुरू नहीं की जा सकी थी। स्टैनली रोड पर इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा के घर के सामने मेन गैस पाइप लाइन में सुबह 6:30 बजे रिसाव शुरू हुआ। जिस जगह सीएनजी लीक हुई, वहां आसपास के इलाकों में तीन प्राइवेट अस्पताल और सघन रिहाइसी बस्ती होने से अफरा तफरी मच गई। क्षतिग्रस्त पाइप लाइन के आसपास बैरिकेडिंग कर दी गई और उधर से लोगों के आने-जाने पर रोक लगा दी गई। गैस लीकेज की वजह से इस रूट पर बहुमंजिला भवनों में भी लोग किसी हादसे की आशंका को लेकर परेशान रहे। गैस रिसाव की जानकारी मिलने के बाद कंपनी के जीएम अभय कुमार गिरि टेक्निकल टीम के साथ मौके पर पहुंच गए। कुछ देर में ही डीएम संजय खत्री भी मौके पर पहुंचे और रिसाव के बारे में जानकारी ली। किसी हादसे की आशंका को देखते हुए दमकल की गाड़ियां बुला ली गईं और फाफामऊ से लेकर हनुमान मंदिर तिराहे तक भीड़ वाली जगहों पर फोर्स तैनात कर दी गई, ताकि जरूरत पड़ने पर किसी भी तरह की स्थिति से निबटा जा सके। सीएनजी लीकेज से हड़कंप मच गया। हालांकि लाइन क्षतिग्रस्त होने और मरम्मत का काम शुरू होने की वजह से तीन सीएनजी पंपिंग स्टेशन बंद हो गए। इसमें सिविल लाइन स्थित मीरा पंपिंग स्टेशन, गंगा-गोमती और शगुन पंप शामिल हैं। इन पंपों से रात 10 बजे तक आपूर्ति बहाल नहीं हो सकी थी। इंडियन ऑयल अडानी गैस ग्रुप के जीएम ने बताया कि मिश्रा भवन क्रॉसिंग के पास जहां गैस रिसाव हुआ, वहां समय रहते अभियंताओं की टीम पहुंच गई और किसी भी तरह का हादसा होने से रोक लिया गया। भारी वाहनों के दबाव की वजह से चैंबर में लगा वाल्ब टूट गया और गैस रिसाव होने लगा। जानकारी मिलने के बाद तत्परता से सुरक्षात्मक इंतजाम करने के साथ ही पाइप लाइन के क्षतिग्रस्त हिस्से को तकनीकी टीम ने बंद करने में सफलता हासिल कर ली। किसी भी तरह का हादसा नहीं होने पाया। पाइप लाइन दुरुस्त होते ही सीएनजी स्टेशनों को आपूर्ति देर रात तक शुरू कर दी जाएगी। अभय कुमार गिरि, महाप्रबंधक, इंडियन ऑयल अडानी गैस ग्रुप।

पुलिस मुठभेड़ में इनामिया अभियुक्त सहित 17 शातिर गिरफ्तार, 20 गोवंश बरामद

पुलिस महानिरीक्षक प्रयागराज ने पुलिस टीम को 50 हजार से किया पुरस्कृत

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना आसपुर देवसरा पुलिस द्वारा मुखबिर खास की सूचना पर थाना क्षेत्र आसपुर देवसरा के खटखटहवा पुल के पास पट्टी की तरफ से लगभग 10 चारपहिया वाहन व मोटर साइकिलों से आ रहे गोतस्करों/गोकशी करने वाले गिरोह को रोकने का प्रयास किया गया, इस पर गोतस्करों/गोकशी करने वाले गिरोह द्वारा पुलिस टीम पर जान से मारने की नियत से फायर किया गया जिसमें पुलिस टीम द्वारा घेराबन्दी करते हुये तीन चार पहिया वाहन (02 पिकअप व 01 मैजिक लोडर) व एक मोटर साइकिल को मौके से पकड़ लिया गया। इन गाड़ियों से एक 15000 रूपये ईनामिया वांछित अभियुक्त सहित कुल 17 अन्तर्राज्यीय गोतस्कर/गोकश गिरफ्तार किये

गये, जबकि 07 चार पहिया वाहन (05 पिकअप, 01 बोलेरो व 01 स्कॉपिन्यो) अन्धेरे का लाभ उठाकर भाग निकले।

पत्रकारवार्ता में पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने बताया कि पुलिस द्वारा मौके से पकड़ी गयी 03 चार पहिया वाहन (02 पिकअप व 01 मैजिक लोडर) में से, वध हेतु ले जाये जा रहे 20 राशि गोवंश क्रूरता पूर्वक ठूस कर, एक दूसरे के ऊपर लदे हुये तथा उनके पैर, मुंह, पूंछ रस्सी से कसकर बांधे हुये बरामद किये गये। इसके अतरिक्त इन वाहनों से भारी मात्रा में गोवध करने के उपकरण हसिया, चापड़, चाकू, ठीहा आदि भी बरामद किये गये। गिरफ्तार अभियुक्त नबाब अली पुत्र झक्कड़ व अभियुक्त मोहम्मद रऊफ के पास से 02 अदद तमंचा 315 बोर, 02 अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर व 02 अदद खोखा कारतूस 315 बोर बरामद किये गये। पुलिस द्वारा की गयी पूछताछ में गिरफ्तार अभियुक्तो ने बताया कि हम लोगों का लगभग 110 लोगों का संगठित गिरोह है हम लोग योजनाबद्ध तरीके से गोवंशों का वध कर मांस बेचने व गोवशों का तस्करी कर उन्हें गोवध के लिये बिहार में सिवान एवं बंगाल में अपने गिरोह के सदस्यो के माध्यम से भेजते हैं और पैसे कमाते हैं। हम लोग गाड़ियों के आगे छोटी गाड़िया/मोटर साइकिल रैकी के लिये रखते हैं जिससे हमे पुलिस की लोकेशन मिलती रहे। आज भी हम इसी तरीके से जा रहे थे कि पुलिस टीम ने हमें घेरकर पकड़ लिया गया। उधर पुलिस महानिरीक्षक प्रयागराज परिक्षेत्र, प्रयागराज कवीन्द्र प्रताप सिंह के द्वारा, उक्त गिरफ्तारी/बरामदगी में शामिल पुलिस टीम को 50 हजार रूपये नकद पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है।

उद्योग व्यापार मण्डल ने एसपी की माता के निधन पर जताया शोक

शोक सभा कर दी गई श्रद्धांजलि

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उ0प्र0 उद्योग व्यापार मंडल की एक शोकाकुल बैठक जिलाध्यक्ष राजेन्द्र कुमार केसरवानी की अध्यक्षता में आशुतोष उमरवैश्य के प्रतिष्ठान में सियाराम एंड संस् क्लॉथ स्टोर्स पंजाबी मार्केट पर सम्पनन् हुई। शोकसभा का संचालन जिलामंत्री संजय सोनी ने किया।

शोक सभा में पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल की माता जी एवं व्यापारी नंद किशोर केसरवानी के लड़के की धर्म पतने के आकस्मिक निधन पर सभी व्यापारी ने श्रद्धा सुमन अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित किया। जिलाध्यक्ष राजेन्द्र कुमार केसरवानी और पदाधिकारी एवं सभी व्यापारी इस अपूर्ण क्षति से शोक संतप्त है। जिलाध्यक्ष ने कहा कि पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल जैसे होनहार कर्मठ जैसे व्यक्तित्व को जन्म देने वाली मां एक महान आत्मा थी जो अब स्वर्गवासी हो गयी है। तत्पश्चात सभी व्यापारी अपने स्थान पर खड़े होकर 2 मिनट का मौन धारण कर महान मृत आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना किया। उक्त

बैठक में राम शंकर जायसवाल, लखन लाल बाबा, इंद्रा देव तिवारी, कृष्ण मोहन केसरवानी, राहुल केसरवानी, सरदार कुलविंदर, सरदार वासिन्दर, अरविंद केसरवानी, पंकज केसरवानी, सतीश सोनी, हरीश सोनी, इस्तिखार राईन, सुरेश केसरवानी, ज्ञान प्रकाश, संजीव जायसवाल, अमित केसरवानी, राहुल गुप्ता, प्रदीप यादव, धीरज, आशुतोष उमरवैश्य, आदि मौजूद रहे।

जिला स्वास्थ्य समिति एवं संचारी रोग नियंत्रण की बैठक सम्पन्न

मुख्य विकास अधिकारी की अध्यक्षता में हुई बैठक

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मुख्य विकास अधिकारी प्रभाष कुमार की अध्यक्षता में कलेक्टेट्रट सभागार में जिला स्वास्थ्य समिति (शासी निकाय) एवं विशेष संचारी रोग नियंत्रण एवं दस्तक अभियान कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु अर्न्तविभागीय समन्वय समिति/जिला टास्क फोर्स की बैठक सम्पनन् हुई। कोविड-19 की समीक्षा करते हुये मुख्य विकास अधिकारी ने निर्देशित किया कि ज्यादा से ज्यादा लोगों का एन्टीजन टेस्ट किये जाये और कोविड टीकाकरण के प्रति लोगों को जागरूक कर टीकाकरण के कार्य में तेजी लायी जाये। मुख्य विकास अधिकारी ने निर्देशित किया कि कोविड टीकाकरण के प्रतिदिन के लक्ष्य को प्रत्येक दशा में पूर्ण किया जाये और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के अधीक्षकों द्वारा प्रतिदिन सायं 5 बजे प्रगति की मानीटरिंग की जाये तथा टीकाकरण को पोर्टल अपलोड कराया जाये। मुख्य चिकित्साधिकारी द्वारा बताया गया कि जनपद में 04 एक्टिव केस है सभी को होम आइसोलेशन में रखा गया है। जननी सुरक्षा योजना के सम्बन्ध में बताया गया कि 2021-22 में 9383 लाभाथिर्यों के खाते में प्रोत्साहन राशि उपलब्ध करा दी गयी है। इसी के साथ जिला चिकित्सालय एवं महिला चिकित्सालय में एनआरसी तथा एनसीडी सेन्टर की समीक्षा की गयी, माह जुलाई में मात्र 8 बच्चे एनआरसी में ईलाज हेतु सन्दर्भित किये गये है। मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि एनआरसी में सन्दर्भित बच्चों के ईलाज में प्रोत्साहन राशि, खानपान में असुविधा होती है जिस पर उन्होने सीएमएस महिला एवं पुरूष पर नारजागी व्यक्त की और कहा कि एनआरसी कैन्टीन के संचालक की जांच की जाये यदि लापरवाही बरती जा रही हो तो कार्यवाही की जाये। बैठक में मुख्य चिकित्साधिकारी अरविन्द कुमार श्रीवास्तव, मेडिकल कालेज के डा0 आर्य देश दीपक, जिला सूचना अधिकारी विजय कुमार, जिला पंचायत राज अधिकारी रविशंकर द्विवेदी, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका/नगर पंचायत, सामुदायिक एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के प्रभारी चिकित्सा अधीक्षक सहित यूनीसेफ के प्रतिनिधि वकील अहमद अन्य सम्बन्धित उपस्थित रहे।

बाल सभा चुनाव में घमासान के बीच 12 प्रत्याशियों ने भरे पर्चे

चार पद के लिए डाले जाएंगे वोट, जांच में सभी पर्चे वैध मिले

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। शिक्षा के साथ नौनिहालों को मताधिकार की प्रक्रिया को भौतिक रूप से समझाने। उनमें नेतृत्व की क्षमता का गुण पैदा करने। उन्हें लोकतंत्र की प्रक्रिया को भली भांति समझाने के लिये मीडिल स्कूल जोगापुर के सहायक अध्यापक राजेश कुमार ने नवाचार कर अनूठी पहल की है। इसके लिए उन्होंने बाल सभा चुनाव को माध्यम बनाया।

असली चुनाव की तर्ज पर उन्होंने हेड के साथ ही तीन क्लास मॉनीटर के चार पदों के लिए चुनाव का तानाबाना बुना। गुरुवार को यह प्रक्रिया अमल में भी ला दी गई। चार पदों के लिए 12 ने उम्मीदवारी ठोक मैदान में कूद पड़े है। जांच में सभी के नामांकन पर्चे सही पाये गये। शुक्रवार को दक्षता भाषण और चुनाव चिन्ह का आवंटन होना है। चार अक्टूबर

एक हेड और और तीन क्लास मॉनीटर के चुनाव में मचा घमासान

सोमवार को बच्चे अपने मताधिकार का प्रयोग कर अपना मॉनीटर चुनेंगे। पर्चा दाखिला के बाद उम्मीदवारों ने जनसंपर्क तेज कर दिया। उम्मीदवारों की सूची में हेड मॉनीटर के उम्मीदवार खुशी वर्मा, सिमरन प्रजापति क्लास 7, सर्वेश सरोज क्लास 8, नैतिक प्रजापति क्लास 6, क्लास मॉनीटर के उम्मीदवारों में ईशा वर्मा क्लास, वैष्णवी दुबे, मानसी दूबे क्लास 7, जय प्रकाश क्लास 6, प्रदीप सरोज क्लास 8, सत्यम, अभय वर्मा, तनमय विश्वकर्मा क्लास 6 शामिल हैं।

17 केन्द्रों पर हुई अंक सुधार परीक्षा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। यूपी बोर्ड की अंक सुधार परीक्षा गुरुवार को सम्पनन् हुई जिसमें पहली पाली में हाईस्कूल विज्ञान की परीक्षा सभी 17 परीक्षा केंद्रों पर हुई। इसमें पंजीकृत 177 में 40 अनुपस्थित रहे। दूसरी पाली में इंटर जीव विज्ञान में 189 में 161 ने परीक्षा दी। 17 स्कूलों में परीक्षा सकुशल सम्पनन् हुई।

चैनल के तीन कथित संवाददाता गए जेल

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के परियावां रेलवे फाटक के निकट बुधवार की दोपहर दुकानदारों से चैनल के नाम पर रंगबाजी से पैसा वसूलने और गाली गलौज धमकी के मामले में गुरुवार को पकड़े गए तीनो आरोपियों को पुलिस ने लिखा पढ़ी करके न्यायालय भेज दिया। पुलिस की इस कार्रवाई की स्थानीय ब्यापारियों ने सराहना की है। जानकारी करने पर थाना प्रभारी रुकुमपाल सिंह ने बताया कि परियावां बाजार में दो दुकानदारों से बुधवार की दोपहर पकड़े गए आरोपियों ने चैनल के नाम पर पैसा वसूल कर रसीद दिया था जो फर्जी मालूम हुआ जिसमें घनश्याम साहू व अन्य ब्यापारी परियावां निवासी की तहरीर पर एस बाबरा थाना क्षेत्र आलापुर निवासी, दयाराम पुत्र रामराज्य यादव व सुरेश पुत्र भारत लाल कमालपुर कड़ा देबी गंज कौशाम्बी निवासी को धारा 386, 323 आई पी सी के तहत न्यायालय भेजा।

जमीनी विवाद में महिला को मारपीटकर किया घायल

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के जुगई का पुरवा गांव में गुरुवार की सुबह जमीनी विवाद का पुलिस द्वारा सुलह समझौता कराने के बाद आरोपियों ने प्रीती पतने धर्मेंद्र (38) वर्षीय को मारपीट कर घायल कर दिया जिसे सीएचसी कालाकांकर के चिकित्सकों ने जिला मुख्यालय के लिए रिफर कर दिया। प्रीती की तहरीर पर पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया, जिसमें आरोपी का जमीनी विवाद में पुलिस ने मंगलवार को 151 में चालान किया था तथा बुधवार को पुलिस ने विवादित जमीन का समझौता करा दिया था।

दुर्गा पूजा पंडाल रखने के विवाद में हुई मारपीट, मुकदमा दर्ज

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। दुर्गा पूजा लगाने के स्थल के विवाद में दो पक्षों में मारपीट हुई जिससे आरोपियों ने एक पक्ष को मारपीट कर घायल कर दिया। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के जिला रामपुर बेला गांव के रहने वाले जवाहरलाल ने प्रार्थना पत्र देकर बताया कि गांव के रहने वाले रामहित राजनारायण सुरेश राजेश उमाशंकर उसके घर के सामने जबरन दुर्गा पूजा पंडाल लगा रहे थे पीड़ित ने जब इसका विरोध किया तो आरोपीगढ़ गाली-गलौज करते हुए घर में घुसकर मारपीट तथा घर में रखा हुआ कुर्सी चारपाई तोड़ दिए तथा पीड़ित को जान से मारने की धमकी भी दिए। पीड़ित की तहरीर पर आरोपियों पर संबंधित धाराओं में मामला दर्ज हो गया।

सांसद को सुरक्षा मुहैया कराये जाने की मांग

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। सांसद संगम लाल गुप्ता के ऊपर हुए हमले को लेकर साहू समाज ने जमकर रोष व्याप्त किया है। साहू समाज का कहना है कि सांसद संगम लाल गुप्ता के ऊपर गरीब कल्याण दिवस के सरकारी कार्यक्रम में जो प्राणघातक हमला वह है वह अत्यंत ही निंदनीय है। राज्यपाल को दिए गए ज्ञापन में सांसद को विशेष श्रेणी की सुरक्षा व्यवस्था मुहैया कराने की मांग की गई है।

गांजा व सुतली बम के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना फतनपुर से उ0नि0 विनय कुमार सिंह मय हमराह द्वारा मुखबिर खास की सूचना पर थानाक्षेत्र के स्टेशन रोड़ नहर पुलिया गौरा पूरेबदल के पास से एक व्यक्ति राजू यादव पुत्र माताफेर यादव नि0 गौरा पूरेबदल थाना फतनपुर को 01 किलो 250 ग्राम अवैध गांजा व 02 अदद सुतली बम के साथ गिरफ्तार किया गया। इस सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 149/21 धारा 8/20 एनडीपीएस एक्ट व मु0अ0सं0 150/2021 धारा 4/5 विष्फोटक अधिनियम का अभियोग पंजीकृत किया गया। पुलिस टीम में उ0नि0 विनय कुमार सिंह, उ0नि0 अमित कुमार सिंह, उ0नि0 रतनेश कुमार मौर्य, का0 हरेन्द्र सिंह व का0 राहुल प्रताप सिंह थाना फतनपुर शामिल रहे।

पाल बघेल धनगर समाज की जनसंदेश यात्रा पहुंची बेल्हा

सपाईयों ने अतिथियों का फूलों से किया स्वागत

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले के विधानसभा क्षेत्र-248 सदर के प्लाजा पैलेस में समाजवादी पार्टी का पाल बघेल धनगर समाज जनसंदेश यात्रा श्यामलाल पाल पूर्व प्रदेश सचिव, जानकी पाल पूर्व मंत्री सुषमा पाल पूर्व जिला पंचायत सदस्य प्रतापगढ़, काशीनाथ पाल जिलाध्यक्ष पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ भदोही के नेतृत्व में पहुंचा।

इस दौरान कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि वर्तमान भाजपा सरकार गरीब, किसान, महिला, दलित, नौजवान एवं रोजगार विरोधी सरकार है। संविधान के तहत जो पिछड़ों और दलितों के विकास के लिए आरक्षण

की व्यवस्था है उसे वर्तमान सरकार समाप्त कर पूजी पतियों को लाभ पहुंचा रही है। पिछली समाजवादी पार्टी की सरकार ने किसानों और पिछड़ों दलितों के हित में अच्छा काम किया है। भाजपा सरकार बड़े बड़े धनन सेठों को लाभ पहुंचा रही है। जिसके कारण महंगाई चरम पर है। बढ़ती महंगाई का गरीब परिवार, किसान, नौजवान सभी दंश झेल रहा है। देश व प्रदेश की भाजपा सरकार सत्ता के नशे में चूर मदमस्त है। कार्यक्रम की अध्यक्षता विजय बहादुर पाल व संचालन जिला महासचिव अब्दुल कादिर जिलानी ने किया। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष छविनाथ यादव, पूर्व विधायक नागेंद्र सिंह मुनन यादव, नारेंद्र पाल एडवोकेट, मनीष पाल, उमेश चन्द्र पाल प्रधान, रवि पाल एडवोकेट, अरूण पाल, मुकेश पाल, विजय पाल, शबनम बानो, डा.एजाज, निसार अहमद, मीडिया प्रभारी वकार अहमद सहित पदाधिकारीगण, कार्यकर्ता एवं पाल समाज के भारी संख्या में लोग मौजूद रहे।

मांगों को लेकर दूसरे दिन भी जारी रहा शिक्षकों का धरना

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ द्वारा शिक्षकों का चयन वेतनमान जारी न करने के विरोध में लगातार दूसरे दिन भी अनिश्चितकालीन धरना जारी रहा। धरने का नेतृत्व जिला अध्यक्ष रमाशंकर शुक्ल ने किया। इस अवसर पर जिला मंत्री विनय सिंह, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सत्य प्रकाश पांडेय, मांडलिक मंत्री अनिल पांडेय,कोषाध्यक्ष राजेश चंद्र पाण्डेय आदि ने जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी के शिक्षक विरोधी रवैए की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी का शिक्षक विरोधी रवैया शासन की नीतियों के विरुद्ध है हम इसकी कड़ी निंदा करते हैं और सरकार से मांग करते हैं कि तत्काल ऐसे प्रभारी जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी जिनका स्थानांतरण हो चुका है फिर भी प्रतापगढ़ में जमे हुए हैं, को तत्काल प्रतापगढ़ से इनके स्थानांतरित जनपद में भेजा जाए और शिक्षकों के हित में बेसिक शिक्षा अधिकारी की नियुक्ति कर चयन वेतनमान लागू करा कर शिक्षकों को उनका अधिकार दिया जाए। साथ ही दोषी लिपिक की संबद्धता समाप्त करके उसे उसके ब्लॉक में भेजा जाए।

संदिग्ध परिस्थितियों में अधेड़ की मौत, कोहराम

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर कोतवाली क्षेत्र के बनवीर काछ गांव में एक अधेड़ का शव मिलने से सनसनी फैल गई। आसपास के लोगों ने पुलिस को जानकारी दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर अधेड़ के शव को कब्जे में लेकर अन्त्य परीक्षण के लिये भेजा है। घटना के बारे में बताया जाता है कि नगर कोतवाली के दुजई का पुरवा बनवीर काछ निवासी मिठाई लाल हरिजन (45) पुत्र स्वर्गीय जगेसर हरिजन साइकिल पर फेरी लगाकर चुरमुरा बेचने के काम के साथ वह सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नाचने का भी काम करता था। परिवार वालों का आरोप है कि पतने इंद्रावती का इनके साढू जगदीश लाल पुत्र बाबूलाल निवासी मकूनपुर सकरदहा बाघराय के साथ काफी दिन से प्रेम प्रसंग चल रहा था। जगदीश लाल फिरोजपुर पंजाब में रेलवे में नौकरी करता था। चार महीना पहले रिटायर हुआ था। मिठाई लाल की पतने लगभग एक साल पहले अपने बहनोई के यहां फिरोजपुर पंजाब चली गई थी। लगभग 10 दिन पहले दोनों बनवीर काछ अपने गाँव आए थे और उसकी पतने को छोड़कर साढू अपने घर चला गया। बुधवार की शाम को फिर बनवीर काछ आया और मिठाई लाल के साथ बैठकर शराब पिया। इसकी वजह से रात भर घर में लड़ाई झगड़ा होता रहा। गुरुवार की सुबह लगभग चार बजे मिठाई लाल की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई।

आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों ने तैयार किया व्यंजन, लगी प्रदर्शनी

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। बाल विकास परियोजना कालाकांकर के तहत ब्लाक मुख्यालय के सभागार कक्ष में गुरुवार को आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों ने विभाग से मिले पोषाहार को घर से विभिनन् प्रकार के व्यंजन बनाकर उनकी प्रदर्शनी लगाई जिसमें बीडीओ कालाकांकर अपर्णा सैनी कार्यकत्रियों द्वारा तैयार किया गया।

व्यंजन ढोकला, पकौड़ी समोसा, जैसे कई प्रकार के बने व्यजन को देखा और ग्राम पंचायत शेख मोहम्मदपुर व हिनाहू गांव से आई दो गर्भवती महिलाओं को खिलाया तथा कालाकांकर व हिनाहू से आये

दो बच्चों को बीडीओ ने अनुप्रासन कराया।

प्रदर्शनी में आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों के व्यंजन को देखा। राष्ट्रीय पोषण माह प्रदर्शनी में कालाकांकर बाल बिकास परियोजना अधिकारी रवीन्द्र राम अपने स्टाफ के साथ मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

डिवाइडर से टकराई बाइक एक की मौत एक घायल

कोखराज कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के अंतर्गत भरवारी मंझनपुर के मार्ग पर सुहेला मोड़ के पास मंझनपुर की तरफ बाइक से जाते हुए अनियंत्रित बाइक डिवाइडर से टकरा गयी है जिससे बाइक चालक लवलेश यादव उम्र 30 वर्ष पुत्र भैरव प्रसाद निवासी नौढिया थाना कोखराज हादसे में घायल हो गए हैं इलाज के लिए उन्हें जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां उनकी मौत हो गई है बाइक में उनके साथ बैठा दूसरा युवक इस हादसे में लहूलुहान है जिसका इलाज अस्पताल में चल रहा है घटना बुधवार की बताई जाती है मृतक युवक की लाश को कब्जे में लेकर पुलिस ने पोस्टमार्टम को भेज दिया है जानकारी मिलने के बाद परिवार में कोहराम मच गया है।

युवक का ब्लेड से रेता गला

कौशांबी। कोखराज थाना क्षेत्र के हर्राय पुर निवासी अंकुर पुत्र हरिशंकर ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि रंजिशन बिरोधियो ने गले में ब्लेड से वार किया गया है ब्लेड के वार से अंकुर को चोटें आई हैं जिससे उन्हें इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है घटना में साजिश की बू आ रही है।

भरवारी कस्बे में कराया गया योग

भरवारी कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद भरवारी क्षेत्र में समाजवादी पार्टी के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के निर्देश पर योग प्रशिक्षकों ने योग कार्यक्रम आयोजित किया है योग कार्यक्रम में नगर के सैकड़ों लोगों ने हिस्सा लिया है जहां योग गुरु अजय कुमार पाठक महाराज द्वारा नगर वासियों को योग का प्रशिक्षण दिया गया है योग प्रशिक्षण का कार्यक्रम बड़वानी के लखनलाल केस था उसमें 5:00 बजे 7:00 बजे तक आयोजित किया गया है योग कार्यक्रम में दयाशंकर यादव चंद्र बली पटेल कैलाश केसरवानी गुलाम हुसैन भोला सिंह कुशल पटेल आनंद मोहन पटेल संतोष केसरवानी भैया लाल पाल चंद्रजीत यादव लवलेश लव कुश सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

पत्रकार की माता का निधन

कौशांबी। जनपद मुख्यालय मंझनपुर के घना के पूरा निवासी सतीश नामदेव पत्रकार की माता का निधन बीमारी के बाद हो गया है काफी दिनों से उनका इलाज अस्पताल में चल रहा था पत्रकार की माता के निधन की जानकारी मिलते ही मौके पर परिचित रिश्तेदारों के साथ-साथ तमाम पत्रकार पहुंचे हैं चिता को मुखाग्नि उनके बड़े बेटे पत्रकार सतीश नामदेव ने दिया है पत्रकारों ने 2 मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति की कामना प्रभु से की है।

युवती का संदिग्ध परिस्थितियों में कुएं से शव बरामद

मौत के बाद रोते बिलखते परिजन उपस्थित ग्रामीण

अखंड भारत संदेश

कड़ा धाम कोतवाली के कमाल पुर टिकरी गांव के बाहर खेतों में कुएं से एक युवती का शव बरामद

अझुवा कौशाम्बी। कड़ा धाम कोतवाली के कमाल पुर टिकरी गांव के बाहर खेतों की तरफ स्थित कुएं से संदिग्ध अवस्था मे पुलिस ने एक युवती का शव बरामद किया है कड़ा धाम कोतवाली पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया है युवती सैनी कोतवाली क्षेत्र के जाफर पुर गांव की रहने वाली है।

जानकारी के अनुसार सैनी कोतवाली क्षेत्र के जफर पुर गांव की कविता सरोज उम्र तकरीबन 20 वर्ष पुत्री स्व दयाराम की लाश कुएं में पड़े होने की सूचना गांव में फैल गयी मामले की सूचना पर कड़ा धाम कोतवाली पुलिस ने फायरब्रिगेड कर्मियों की मदद से कुएं से शव को बाहर निकलवाकर पोस्टमार्टम को भेजकर कार्रवाई में जुट गई है वहीं युवती के परिजनों के अनुसार युवती की मानसिक स्थिति ठीक न रहने से पहले भी कई बार आत्महत्या का प्रयास वह कर चुकी है।

जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक संपन्न

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट स्थित सम्राट उदयन सभागार में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने परिवार कल्याण कार्यक्रम के तहत विभिन्न कार्यो में लक्ष्य के सापेक्ष प्रगति न पाये जाने पर नाराजगी प्रकट करते हुए सीएमओ को निर्देश दिये कि नोडल अधिकारी नामित कर कार्यो में प्रगति लाया जाय उन्होने कहा कि ठीक प्रकार से कार्य न करने वाले बीसीपीएमबीके विरूद्ध कार्यवाही की जाय उन्होने जननी सुरक्षा योजना के तहत आशाओं एवं लाभार्थियें के भुगतान में प्रगति लाने के निर्देश दिये। उन्होने जननी सुरक्षा येजना कमिटेड व्यय में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र चायल एवं कड़ा में लक्ष्य के सापेक्ष प्रगति न पाये जाने पर नाराजगी प्रकट करते हुए प्रभारी चिकित्साधिकारी कड़ा एवं चायल को चेतावनी जारी करने के निर्देश दिये। उन्होने और प्रसव केन्द्र बनाये जाने हेतु आवश्यक कार्यवाही तेजी से पूर्ण करने के निर्देश दिये। उन्होने नियमित टीकाकरण के तहत लगाये जाने वाले सभी टीकों की प्रगति की नियमित समीक्षा कर प्रगति लाने के निर्देश देते हुए कहा कि नियमित टीकाकरण से कोई भी बच्चा छूटने न पाये उन्होने हेल्थ एंव वेलनेस सेन्टर के निर्माण कार्य मे आ रही समस्याओं के निस्तारण हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिये है। उन्होने सभी प्रभारी चिकित्साधिकारियों को आशाओं एवं एएनएम की नियमित बैठक कर सभी कार्यो में प्रगति लाने के निर्देश दिये।

भाजपा सांसद के हमलावर की हो गिरफ्तारी : चन्द्रिका

सांसद पर हमला को लेकर साहू एकता मंच ने डीएम को सौंपा ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपते साहू एकता मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रिका प्रसाद व अन्य

कौशाम्बी। साहू एकता मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रिका प्रसाद साहू ने जिलाधिकारी कौशांबी को ज्ञापन सौपते हुए कहा है कि प्रतापगढ़ जनपद में सांसद पर हमले के आरोपियों को गिरफ्तार किया जाए उन्होंने कहा कि प्रतापगढ़ के ब्लॉक परिसर में आयोजित गरीब कल्याण योजना के कार्यक्रम में भागीदारी कर रहे पूर्व सांसद प्रमोद तिवारी एवं उनकी विधायक पुत्री मोना मिश्रा और उसके सहयोगियों द्वारा सुनियोजित ढंग से भाजपा सांसद संगम लाल गुप्ता पर प्राणघातक हमला किया गया था। इस घटना के आरोपियों के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज होने के बावजूद भी अब तक आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं हो सकी है। जिससे साहू एकता मंच व वैश्य समाज के लोगों ने प्रमोद तिवारी, मोना मिश्रा के खिलाफ मुदार्बाद के नारे लगाए राष्ट्रीय अध्यक्ष साहू एकता मंच उत्तर प्रदेश चंद्रिका प्रसाद साहू एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कार्यवाहक अध्यक्ष भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा उत्तर प्रदेश नरेंद्र कुमार साहू की अगुवाई में सैकड़ों वैश्य कार्यकताओं ने मुख्य आरोपियों की गिरफ्तारी और रासुका गैंगस्टर की कार्रवाई किए जाने की मांग की राज्यपाल को संबोधित एक ज्ञापन जिलाधिकारी को सौपा गया। इस दौरान वैश्य समाज ने कहा कि प्रदेश में फैली अराजकता की स्थिति में आज व्यापारी असुरक्षित महसूस कर रहा है। गुंडों माफियाओं के बढ़ते साम्राज्य से जब विधायक, सांसद सुरक्षित नहीं है, तो समाज का अन्य वर्ग कैसे सुरक्षित रह सकेगा। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सांसद प्रतापगढ़ संगम लाल गुप्ता की सुरक्षा बढ़ाए जाने के अलावा व्यापारियों की सुरक्षा बढ़ाए जाने की भी मांग की व्यापारियों की सुरक्षा के पक्ष में ठोष कदम उठाए जाने की बात कही। इस अवसर पर रामप्रकाश, ईश्वर दीन, शेष कुमार, छितानी लाल, सुरेश कुमार, ओम प्रकाश, शशि प्रकाश, भोला प्रसाद, आशीष कुमार, सुनील कुमार, दुर्गेश गुप्ता, विशाल, जितेन्द्र कुमार, सत्यम, दिलीप कुमार, सुभाषचन्द्र, राकेश कुमार, चन्द्र किशोर, विशाल कुमार, सत्य प्रकाश, मुन्ना, रोशन लाल, अशोक कुमार, मिश्री लाल, रवि प्रकाश,सहित साहू एकता मंच व वैश्य समाज के लोग रहे।

जर्जर भवन में चल रहा है सरकारी अस्पताल

अखंड भारत संदेश

स्वास्थ्य कर्मचारी और चिकित्सक जर्जर अस्पताल में ड्यूटी देने से भागते हैं दूर

कौशांबी। चायल तहसील क्षेत्र के चरवा में पांच दशक पूर्व महिला अस्पताल और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण कांगेस सरकार के कार्यकाल में किया गया था लेकिन 5 दशक बीत जाने के बाद इस अस्पताल का भवन जर्जर हो गए हैं नवीन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र चरवा का भवन अधिक जर्जर है लेकिन सरकार के पास नए भवन बनाए जाने के लिए धन की कमी है जिससे प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र चरवा का नया भवन निर्माण नहीं शुरू हो सका है जर्जर भवन में अस्पताल संचालित हो रहा है जिससे चिकित्सक और स्वास्थ्य कर्मी जर्जर भवन में मरीजों का इलाज करने में भय खाते रहते हैं कि कब जर्जर भवन का हिस्सा टूट कर गिर जाए और मरीज के साथ-साथ स्वास्थ्य कर्मी और चिकित्सक हादसे का शिकार हो जाएं विभागीय लोगों का कहना है कि कई बार जर्जर भवन की मरम्मत कराए जाने के लिए अधिकारियों को पत्र लिखा गया है लेकिन नए भवन का निर्माण कराए जाने की बात तो दूर पुराने भवन की मरम्मत योगी सरकार में नहीं हो सकी है स्थानीय लोगों ने योगी सरकार और स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए चरवा अस्पताल परिसर के जर्जर भवन की मरम्मत कराए जाने के साथ-साथ नए भवन निर्माण कराए जाने की मांग की है।

दिव्यांग ने अपमानित करने का अधिकारी पर लगाया आरोप

कौशांबी। मंझनपुर कस्बे के दृष्टि दिव्यांग लालचंद वर्मा ने मुख्यालय के एक अधिकारी पर आरोप लगाते हुए कहा कि गरीब कमजोर शोषित अशिक्षित लोगों की मदद के लिए वह प्रार्थना पत्र लेकर डीएम के यहां गया था जहां एक अन्य अधिकारी ने उसे देखते ही अपमानित करने लगे हैं दिव्यांग लालचंद का कहना है कि अधिकारी ने कहा कि अंधे साले नेतागिरी करते हो कह कर अपमानित किया है दिव्यांग लाल चंद्र ने मामले की जानकारी प्रयागराज आयुक्त से लेकर शासन तक की है लालचंद्र का कहना है कि उसे अपमानित करने वाले अधिकारी के खिलाफ शासन ने मामले को गंभीरता से लेते हुए जांच शुरू करा दी है दृष्टि दिव्यांग लाल चंद्र ने अपमानित करने वाले अधिकारी को सेवा मुक्त करने की मांग की है।

सेंध काट कर लाखों का गहना व नगदी पर हाथ साफ कर गए चोर

अखंड भारत संदेश

घर के पीछे झाड़ी में मिला बक्सा और कपड़ा मौके पर पहुंची पुलिस घटना के खुलासे में कर रही पूछताछ

चोरी के बाद बिखरा पड़ा समान का दृश्य

कोखराज कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र में बीती रात एक घर में सेंधमारी कर चोर घर से नगदी जेवर और कपड़ा से भरा बक्सा खेत की ओर उठा ले गए हैं खेत में सुबह खाली बक्सा और कपड़ा पड़ा मिला है परिजनों के मुताबिक जिन बक्से को चोर उठा ले गए हैं उसमें लाखों रुपए के सोने चांदी के जेवरात और नकदी रुपए रखे थे मामले की जानकारी मिलते ही घटनास्थल पर पुलिस पहुंची है।

जानकारी के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के अंतर्गत राला ग्राम मे बीती रात फैज हैदर पुत्र स्वा सकील हैदर के घर सभी सदस्य खाना खाने के बाद सो गये चोरों ने मौका पाते ही एक ही घर मे दो कमरों में सेंध काट कर लाखों रुपए कीमत के सोने चांदी के गहने व नगद रुपया उठा ले गये है सुबह जब उन्होंने अपना कमरा खोला तो हैदर के होश उड़ गए वह अपने दोनों कमरों में सेंध देख कर चिल्लाने लगे आवाज सुन मौके पर ग्रामीण पहुंचे तो चोरी की इस घटना से सभी लोग दंग रह गए डायल 112 पुलिस को घटना की सूचना दी गयी मौके पर पुलिस पहुंची तो देखा कि घर के बाहर झाड़ी में खाली बक्सा व कपड़े पड़े मिले है थाना कोखराज पुलिस को मामले की सूचना दी गयी घटना की जानकारी मिलने के बाद मौके पर कोखराज पुलिस पहुंची और घटना के बारे में लोगों से पूछताछ किया हैदर ने बताया कि लाखो रुपए कीमत के सोने व चांदी के आभूषणव नगद रुपया चोर उठा ले गए हैं।

इलाके में पुलिस गश्त बंद

कोखराज कौशाम्बी। इलाके में लंबे समय से पुलिस गश्त बंद है जिससे अपराधियों के हौसले बुलंद है और आए दिन अपराधी घटना को अंजाम देकर फरार हो जाते हैं इलाके में कई लावारिस लाशे भी मिल चुके हैं चोरी की कई घटनाएं हो चुकी हैं लेकिन इलाके में पुलिस गश्त नहीं शुरू हो सकी है जिससे घटनाओं को अंजाम देने वाले लोगों के हौसले बुलंद हैं।

जिला पंचायत कार्यालय में अध्यक्ष ने की जनसुनवाई

अखंड भारत संदेश

जनसुनवाई करते जिला पंचायत अध्यक्ष कल्पना सोनकर जितेंद्र सोनकर उपस्थित ग्रामीण

कौशाम्बी। मंझनपुर स्थित जिला पंचायत कार्यालय में जिला पंचायत अध्यक्ष कल्पना सोनकर ने प्रत्येक बुधवार की तरह आज कार्यालय में जनसुनवाई किया है, जनसुनवाई के दौरान आम जनमानस की 124 शिकायतों प्राप्त हुई, जिसमें 27 शिकायतों को जिला पंचायत अध्यक्ष ने मौके पर ही निस्तारण किया। शेष शिकायतों को निस्तारण हेतु संबंधित विभाग को उन्होंने निर्देशित किया है।

जिला पंचायत कार्यालय में जिला पंचायत अध्यक्ष कल्पना सोनकर जनसुनवाई के दौरान जिले भर से आये हुए फरियादियों की समस्याओं से मुखातिब हुई है। अध्यक्ष के सामने पश्चिम शरीरा के लेखपाल की शिकायती आयी जिसके निस्तारण के लिए अधिकारियों को उन्होंने निर्देशित किया है। जनसुनवाई में 124 शिकायतें प्राप्त हुई जिसमें हैंडपम्प, रास्ता व मारपीट, प्रधानमंत्री आवास से संबंधित शिकायतें प्राप्त हुई। जिला पंचायत अध्यक्ष कल्पना सोनकर ने 27 शिकायतों को तत्काल अधिकारियों से वार्ता करते हुए निस्तारित किया है, शेष शिकायतों को निस्तारण हेतु संबंधित विभाग को निर्देशित किया है। साथ ही बुधवार को जिला पंचायत अध्यक्ष कल्पना सोनकर ने नये कार्य अधिकारी को कार्यालय में ज्वाइन कराया है, उन्होंने कार्यालय को सुचारू रूप से कार्य को सम्पादित कराने के लिए कहा है। इस मौके पर जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि जितेन्द्र कुमार सोनकर सहित काफी लोग मौजूद रहे।

भाजपा राष्ट्रीय सचिव के जन्मदिवस पर जिला पंचायत अध्यक्ष ने कटा केक

केक काटकर जन्मदिन मानते जिपं अध्यक्ष कल्पना सोनकर ब्लाक प्रमुख जितेंद्र सोनकर व अन्य।

कौशाम्बी। भाजपा के राष्ट्रीय सचिव व माय होम इंडिया के संस्थापक सुनील देवधर का जिला पंचायत अध्यक्ष कल्पना सोनकर के प्रतिनित्यि मे जितेन्द्र कुमार सोनकर सहित पार्टी के तमाम कार्यकर्ता ने उनके जन्मदिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया जिला पंचायत अध्यक्ष कल्पना सोनकर ने जिला पंचायत कार्यालय में केक काट जन्मदिवस मनाया है। कल्पना सोनकर ने दृण व्यक्तित्व के धनी, अपार ऊर्जा के स्रोत, प्रभावशाली कार्यसाधक कुशल संगठक और ओजस्वी वक्ता राष्ट्रीय सचिव और माय होम इंडिया के संस्थापक सुनील देवधर के बारे में विचार व्यक्त किया इस मौके पर मण्डल अध्यक्ष दिलीप अग्रहरी, मिश्री लाल सरोज, जिला संयोजक एबीवीपी शैलेश अग्रहरी, जितेंद्र साहू, गोलू सिंह पटेल, वीएचपी के पूर्व जिलाध्यक्ष दीपेन्द्र सिंह, धनराज सिंह, सतीश मिश्रा,लवलेश लोधी अमित सोनकर, जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि दिनेश सिंह, शाहपुर प्रधान ओपी सिंह, प्रमोद भार्गव, रोहित कुमार, अजय सिंह पटेल, संजय भार्गव, सुदीप विश्वकर्मा सहित तमाम कार्यकताओं उपस्थिति रहें।

सात दिन बीते दूसरे हत्याभियुक्त को गिरफ्तार नहीं कर सकी पुलिस

खुलेआम घूम रहे हत्याकांड के आरोपी पिपरी पुलिस बन रही अनजान

कौशांबी। पिपरी थाना क्षेत्र के मनौरी बाजार में 23 सितंबर की रात्रि नितिन कुमार केसरवानी उर्फ छोटू के ऊपर चाकूओ से लगातार हमला कर उसे मौत के घाट उतार दिया गया था मामले में परिजनों ने सुनील कौशल और मंगल साहू के नाम हत्या का मुकदमा दर्ज किया था पुलिस ने एक आरोपी को 4 दिन बाद गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है लेकिन दूसरा आरोपी अभी तक पुलिस की पकड़ में नहीं आ सका है चचाओं पर जाए तो आरोपी खुलेआम घूम रहा है इस हत्याकांड के आरोपी के लोकेशन को लेकर पुलिस गंभीर नहीं है यदि पुलिस ने उसके परिजनों रिश्तेदारों के मोबाइल नंबरों को ट्रेस करना शुरू कर दिया होता और आरोपी के ठिकानों पर दबिश देकर उसके खुलासे का प्रयास किया होता तो अब तक हत्या अभियुक्त पुलिस की चौखट पर होता लेकिन पुलिस ने इस हत्याकांड के खुलासे में गंभीरता नहीं दिखाई है सर्विलांस के माध्यम से हत्यारे का लोकेशन तलाश कर पुलिस ने गिरफ्तारी का प्रयास नहीं किया है जिससे पिपरी पुलिस की कार्यशैली पर सवाल उठना स्वाभाविक है। पिपरी थाना क्षेत्र में 7 दिनों पूर्व बेखौफ तरीके से मनौरी बाजार में हुए इस हत्याकांड के खुलेआम घूम रहे नामजद आरोपी को थाना पुलिस खोज नहीं पा रही है मृतक नितिन के परिजनों ने आशंका जाहिर की है कि पिपरी पुलिस आरोपियों से सांठगांठ कर चुकी है जिससे आरोपी के गिरफ्तारी करने में पुलिस हिला हवाली कर रही है।

पंचायत सचिवों का स्थानांतरण आदेश साबित हुआ हवा हवाई

अखंड भारत संदेश

चरवा कौशांबी। जिला अधिकारी के अनुमोदन के बाद जिला पंचायत राज अधिकारी ने पंचायत सचिव का स्थानांतरण अन्य क्षेत्र में कर दिया था लेकिन जिला पंचायत राज अधिकारी का यह आदेश हवा हवाई साबित हो रहा है महीनों बीत जाने के बाद भी स्थानांतरण आदेश का पालन पंचायत सचिव नहीं कर रहे हैं बल्कि पंचायत सचिव स्थानांतरण आदेश को निरस्त करवाने के प्रयास में लगे हैं जिला अधिकारी के अनुमोदन के बाद जारी किया गया स्थानांतरण आदेश पर पंचायत सचिव भारी पड़ रहे हैं। सूत्रों की माने तो पंचायत सचिव कई माननीयों की चौखट पर भी सिफारिश कराने पहुंच चुके हैं वही पंचायत सचिव स्थानांतरण रुकवाने के नाम पर कर्मचारियों के माध्यम से मोटी रकम देने को तैयार है अब सवाल उठता है कि जिला पंचायत राज अधिकारी अपने आदेश का पालन अधीनस्थों को नहीं करा पा रहे हैं तो कैसे पंचायत राज विभाग की चौपट व्यवस्था में सुधार होगा कुछ कर्मचारियों ने पंचायत सचिव से धनादोहन कर स्थानांतरण आदेश रुकवाने में आला अधिकारियों के पास सिफारिश शुरू कर दी है बताते चलें कि जिले के विभिन्न ब्लॉक में एक स्थान पर लंबे समय से पंचायत सचिव तैनात हैं। लंबे समय से तैनात पंचायत सचिव को हटाए जाने की मांग ग्राम पंचायत की जनता ने किया था जिस पर जिला पंचायत राज अधिकारी ने बीते महीने पंचायत सचिव के स्थानांतरण आदेश जारी किया था लेकिन पंचायत सचिव को स्थानांतरित किए जाने के इस आदेश का पालन महीनों बीत जाने के बाद भी नहीं हो सका है।

सीएमओ ऑफिस सेटिंग करने पहुंचे डॉक्टर दंपत्ति

अखंड भारत संदेश

- **अवैध तरीके से संचालित नर्सिंग होम में इलाज के दौरान कई लोगों की हो चुकी है मौत**
- **चिकित्सक दंपत्ति की गिरफ्तारी को महिला अधिकार संगठन ने की आवाज बुलंद**

कौशांबी। चायल तहसील क्षेत्र के तिल्हापुर मोड़ में गणेश हॉस्पिटल में इलाज के दौरान कई लोगों की मौत हो चुकी है मौत के इस अस्पताल को दो बार सीज किया जा चुका है लेकिन फिर तीसरी बार बुधवार को एक नवजात की मौत इस अस्पताल में हो गई है जिस पर तीसरी बार फिर स्वास्थ विभाग में अस्पताल को सीज कर दिया अस्पताल संचालकों की हालत यह है कि स्वास्थ्य विभाग अस्पताल सील कर देता है और चिकित्सक दम्पत्ति अस्पताल के सील ताला को तोड़कर फिर अस्पताल का संचालन शुरू कर देते हैं चिकित्सक के इस कारनामे के पीछे स्वास्थ्य विभाग की मंशा साफ नहीं दिख रही है जिससे इलाज के दौरान चिकित्सको की लापरवाही से कई मरीजों की मौत हो गयी है आरोपी चिकित्सक दम्पत्ति के विरुद्ध पिपरी थाने में मुकदमा भी दर्ज हुआ है लेकिन थाना पुलिस से साठगांठ के बाद उसे मुचलके पर रिहा कर दिया गया है मरीज की मौत के मामले में चिकित्सक दंपत्ति जेल नहीं जा सके हैं बुधवार को अस्पताल में फिर नवजात की मौत होने के बाद मुख्य चिकित्सा अधिकारी के निर्देश पर मौके पर पहुंची स्वास्थ्य विभाग की टीम ने एक बार फिर सीज अस्पताल को फिर सीज कर दिया है गुरुवार को आरोपित डॉक्टर दंपत्ति मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में डिप्टी सीएमओ और कुछ बाबूओ के पास बैठकर सेटिंग करते देखे सुने गए हैं चचाओं पर जाए तो मामले में लीपापोती कर चिकित्सक दंपत्ति को बचाने के नाम पर लाखों रुपए की रकम जिम्मेदारों तक पहुंचाने का ठेका लिपिक ने ले लिया है स्वास्थ्य विभाग की ओर से उन्हें बचाने का आश्वासन दिए जाने के बाद चिकित्सक दंपत्ति के हौसले बुलंद है मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय के लोगों ने चिकित्सक दंपत्ति को बचाने के लिए तमाम कानूनी दांवपेच बताए हैं जिस पर चिकित्सक दंपत्ति ने मंझनपुर से झूठा शपथ पत्र बनाकर मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में जमा करा कर अपने को निर्दोष बताने की झूठी कहानी शुरू कर दी है। आखिर सवाल उठता है कि इस अस्पताल में चिकित्सक दंपत्ति की लापरवाही से बार-बार मरीजों की इलाज में मौत होती है मरीजों का जीवन बचाने के लिए आरोपी चिकित्सक दंपति को गिरफ्तार कर मुख्य चिकित्सा अधिकारी और उनकी टीम के सदस्य क्यो जेल नहीं भेज रहे हैं। बार-बार अस्पताल का ताला तोड़कर फिर इलाज शुरू करने के मामले में चिकित्सक दम्पत्ति के कारनामे को स्वास्थ्य विभाग के जिम्मेदार गंभीरता से क्यो नहीं ले रहे हैं इतना ही नहीं मुकदमा दर्ज करने के बाद पिपरी थाना पुलिस आरोपी चिकित्सक दंपति को गिरफ्तार कर जेल क्यों नहीं भेज रही है। मौत के बाद ग्रामीणों का आक्रोश भी फूट पड़ा है और दोनों बार मौत के बाद अस्पताल परिसर में सैकड़ों लोगों ने हंगामा भी किया है लेकिन फिर भी अधिकारियों ने बेशर्मी की हद कर दी है। महिला अधिकार संगठन की जिला अध्यक्ष अंजना मिश्रा ने मौत के इस मामले को गंभीरता से लेते हुए अधिकारियों को चेतावनी देते हुए कहा है कि यदि नवजात बच्ची और महिला की मौत के जिम्मेदार चिकित्सक दंपत्ति की तत्काल गिरफ्तारी नहीं हुई तो उनके संगठन की सैकड़ों महिलाएं मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय के जिम्मेदारों के कारनामों को सड़क पर बेनकाब करेंगी।

नवजात शिशु की मौत मुकदमा दर्ज

अखंड भारत संदेश

युवती की माँ का कहना है कि शादी का झांसा देकर बनाया है शारीरिक संबंध

ककोढा कौशांबी। कोखराज थाना क्षेत्र के मूरत गंज पुलिस चौकी अंतर्गत बलिहावा गांव में एक नवजात शिशु की जन्म लेते ही मौत हो गई है मौत के बाद युवती की तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है और नवजात शिशु के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया है। घटनाक्रम में बताया जाता है कि कोखराज थाना क्षेत्र के बलिहावा गांव निवासी मंजू देवी पत्नी बीरेंद्र कुमार पटेल की बेटी खुशबू पटेल ने लवलेश कुमार कुशवाहा के साथ प्रेम विवाह किया था लेकिन बाद में वीरेंद्र ने खुशबू पटेल से रिश्ता तोड़ दिया इस बात को लेकर दोनों के बीच विवाद रहने लगा बीती रात नवजात के जन्म होने के बाद संदिग्ध परिस्थितियों में उसकी मौत हो गई है जिस पर खुशबू पटेल की मां मंजू देवी ने कोखराज पुलिस को सूचना देकर मामले में मुकदमा दर्ज कराया है पुलिस ने नवजात के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है खुशबू की माँ का कहना है कि लवलेश ने खुशबू को शादी का झांसा देकर उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए है।

सम्पादकीय

रोजगार का संकट, 7 साल में सालाना सिर्फ 10 लाख नौकरियों के अवसर ही बन पाए

भारतीय अर्थव्यवस्था साल 2017-18 से ही स्लोडाउन का शिकार रही है। लगातार तीन सालों तक जीडीपी की रफ्तार कम होती रही और फिर पिछले साल की भयंकर गिरावट। ऐसे में स्वाभाविक ही मन में सवाल उठता है कि आखिर हमारे जॉब मार्केट का क्या हाल है। सरकारी रिपोर्ट से कुछ हद तक इसका जवाब मिलता है, लेकिन इसमें कई सारे गैप हैं। केंद्रीय श्रम मंत्रालय की ओर से इसी सप्ताह जारी तिमाही रोजगार सर्वे की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, वित्त वर्ष 2021-22 की पहली तिमाही (अप्रैल से जून 2021) में चुनिंदा नौ गैरकृषि क्षेत्रों में रोजगार 29 फीसदी बढ़कर 3.08 करोड़ हो गया। पहली नजर में प्रभावी लगने वाले इस आंकड़े की चमक थोड़ी कम तब पड़ती है, जब स्पष्ट होता है कि यह संख्या 2013-14 के आर्थिक सेंसस के दौरान दिए गए आंकड़ों की तुलना में है। तब रोजगार की संख्या 2.37 करोड़ दर्ज हुई थी। यानी अगर आंकड़ों द्वारा बताई जा रही सचाई पर गौर करें तो सटीक निष्कर्ष यह नहीं है कि रोजगार में 29 फीसदी बढ़ोतरी हुई है। उपयुक्त निष्कर्ष यह होगा कि इन सात वर्षों के दौरान सालाना दस लाख रोजगार ही सृजित किए जा सके। वैसे भी भारतीय अर्थव्यवस्था साल 2017-18 से ही स्लोडाउन का शिकार रही है। लगातार तीन सालों तक जीडीपी की रफ्तार कम होती रही और फिर पिछले साल की भयंकर गिरावट। ऐसे में स्वाभाविक ही मन में सवाल उठता है कि आखिर हमारे जॉब मार्केट का क्या हाल है। सरकारी रिपोर्ट से कुछ हद तक इसका जवाब मिलता है, लेकिन इसमें कई सारे गैप हैं। सो इस मांग आधारित अनुमान को केंद्र सरकार के हाउसहोल्ड सर्वे पर आधारित लेबर सप्लाई के अनुमान से मिलाते हैं और तब तस्वीर गैर कृषि रोजगार की किल्लत की उभरती है। पीरियॉडिक लेबर फोर्स सर्वे (पीएलएफएस) की सालाना और तिमाही दोनों रिपोर्टों से जॉब की क्वॉलिटी में गिरावट की पुष्टि होती है। हालांकि कायदे से डिमांड और सप्लाई साइड के अनुमानों की आपस में तुलना नहीं होनी चाहिए क्योंकि इनकी अवधि अलग-अलग हैं, लेकिन फिर भी इनसे यह अंदाजा मिल जाता है कि रोजगार के मोर्चे पर क्या सीन है।

पीएलएफएस की सालाना रिपोर्ट (जुलाई 2019 से जून 2020) दर्शाती है कि 2018 से रोजगार के पैटर्न में कृषि और अनौपचारिक क्षेत्रों की ओर झुकाव आया है। पीएलएफएस की तिमाही रिपोर्टों में सिर्फ शहरी ट्रेंड कवर किए जाते हैं। ताजा रिपोर्ट (अक्टूबर से दिसंबर 2020) इस बात की पुष्टि करती है कि निश्चित वेतन वाले जॉब में कमी आई है। अक्टूबर से दिसंबर 2020 की अवधि में सैलरीड जॉब 48.7 फीसदी दर्ज की गई, जो सख्त लॉकडाउन वाली अप्रैल से जून 2020 की अवधि के 52.7 फीसदी से कम थी। अक्टूबर से दिसंबर 2020 के बीच बेरोजगारी दर भी 10.3 फीसदी थी, जो 2019 की उसी अवधि (7.9 फीसदी) के मुकाबले कहीं ऊंची थी। इन सबसे स्पष्ट है कि भारत में रोजगार का संकट है। इसके मद्देनजर पहली जरूरत यह है कि सारे डेटा नियमित रूप से जारी किए जाएं। इनके बगैर नीतियां बनाना अंधेरे में तीर मारने जैसा हो जाता है। दूसरी बात यह कि हमें कहीं ज्यादा बड़े इंडस्ट्रियल मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर की जरूरत है। सरकार इस दूसरी बात को स्वीकार करती है। उसे पहली आवश्यकता को भी स्वीकार करना चाहिए।

कांग्रेस हाईकमान को पंजाब में नवजोत सिंह सिद्धू की इतनी ही जरूरत थी

अशोक मधुप

ऐसे में नवजोत सिंह सिद्धू ने अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देकर सभी को हैरान कर दिया। सिद्धू इस पद पर पांच हफ्ते से भी कम समय के लिए रहे। कैप्टन अमरिंदर सिंह के सीएम पद पर रहते सिद्धू और उनके बीच लंबे समय तक तकरार की स्थिति बनी रही।पंजाब कांग्रेस में चल रही नौटंकी जनता का मनोरंजन तो खूब कर रही है किंतु कांग्रेस को तो नुकसान हो ही रहा है। राजनैतिक अखाड़े में पंजाब कांग्रेस अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू ने कुश्ती से पहले ही पार्टी के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह को किनारे लगा दिया। अब खुद अकड़ दिखाकर अखाड़े से बाहर आ गए। कांग्रेस पजांब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह से नाराज थी। पिछले चुनाव से लेकर यह चल रहा है। इस दौरान उनके केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह से भेंट करने की खबर आते ही कांग्रेस ने उन्हें किनारे करने की सोच ली थी। इसके लिए उन्होंने नवजोत सिंह सिद्धू को इस्तमाल किया। उन्हें कांग्रेस का प्रदेश अध्यक्ष बनाकर पंजाब कांग्रेस को मजबूत करने का नहीं बल्कि मुखयमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह को आउट करने की ठान ली थी। इसके लिए सिद्धू को बढ़ाया गया। जब अमरिंदर सिंह आउट हो गए तो सिद्धू के पर कतरने शुरू कर दिये गए।ऐसे में नवजोत सिंह सिद्धू ने अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देकर सभी को हैरान कर दिया। सिद्धू इस पद पर पांच हफ्ते से भी कम समय के लिए रहे। कैप्टन अमरिंदर सिंह के सीएम पद पर रहते सिद्धू और उनके बीच लंबे समय तक तकरार की स्थिति बनी रही। पहले अमरिंदर सिंह ने सीएम के पद से इस्तीफा दिया और अब सिद्धू ने पंजाब कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया। सिद्धू ने इस पद से इस्तीफा क्यों दिया? इसे लेकर अलग-अलग कयास लगाए जा रहे हैं। उनके त्यागपत्र का सबसे बड़ा कारण मंत्रिमंडल में अपनी पसंद के लोगों को जगह न दिया जाना माना जा रहा है।

कांग्रेस हाईकमान को सिद्धू के तेवर केंद्रीय नेतृत्व को कैप्टन की मुखालफत तक तो अच्छे लगे लेकिन जब यही तेवर सिद्धू आलाकमान को दिखाने लगे तो उन्हें झटका दिया गया। उन्हें मुख्यमंत्री बनने से दूर रखा गया। मंत्रिमंडल में उनकी पसंद को नजर अंदाज किया गया। तुनक मिजाज सिद्धू के लिए ये असहाय था। उन्होंने अध्यक्ष पद से त्याग दे दिया। हालांकि कांग्रेस हाईकमान ने उनका इस्तीफा स्वीकृत नहीं किया। कहा कि बैठकर मामला निपटाएं। पर मामला निपटेगा, ऐसा लगता नहीं। कांग्रेस हाईकमान नहीं चाहेगी कि पंजाब में कोई नया कैप्टन अमरिंदर सिंह पैदा हो और कैप्टन अमरिंदर की तरह बार-बार आंखें दिखाए। प्रदेशों में कांग्रेस हाईकमान को उसकी हां में हां मिलाने वाले चेहरे चाहिए। वह चेहरा उसे चरणजीत सिंह चनने के रूप में मिल चुका है। केंद्रीय नेतृत्व नवजोत सिंह सिद्धू का इस्तेमाल करने में सफल रहा है। इतनी ही उसकी जरूरत भी थी। कांग्रेस हाईकमान जानता था कि कैप्टन अमरिंदर सिंह को पंजाब में नवजोत सिंह सिद्धू ही किनारे लगा सकते हैं। इससे पहले हाईकमान ने सुनील जाखड़ को ताकत दी। जाखड़ भी कैप्टन के हाथों में खेलकर रह गए। प्रताप सिंह बाजवा को भी हाईकमान ने अवसर दिया लेकिन कांग्रेस विधायकों ने उनका साथ नहीं दिया। अब कांग्रेस हाईकमान ने सिद्धू का प्रयोग किया। कैप्टन को किनारे लगाने के बाद सिद्धू ने मुख्यमंत्री बनने के लिए भागदौड़ तो खूब की, पर कांग्रेस ने उन्हें तवज्जो नहीं दी। सिद्धू मुख्यमंत्री न बनने के वक्त की नजाकत समझ जाते तो उन्हें इतना अपमानित न होना पड़ता। पंजाब में चल रही सियासी उठापटक के बीच आलाकमान पर दबाव डालने का प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू का यह आखिरी पैंतरा है। पार्टी प्रधान पद से इस्तीफा देने के बाद सिद्धू के पास दबाव बनाने का और कोई पैंतरा नहीं बचेगा। कांग्रेस कैप्टन अमरिंदर सिंह को किनारे करने में सिद्धू का जितना उपयोग किया जा सकता था, वह हो चुका है। अब वह भी नया कैप्टन अमरिंदर सिंह बनने वालों की लाइन में हैं। पंजाब के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चनने को पूरे अधिकार देकर कांग्रेस हाईकमान उनके नेतृत्व में ही वहां चुनाव कराना चाहता है। कांग्रेस हाईकमान जान गया है कि जैसे कैप्टन को संतुष्ट करना संभव नहीं था, ऐसे ही सिद्धू को संतुष्ट करना संभव नहीं है।

जातियों की साधना में सियासी लामबंदी

प्रभुनाथ शुक्ल

उत्तर प्रदेश की राजनीति में एक जुमला खूब चलता है कहते हैं 'दिल्ली का रास्ता उत्तर प्रदेश से गुजरता है'। देश के सबसे बड़े राज्य में विधानसभा चुनाव होने हैं। नतीजा राज्य की सियासत गर्म हो गई है। राजनीतिक दल और सरकारें अपने विकास को भूल कर जातिवाद का भजन करने लगी हैं। अभी तक जो सरकार विकास की उपलब्धियां गिनाते नहीं थकती थी वह जाति पर आकर अटक गई है। राज्य विधानसभा का चुनाव पूरी तरह जातिवाद पर लड़ा जाएगा। विकास सिर्फ मंचीय होगा। सत्ता में मौजूद योगी सरकार को अपने विकास पर भरोसा नहीं है। चुनाव की गोंट फीट करने के लिए जातियों पर दांव लगाया जा रहा। राज्य के मंत्रिमंडल विस्तार में यह बात साफ हो गयी है। राज्य की सत्ता में दोबारा वापसी के लिए भारतीय जनता पार्टी जहां ओबीसी पर अपनी निगाहें गड़ाए है। वहीं समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी ब्राह्मणों का गुणगान करने में लगी हैं। बहुजन समाज पार्टी जगह-जगह ब्राह्मण सम्मेलन आयोजित कर ब्राह्मणों को अपने पाले में करना चाहती है। क्योंकि 2007 में मायावती के सत्ता वापसी के मूल में ब्राह्मण ही था। बसपा राज्य में दलित उत्पीड़न के फर्जी मुकदमों से परेशान होकर अगड़ी जातियां समाजवादी पार्टी के पाले में चली गयीं जिसके बाद अखिलेश यादव की सरकार बनी।अखिलेश यादव सत्ता में दोबारा वापसी के लिए ब्राह्मणों को सिर आंखों पर बिठना चाहते हैं। वह अपनी जनसभाओं में परशुराम का मंदिर बनवाने की बात करते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के गृह राज्य गुजरात में भी रूपाणी युग के अंत के बाद पटेलों पर अधिक भरोसा जताया गया है। यहां भी विकास पर भरोसा कम जातियों पर अधिक दांव लगा है। यहाँ भी आम चुनाव होने हैं। सरकार में पटेल जातियों से सबसे अधिक मंत्रियों को तवज्जो दी गई है। पंजाब में चरणजीत चन्नी को मुख्यमंत्री बनाकर दलितों को साधने की कोशिश यह बताती है कि राजनीतिक दलों को अपने काम पर कम जातियों पर अधिक भरोसा है।उत्तर प्रदेश, पंजाब, गुजरात और दूसरे राज्यों का चुनाव करीब होने से राजनीतिक हलकों में जातिगत जनगणना का मुद्दा खूब चल रहा है। पिछड़े वर्ग के राजनेता दलीय प्रतिबद्धता को ताक पर रखकर जातिय जनगणना का राग अलाप रहे हैं लेकिन केंद्र सरकार तैयार नहीं दिखती है।यूपी की योगी सरकार सबसे अधिक दांव पिछड़ों पर लगा रहीं है। अगड़ी जातियों को लेकर वह अधिक संवेदनशील नहीं दिखती है। क्योंकि उसे मालूम है कि राज्य की अगड़ी जातियां भाजपा छोड़कर अन्यत्र नहीं जानेवाली हैं। लेकिन अगड़ी जातियों में नाराजगी से इनकार नहीं किया जा सकता है। आरक्षण और पिछड़ों को अधिक सम्मान वह कितना पचा पाएगा यह वक्त बताएगा। मंत्रिमंडल विस्तार में पूर्वांचल और पश्चिमी यूपी को साधने की पूरी कोशिश की गई है। ओबीसी और दलित चेहरों को शामिल किया गया है। जितिन प्रसाद एक मात्र चेहरे हैं जिन्हे कैबिनेट मंत्री बनाया गया है। मंत्रिमंडल विस्तार में जिन लोगों को राज्यमंत्री बनाया गया है उनकी कोई विशेष राजनीतिक पृष्ठभूमि नहीं दिखती है। जितिन प्रसाद को छोड़ बाकि ऐसे चेहरे हैं जो चुनावी गणित साधने के लिए पहली बार मंत्री बनाए गए हैं।

उत्तर प्रदेश में मंत्रिमंडल विस्तार सिर्फ जातिय गणित साधने की कोशिश है। क्योंकि चुनाव में अब बहुत अधिक वक्त नहीं रह गया है। नए चेहरों के पास अभी सरकार और मंत्रालय संभालने का कोई अनुभव नहीं है। इसलिए विकास में इनकी कोई भूमिका नहीं हो सकती है। अब जातियों को साधने में नए मंत्री कितना कामयाब होंगे यह तो भविष्य बताएगा।जितिन प्रसाद ही सिर्फ ऐसे राजनेता है जो हैसियत वाले हैं। राजनीति का उन्हें अच्छा-खासा अनुभव है। वह कांग्रेस संस्कृत के राजनेता रहे हैं हाल में पार्टी को छोड़कर वह भाजपा में आए हैं। उनके पिता भी कांग्रेस में केंद्रीय मंत्री थे। प्रसाद का पश्चिमी यूपी के रुहेलखंड में अपना आधिपत्य है। 2004 में शाहजहांपुर से वह पहली बार सांसद बने। 2009 में वह धौराहरा संसदीय सीट से सांसद चुने गए। 2008 में कांग्रेस सरकार में इस्पात मंत्री बनाए गए। जितिन प्रसाद सोनिया गांधी के खिलाफ पार्टी अध्यक्ष का चुनाव भी लड़ा था। अब देखना होगा कि प्रसाद राज्य के ब्राह्मणों को चुनावी नजरिए से साधने में कितने सफल होते हैं।

उत्तर प्रदेश में हुए मंत्रिमंडल विस्तार में कुल सात लोगों को शामिल किया गया है। जिसमें जितिन प्रसाद के साथ पूर्वांचल के गाजीपुर से संगीता बिंद, सोनभद्र से संजय गोंड को मंत्रिमंडल विस्तार में शामिल किया गया है। निषाद और दलित जातियों को साधने के लिए इन लोगों को मंत्री बनाया गया है। जबकि पश्चिमी यूपी से सबसे अधिक पांच चेहरों को शामिल किया गया है। इसमें प्रमुख रूप से जितिन प्रसाद को कैबिनेट मंत्री बताएगा बनाया गया है। आगरा से धर्मवीर प्रजापति, बलरामपुर से पलटूराम, बरेली से छत्रपाल गंगवार, मेरठ से दिनेश खटीक को शामिल किया गया है। पश्चिमी यूपी में किसान आंदोलन को देखते हुए मंत्रिमंडल विस्तार काफी अहम माना जा रहा है। यही कारण है कि पश्चिमी से सबसे अधिक चेहरों को जगह मिली है। उत्तर प्रदेश में पिछड़े वर्ग के मतदाताओं की संख्या सबसे अधिक तकरीबन 40 फीसदी है। सवर्ण जातियां 20 फीसदी के आसपास हैं। राज्य में ब्राम्हण 10 से 12 फीसदी है। यादव 12 फ़ीसदी जबकि कुर्मी और अन्य पिछड़ी जातियां 8 फीसदी के करीब हैं। जाट और मल्लाह 5 फीसदी हैं। 18 फिसदी मुस्लिम और 25 फीसदी के आसपास दलित जातियां हैं। 2017 के राज्य विधानसभा चुनाव में भाजपा को पिछड़े वर्गों का अधिक समर्थन मिला था। राज्य में यादव समाजवादी पार्टी का जबकि दलित बहुजन समाज पार्टी का परम्परागत वोटर रहा है। राज्य सरकार पिछड़ी और दलितों में जो उपजातियां हैं उन्हें अपने पाले में लाने की भरपूर कोशिश कर रही है। लेकिन डीजल-पेट्रोल, रसोई गैस और खाद्य तेलों की बढ़ती कीमतें से आम लोग परेशान हैं बेगारी भी अहम मुद्दा है।योगी सरकार दोबारा सत्ता में वापसी के लिए हर कदम उठा रहीं है। राज्य में निषाद और बिंद जातियों को पाले में करने के लिए निषाद पार्टी के साथ विधानसभा चुनाव लड़ने का फैसला किया है। निषाद पार्टी के संजय निषाद इसकी घोषणा कर चुके हैं। पूर्वांचल में पटेल और कुर्मी जातियों पर अच्छी पकड़ होने की वजह अनुप्रिया पटेल को केंद्र सरकार में मंत्री बनाया गया। उधर असदुद्दीन ओवैसी मुस्लिम मतों के ध्रुवीकरण करने में जोर-शोर से लगे हैं। अगर वह कामयाब होते हैं तो इसका सीधा फायदा भारतीय जनता पार्टी को मिल सकता है। हालांकि मुसलमान बेहद चालाक है। क्योंकि वह भाजपा को रोकने के लिए पूरी कोशिश करता है। इस लिहाज से वह ओवैसी के साथ कितना खड़ा होगा अभी यह कहना मुश्किल है। प्रियंका गांधी राज्य में कांग्रेस की नयी जमींन तैयार करने में लगी हैं। कांग्रेस जितनी मजबूती से लड़ेगी उतना सपा और बसपा कजोर होगी। फिलहाल यह कहना गलत नहीं होगा कि राज्य में चुनावी गणित बैठाने के लिए राजनीतिक दलों के लिए जातियां अहम हो गई हैं। सभी दल जातिय ढपली बजाने में जुट गए हैं।

राजा महेंद्र प्रताप सिंह जैसी शख्सियतों के जीवन से जुड़ी बड़ी बातें नई पीढ़ी को बताई जानी चाहिए

डॉ. नीलम महेंद्र

दरअसल हमें यह समझना चाहिए कि भारत को गुलामी की जंजीरों से आज़ाद कराने के लिए किसी ने बंदूक उठाई तो किसी ने कलम। किसी ने अहिंसा की बात की तो किसी ने सशस्त्र सेना बनाई। स्वतंत्रता प्राप्ति का यह संघर्ष विभिन्न विचारधाराओं वाले व्यक्तियों का एक सामूहिक प्रयास था।2021 में भारत को स्वराज प्राप्त हुए 74 वर्ष पूर्ण हुए और हम स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। इस अवसर पर देश स्वाधीनता का अमृत महोत्सव मना रहा है। ऐसे समय में प्रधानमंत्री उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में राजा महेंद्र प्रताप सिंह राजकीय विश्वविद्यालय की आधारशिला रखते हैं। भारत जैसा देश जो वोटबैंक की राजनीति से चलता है वहाँ प्रधानमंत्री के इस कदम को उत्तर प्रदेश के आगामी विधानसभा चुनावों से प्रेरित बताया जा रहा है। बहरहाल कारण जो भी हो लेकिन कार्य निर्विवाद रूप से सराहनीय है। क्योंकि हमने यह आज़ादी बहुत त्याग और अनगिनत बलिदानों से हासिल की है। न जाने कितने वीरों ने अपनी जवानी अपनी मातृभूमि के नाम कर दी। न जाने कितनी माताओं ने अपने पुत्रों को अपने ऋण से मुक्त कर के मातृभूमि के ऋण को चुकाने के लिए उनके मस्तक पर तिलक लगाकर फिर कभी न लौटकर आने के लिए भेज दिया। न जाने कितनी सुहागिनों ने क्षत्राणियों का रूप धरकर हंसते हंसते अपने सुहाग को भारत माता को सौंप दिया।

स्वाधीनता के उस यज्ञ को न जाने कितने चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सुखदेव, लाला लाजपत राय ने अपने प्राणों की आहुति से प्रज्ज्वलित किया। लेकिन जब 15 अगस्त 1947 में वो ऐतिहासिक क्षण आया तो ऐसे अनेकों नाम मात्र कुछ एक नामों के आभामंडल में कहीं पीछे छुप गए या छुपा दिए गए। इतिहास रचने वाले ऐसे कितने नाम खुद इतिहास बनने की बजाए मात्र किस्से बनकर रह गए। राजा महेंद्र प्रताप सिंह ऐसा ही एक नाम है। लेकिन अब राजा महेंद्र प्रताप सिंह के नाम पर एक विश्वविद्यालय बनाने की पहल ने सिर्फ आज़ादी के इन मतवालों के परिवार वालों के दिल में ही नहीं बल्कि देश भर में एक उम्मीद जगाई है कि उन सभी नामों को भारत के इतिहास में वो सम्मानित स्थान दिया जाएगा जिसके वो हकदार हैं। कहते हैं कि किसी भी देश का इतिहास उसका गौरव होता है। हमारा इतिहास ऐसे अनगिनत लोगों के उल्लेख के बिना अधूरा है जिन्होंने आज़ादी के समर में अपना योगदान दिया। राजा महेंद्र प्रताप सिंह ऐसा ही एक नाम है जिनके मन में बहुत ही कम आयु में देश को आज़ाद कराने की अलख जल उठी थी। मात्र 27 वर्ष की आयु में वे दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी के अभियान में उनके साथ थे। और 29 वर्ष की आयु में अफगानिस्तान में भारत की अंतरिम सरकार बनाकर स्वयं को उसका राष्ट्रपति घोषित कर चुके थे। अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ उन्हें बड़ा खतरा मानते हुए तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने उन्हें देश से निर्वासित कर दिया था और वे 31 साल 8 महीनों तक दुनिया के विभिन्न देशों में भटकते रहे। इस दौरान वे विभिन्न देशों की सरकारों से भारत की आज़ादी के लिए समर्थन जुटाने के कूटनीतिक प्रयास करते रहे। राजा महेंद्र प्रताप उन सौभाग्यशालियों में से एक थे जो स्वतंत्र भारत की संसद तक भी पहुंचे थे। 1957 में वे मथुरा से निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी के खिलाफ चुनाव में खड़े भी हुए थे और जीते भी थे।दरअसल राजा महेंद्र प्रताप सिंह के व्यक्तित्व के कई आयाम थे। वे स्वतंत्रता सेनानी, पत्रकार, लेखक, शिक्षाविद, क्रांतिकारी, समाज सुधारक और दानवीर भी थे। जब भारत आज़ादी के लिए संघर्ष कर रहा था तो ये केवल भारत की आज़ादी के बारे में ही नहीं सोच रहे थे बल्कि वे विश्व शांति के लिए प्रयासरत थे। उन्होंने ठसंसार संघठ की परिकल्पना करके भारत की संस्कृति का मूल वसुधैव कुटुंबकम को साकार करने की पहल की थी। इनकी शख्सियत की विशालता का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि वे देश को केवल अंग्रेजों ही नहीं बल्कि समाज में मौजूद कुरीतियों से भी आज़ाद कराने की इच्छा रखते थे। इसके लिए उन्होंने छुआछूत के खिलाफ भी अभियान चलाया था। अनुसूचित जाति के लोगों के साथ भोजन करके उन्होंने स्वयं लोगों के सामने उदाहरण प्रस्तुत करके उन्हें जातपात से विमुख होने के लिए प्रेरित किया। समाज से इस बुराई को दूर करने के लिए वो कितने संकल्पबद्ध थे इसका अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने सबको एक करने के उद्देश्य से एक नया धर्म ही बना लिया था ठप्रेम धर्मठ।

वे जानते थे कि समाज में बदलाव तभी आएगा जब लोग शिक्षित होंगे। तो इसके लिए उन्होंने सिर्फ अपनी संपत्ति ही दान में नहीं दी बल्कि वृंदावन में तकनीक महाविद्यालय की भी स्थापना की। इनके कार्यों से देश की वर्तमान पीढ़ी भले ही अनजान है लेकिन वैश्विक परिदृश्य में उनके कार्यों को सराहा गया, यही कारण है कि 1932 में उन्हें नोबल पुरस्कार के लिए भी नामित किया गया था। लेकिन इसे क्या कहा जाए कि देश को पराधीनता की जंजीरों से निकाल कर स्वाधीन बनाने वाले ऐसे मतवालों पर 1971 में देश की एक प्रतिष्ठित अंग्रेजी पत्रिका ठद टेररिस्ट्सठ यानी ठवो आतंकवादीठ नाम की एक श्रृंखला निकलती है। जाहिर है राजा महेंद्र प्रताप जो कि तब जीवित थे उस पत्रिका के संपादक को पत्र लिखकर आपत्ति जताते हैं। दरअसल हमें यह समझना चाहिए कि भारत को गुलामी की जंजीरों से आज़ाद कराने के लिए किसी ने बंदूक उठाई तो किसी ने कलम। किसी ने अहिंसा की बात की तो किसी ने सशस्त्र सेना बनाई। स्वतंत्रता प्राप्ति का यह संघर्ष विभिन्न विचारधाराओं वाले व्यक्तियों का एक सामूहिक प्रयास था। उनके विचार अलग थे जिसके कारण उनके मार्ग भिन्न थे लेकिन मंजिल तो सभी की एक ही थी ठदेश की आज़ादीठ। अलग-अलग रास्तों पर चलकर भारत को आज़ादी दिलाने में अपना योगदान देने वाले ऐसे कितने ही वीरों के बलिदानों की दास्तान से देश अनजान है। राजा महेंद्र प्रताप के नाम पर विश्वविद्यालय बनाने के कदम से ऐसे ही एक गुमनाम नाम को पहचान दी है। उम्मीद है कि इस दिशा में यह सरकार का पहला कदम होगा आखरी नहीं क्योंकि अभी ऐसे कई नाम हैं जिनके त्याग और बलिदान की कहानी जब गुमनामी के अंधकार से बाहर निकल कर आएगी तो इस देश की भावी पीढ़ी को देश हित में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित करेगी।

पश्चिम और दक्षिण भारत के राज्यों में उच्च प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय

डॉ. हनुमन्त यादव

भारत की छठवीं पंचवर्षीय योजना के समाप्त होने पर भी भारत के सभी सामान्य राज्यों में इन राज्यों द्वारा निचली पायदान पर कायम रहने के कारण प्रो. राजकृष्णा ने अपने आलेख में इन राज्यों को बीमारू राज्य शब्द से इंगित किया था। बिहार, मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश के विभाजन के बावजूद बिहार के साथ झारखंड तथा मध्यप्रदेश के साथ छत्तीसगढ़ भी निम्न प्रति व्यक्ति आमदनी वाले राज्यों में बने हुए हैं और आगे भी बने रहने की संभावना है। भारत सरकार के सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित राज्यों की घरेलू उत्पाद के 11 अगस्त 2021 को संशोधित जारी आंकड़ों के अनुसार विभिन्न राज्यों की दर्शाई गई स्थिति के संदर्भ पर यहां चर्चा की जाएगी। चर्चा के लिए भारत के राज्यों को तीन भागों में विभाजित किया गया है : पहला सामान्य राज्य, दूसरा, उत्तर-पूर्व के जनजाति बहुल राज्य और तीसरा, दिल्ली और चंडीगढ़ जैसे केन्द्र शासित राज्य। भारत के सामान्य राज्यों की संख्या 21 है। सबसे पहले राज्य के सकल घरेलू उत्पाद तथा इसके बाद राज्यों की प्रति व्यक्ति आय के बारे में चर्चा की जाएगी। राज्य की निवल घरेलू उत्पाद को जनसंख्या से भाग देने पर प्रति व्यक्ति आय प्राप्त की जाती है।राज्यों में सबसे अधिक सकल घरेलू उत्पाद महाराष्ट्र राज्य का 26.61 लाख करोड़ रुपये है जो 370 बिलियन डॉलर के समकक्ष है सकल घरेलू उत्पाद में दूसरा, तमिलनाडु 20.92 लाख करोड़ रुपये, तीसरा, उत्तरप्रदेश 17.05 लाख करोड़ रुपये, चौथा, पश्चिम बंगाल 16.69 लाख करोड़ रुपये, पांचवा, गुजरात 16.48 लाख करोड़ रुपये, छठवां, कर्नाटक 16.29 लाख करोड़ रुपये, सातवां, राजस्थान 10.21 लाख करोड़ रुपये, आठवां, आन्ध्रप्रदेश 9.78 लाख करोड़ रुपये, नौवां, तेलंगाना 9.69 लाख करोड़ रुपये तथा दसवां मध्यप्रदेश 9.09 लाख करोड़ रुपये है। नीची सकल घरेलू उत्पाद राज्यों में हिमाचल प्रदेश 1.56 लाख करोड रुपये तथा गोवा 0.82 लाख करोड़ रुपये है। उत्तर-पूर्व के आदिवासी बहुल राज्यों में सभी का सकल घरेलू उत्पाद 0.60 लाख करोड़ रुपये से नीचा है। दिल्ली राज्य का सकल घरेलू उत्पाद 7.98 लाख करोड़ रुपये और चंडीगढ़ का 0.42 लाख करोड़ रुपये है। भारत की प्रति व्यक्ति निवल घरेलू उत्पाद अर्थात प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय 1,63,080 रुपये है, जो 2191 यूएस डॉलर के बराबर है। यह आय पिछले वर्ष की तुलना में अधिक है। इस प्रकार कोरोना महामारी प्रसार के बावजूद भारत की प्रति व्यक्ति आय अधिक रही है। भारत के 21 सामान्य राज्यों में सबसं अधिक प्रति व्यक्ति आय वाले 5 राज्य हैं : गोवा, हरियाणा, तेलंगाना, कर्नाटक और तमिलनाडु। गोवा की प्रति व्यक्ति आय 4,35,960 रुपये है जो 7032 यूएस डॉलर के समकक्ष है और प्रति व्यक्ति आय में ब्राजील की प्रति व्यक्ति आय के बराबर है। प्रति व्यक्ति आय में दूसरे स्थान पर हरियाणा है, जिसकी प्रति व्यक्ति आय 2,39,535 रुपये है जो 3,764 यूएस डॉलर के समकक्ष है। तेलंगाना की प्रति व्यक्ति आय 2,26,632 रुपये 3368 यूएस डॉलर के समकक्ष है। कर्नाटक की प्रति व्यक्ति आय 2,26,796 रुपये है, जो 3358 यूएस डॉलर के मूल्य के बराबर है। तमिलनाडु राज्य की प्रति व्यक्ति आय 2,25,106 रुपये है, जो 3600 यूएस डॉलर के समकक्ष है। प्रति व्यक्ति आय में भारत के राज्यों में छठवें स्थान पर केरल है। केरल के बाद क्रमशः गुजरात, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, आंध्रप्रदेश, और पंजाब राज्य हैं, इन सभी राज्यों की प्रति व्यक्ति भारत की प्रति व्यक्ति आय 1,63,080 रुपये से अधिक है। प्रति व्यक्ति आय में केरल 2,21,904 रुपये, गुजरात 2,13,936 रुपये, उत्तराखंड 2,02,895 रुपये, और महाराष्ट्र 2,02,130 रुपये है। 2 लाख रुपये से नीची एवं 1 लाख रुपये से अधिक प्रति व्यक्ति के राज्य ये हैं, इनकी प्रति व्यक्ति आय इस प्रकार है- हिमाचल प्रदेश 1,93,286 रुपये, आंध्रप्रदेश 1,70,215 रुपये, पंजाब 1,71,359 रुपये। भारत की प्रति व्यक्ति आय से नीची आय वाले राज्य इस प्रकार हैं - पश्चिम बंगाल 1,21,267 रुपये, राजस्थान 1,09,886 रुपये, ओडिशा 1,09,330 रुपये और छत्तीसगढ़ 1,04,493 रुपये है। 1 लाख रुपये से नीची प्रति व्यक्ति आय वाले 5 राज्य इस प्रकार हैं - मध्यप्रदेश 98,418 रुपये, असम 86,801 रुपये, झारखंड 75,587 रुपये, और उत्तरप्रदेश 62,652 रुपये है।

बिहार राज्य की प्रति व्यक्ति आय सभी राज्यों में सबसे नीची 46,292 रुपये है। इस प्रकार भारत में राज्यों की प्रति व्यक्ति आय में शीर्ष पर गोवा है और सबसे नीचे बिहार है। पश्चिम भारत और दक्षिण भारत के सभी राज्यों की प्रति व्यक्ति आय भारत की प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय 1,63,080 रुपये से अधिक है। पूर्वी भारत और मध्यभारत के राज्यों की प्रति व्यक्ति आय सबसे नीची है। उत्तर-पूर्व के राज्यों में सिक्किम की संस्कृति की भूटान के समान सनातन मानी जाती है और राज्य की प्रति व्यक्ति आय को गोवा के समान इन राज्यों में शीर्ष पर है। सिक्किम की प्रति व्यक्ति आय 4,24,454 रुपये है जो 6545 यूएस डॉलर के बराबर होती है। उत्तरपूर्व के जनजाति बहुल राज्यों में मिजोरम की प्रति व्यक्ति आय 1,87,327 रुपये, अरुणांचल प्रदेश 1,69,742 रुपये , त्रिपुरा 1,29,995 रुपये, नागालैंड 1,20,518 रुपये, मेघालय 82,182 रुपये और मणिपुर 84,746 रुपये है। राज्यों के तीसरे वर्ग में देश की राजधानी दिल्ली सबसे बेहतर स्थिति में है। दिल्ली की प्रति व्यक्ति आय 3,54,004 रुपए है। चंडीगढ़ की प्रति व्यक्ति आय 3,30,015 और पुडुचेरी की प्रति व्यक्ति आय 2,21,467 रुपए है। 2019-20 की तुलना में 2020-21 वर्ष में कोरोना के प्रभाव के कारण औद्योगिक उत्पादन में कमी आने के कारण हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, ओडिशा, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, झारखंड और उत्तरप्रदेश में प्रति व्यक्ति आय में कमी आई है। दूसरी ओर कोरोना संक्रमण के होते हुए भी तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल और बिहार राज्यों में प्रति व्यक्ति आय पिछले वर्ष की तुलना में चालू वर्ष में अधिक रही है। वर्ष 2021-22 में कोरोना के प्रकोप में कमी आने के कारण औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र के उत्पादन में तेजी आने के कारण सभी राज्यों के सकल घरेलू उत्पाद बढ़ने से राज्यों के प्रति व्यक्ति आय बढ़ने की संभावना है। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि पश्चिम भारत और दक्षिण भारत के राज्य उच्च प्रति व्यक्ति आय वाले राज्यों के रूप में दशकों से बने हुए हैं और आगे भी उनके इस श्रेणी में बने रहने की संभावना है। दूसरी ओर बिहार, मध्यप्रदेश, असम, राजस्थान, ओडिशा, उत्तरप्रदेश ये राज्य 40 साल की विकास योजनाओं के बावजूद निम्न प्रति व्यक्ति वाले राज्य बने हुए हैं।

शान से प्लेआफ में पहुंची सीएसके, धोनी ने छक्का लगाकर टीम को दिलाई जीत

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग के 44वें मैच में चेनर्ई सुपर किंग्स का सामना सनराइजर्स हैदराबाद के साथ हुआ। इस मुकाबले में सीएसके टीम के कप्तान एम एस धौनी ने टास जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। पहली पारी में हैदराबाद की टीम ने 20 ओवर में 7 विकेट पर 134 रन बनाए और सीएसके टीम को जीत के लिए 135 रन का टारगेट मिला।

जीत के लिए मिले लक्ष्य को सीएसके ने 6 विकेट शेष रहते हासिल कर लिया मैच में जीत दर्ज की। इस टीम ने 19.4 ओवर में 4 विकेट पर 139 रन बनाए और मैच में जीत हासिल की। इस जीत के साथ सीएसके आइपीएल 2021 के प्लेआफ में पहुंचने वाली पहली टीम भी बनी। सीएसके के अब कुल 18 अंक हैं और अंक तालिका में ये टीम पहले नंबर पर है तो वहीं हैदराबाद की टीम इस हार के बाद 4 अंक के साथ आखिरी पायदान पर है और इस टीम के प्लेआफ में पहुंचने की उम्मीद लगभग खत्म हो चुकी है। पिछले साल जहां सीएसके प्लेआफ में भी नहीं पहुंच पाई थी तो वहीं

इस सीजन में ये टीम सबसे पहले टाप चार में पहुंची।

रितुराज गायकवाड़ ने डुप्लेसिस के साथ मिलकर टीम को अच्छी शुरुआत देते हुए पहले विकेट के लिए 75 रन की साझेदारी की। इस पार्टनरशिप को जेसन होल्डर ने रितुराज को 45 रन पर आउट करके तोड़ दिया। डुप्लेसिस ने भी 41 रन की पारी खेली और उन्हें भी होल्डर ने आउट कर दिया। मोइन अली 17 रन बनाकर राशिद खान की गेंद पर बोल्ड हो गए तो वहीं सुरेश रैना सिर्फ 2 रन पर होल्डर की गेंद पर पगबाधा आउट हुए। अंबाती रायुडू 17 रन जबकि धौनी 14 रन बनाकर नाबाद रहे। हैदराबाद के लिए पिछले मैच में अर्धशतक लगाने वाले जेसन राय का बल्ला सीएसके के खिलाफ नहीं चला। सिर्फ 2 रन पर हेजलवुड ने उन्हें धौनी के हाथों विकेट के पीछे कैच करवा दिया। टीम के कप्तान केन विलियमसन 11 रन पर आउट हो गए और उनका विकेट ड्वेन ब्रावो ने लिया। टीम को तीसरा झटका प्रियम गर्ग के रूप में लगा और वो 7 रन बनाकर ड्वेन ब्रावो की गेंद पर आउट हो गए। साहा ने काफी अच्छी पारी खेली और 44 रन बनाए।

उन्हें रवींद्र जडेजा ने एम एस धौनी के हाथों कैच आउट करवाया। अभिषेक शर्मा ने 18 रन पारी खेली और हेजलवुड की गेंद पर डुप्लेसिस के हाथों कैच आउट हुए। अब्दूल समद ने 18 रन की पारी के साथ अपना कैच मोइन अली को हेजलवुड की गेंद पर थमा बैठे। जेसन होल्डर महज 5 रन पर बाउंड्री पर अपना कैच चाहर को थमा बैठे। राशिद खान ने नाबाद 17 रन बनाए। सीएसके की तरफ से जोस हेजलवुड ने तीन, ब्रावो ने दो जबकि जडेजा व शार्दुल ठाकुर ने एक-एक विकेट लिए।

हैदराबाद के खिलाफ इस मैच के लिए धौनी ने अपनी प्लेइंग इलेवन में एक बदलाव किया। इस मैच के लिए सैम कुर्रन को बाहर किया गया है जबकि फिर से ड्वेन ब्रावो की टीम में वापसी हुई। वहीं हैदराबाद ने अपनी प्लेइंग इलेवन में किसी तरह का कोई बदलाव नहीं किया। रितुराज गायकवाड़, फाफ डुप्लेसिस, मोइन अली, अंबाती रायुडू, सुरेश रैना, एम एस धौनी (विकेटकीपर/कप्तान), रवींद्र जडेजा, ड्वेन ब्रावो, शार्दुल ठाकुर, दीपक चाहर, जोस हेजलवुड। जेसन राय, रिद्धिमान साहा (विकेटकीपर), केन विलियमसन (कप्तान), प्रियम गर्ग, अभिषेक शर्मा, अब्दुल समद, जेसन होल्डर, राशिद खान, भुवनेश्वर कुमार, सिद्धार्थ कौल, संदीप शर्मा।

पिंक बॉल टेस्ट के पहले दिन बारिश ने डाली खलल, स्मृति मंधाना की शानदार पारी की बदौलत मजबूत स्थिति में भारतीय टीम

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच खेले जा रहे एकमात्र पिंक बॉल टेस्ट के पहले दिन बारिश विलेन साबित हुई। लगातार बरसात के चलते दिन के खेल को जल्दी समाप्त करना पड़ा। टीम इंडिया स्मृति मंधाना की 80 रनों की नाबाद पारी की बदौलत काफी मजबूत स्थिति में है। भारतीय महिला टीम ने टॉस गंवाने के बाद पहले बल्लेबाजी करते हुए एक विकेट खोकर 132 रन बना लिए हैं। मंधाना के साथ पूनम राउत 16 रन बनाकर क्रीज पर डटी हुई हैं। वहीं, ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजों को शेफाली वर्मा के रूप में सिर्फ एक सफलता हाथ लगी। शेफाली 31 रन बनाकर पवेलियन लौटीं। टॉस गंवाने के बाद भारतीय टीम ने पिंक बॉल टेस्ट में अच्छी शुरुआत की और मंधाना और शेफाली ने पहले विकेट के लिए 93 रनों की पार्टनरशिप की। शेफाली 64 गेंदों का सामना करने के बाद चार चौकों की मदद से 31 रन बनाकर आउट हुईं। शेफाली के आउट होने के बाद मंधाना ने पूनम के साथ मिलकर भारतीय पारी को आगे बढ़ाया और 132 रनों के स्कोर तक ले गईं। लेकिन, इसके बाद मौसम की मार के चलते आगे का खेल संभव नहीं हो सका। टेस्ट क्रिकेट में यह मंधाना का यह सर्वाधिक स्कोर भी है और टेस्ट के दूसरे दिन उनकी निगाहें क्रिकेट के सबसे लंबे फॉर्मेट में पहला शतक जमाने पर होंगी। मंधाना की यह टेस्ट क्रिकेट में तीसरी फिफ्टी है। स्मृति मंधाना पिंक बॉल टेस्ट मैच में हाफ सेंचुरी लगाने वालीं पहली भारतीय महिला बल्लेबाज भी बन गई हैं। मंधाना ने 51 गेंदों में अपनी फिफ्टी पूरी की। इससे पहले ऑस्ट्रेलियाई महिला क्रिकेट टीम ने में टॉस जीतकर गेंदबाजी का फैसला किया। ऑस्ट्रेलियाई टीम की तरफ से अननबेल सदरलैंड, जॉजिन्या वेयरहैम, डार्सी ब्राउन और स्टेला कैंपबैल ने डेब्यू किया वहीं भारत की तरफ से यस्तिका भाटिया और मेघना सिंह ने डेब्यू किया।

फैन ने किया ट्विटर पर आकाश चोपड़ा को ट्रोल करने का प्रयास, पूर्व भारतीय बल्लेबाज ने अपने जवाब से जीता दिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व क्रिकेटर और कमेंटेटर आकाश चोपड़ा सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहते हैं। वो अक्सर यहां बेबाकी से अपनी बात रखते हैं। आकाश चोपड़ा अपने यू ट्यूब चैनल में आजकल आईपीएल 2021 को लेकर अपनी राय खुलकर व्यक्त कर रहे हैं। आकाश चोपड़ा को गुरुवार को एक फैन ट्रोल करने की कोशिश की। आकाश ने अपने जवाब से फैन का दिल जीत लिया। दरअसल एक ट्रोल ने कोलकाता नाइटराइडर्स के बहाने उन्हें ट्रोल करने की कोशिश की लेकिन पूर्व भारतीय बल्लेबाज ने इसका शानदार जवाब दिया। शुभम नाम के यूजर ने लिखा कि कृपया उसी फ्लाइट का इस्तेमाल करना जिसेस आपको आईपीएल 2009 में केकेआर ने वापस घर भेज दिया था। इस पर आकाश चोपड़ा ने जवाब दिया कि वो कैपटाउन से अमीरात थी। मैं अभी मुंबई में अपने घर से दो किलोमीटर की दूरी पर हूं और ड्राइव करके चले जाएंगे। चिंता करने के लिए शुक्रिया। गौरतलब है कि आईपीएल के शुरुआती दो सीजन में आकाश चोपड़ा कोलकाता नाइट राइडर्स की टीम का हिस्सा रहे थे, लेकिन वह बल्ले से कुछ खास कमाल नहीं दिखा सके थे। भारत के लिए टेस्ट में सलामी बल्लेबाजी कर चुके आकाश ने आईपीएल के दो सीजन को मिलकर कुल 7 मैच खेले थे, जिसमें उन्होंने महज 8.83 की औसत से 53 रन बनाए थे। साल 2009 में साउथ अफ्रीका में खेले गए आईपीएल के दूसरे सीजन के बीच में ही केकेआर की टीम ने आकाश चोपड़ा को खराब फॉर्म के चलते भारत वापस भेज दिया था। लोकसभा चुनाव की वजह से आईपीएल का दूसरा एडिशन साउथ अफ्रीका में आयोजित किया गया था।

मैच के बाद यशस्वी जयसवाल ने भी सीखे विराट कोहली से बल्लेबाजी के गुण, कहा- लीजेंड खिलाड़ी हम सबके लिए हैं प्रेरणा

नई दिल्ली (एजेंसी)। विराट कोहली की गिनती विश्व के सबसे बेहतरीन बल्लेबाजों में की जाती है। हाल ही में विराट टी-20 क्रिकेट में 10 हजार रन पूरा करने वाले पहले भारतीय बल्लेबाज बने। इसके साथ ही आईपीएल में भी वह इकलौते बैट्समैन हैं, जिन्होंने 6 हजार से ज्यादा रन बनाए हैं। यही वजह है कि कोहली मैच के बाद अक्सर ही अपना अनुभव युवा बल्लेबाजों के साथ शेयर करते हुए नजर आते हैं। यूएई लेग में केकेआर के बल्लेबाज वेंकटेश अय्यर को बैटिंग का पाठ पढ़ाने के बाद राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ जीत के बाद विराट यशस्वी जयसवाल को भी बैटिंग को लेकर महत्वपूर्ण सीख देते हुए नजर आए। यशस्वी ने अपने सोशल मीडिया पर आरसीबी के कप्तान के साथ फोटो शेयर करते हुए उनके इस अंदाज की जमकर तारीफ की है। यशस्वी ने अपने इंस्टाग्राम पर विराट के साथ फोटो शेयर करते हुए लिखा, आरसीबी के मैच के बाद होने वाली परंपरा। लीजेंड से सीखने के लिए बहुत कुछ है। बहुत धन्यवाद इन दयालु शब्दों के लिए भैया आप हम सबके लिए प्रेरणा हैं। यशस्वी

अबतक यूएई लेग में राजस्थान की तरफ से शानदार फॉर्म में नजर आए हैं। बैंगलोर के खिलाफ भी उन्होंने 22 गेंदों में 31 रनों की पारी खेलकर एविन लुईस के साथ मिलकर टीम को धमाकेदार शुरुआत दी थी। यशस्वी इस सीजन खेले अबतक 7 मैचों में 138.51 के शानदार स्ट्राइक रेट से 187 रन बना चुके हैं। हालांकि, वह अपनी अच्छी शुरुआत को बड़ी पारी में तब्दील करने में नाकाम रहे हैं और उनके नाम एक भी अर्धशतक नहीं है। राजस्थान के सलामी बल्लेबाज का आईपीएल 2021 में सर्वाधिक स्कोर 49 रन रहा है।राजस्थान रॉयल्स की टीम ने पहले बैटिंग करते हुए एविन लुईस की 58 रनों की दमदार पारी के बूते 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 149 रन बनाए। जिसके जवाब में आरसीबी ने श्रीकर भरत की 44 और ग्लेन मैक्सवेल के नाबाद अर्धशतक की बदौलत महज 17.1 ओवर में ही 150 रनों के लक्ष्य को हासिल कर लिया।

हैदराबाद ने छुआ 100 का आंकड़ा, अब्दुल समद और अभिषेक की जोड़ी क्रीज पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग के 44वें मैच में चेनर्ई सुपर किंग्स की टीम का सामना सनराइजर्स हैदराबाद से हो रहा है। यह मैच शारजाह क्रिकेट स्टेडियम में खेला जा रहा है। टॉस हारकर पहले बैटिंग करने उतरी हैदराबाद की शुरुआत अच्छी नहीं रही है और टीम ने 4 विकेट खोकर 100 से ज्यादा रन बना लिए हैं। इस समय अब्दुल समद और अभिषेक शर्मा की जोड़ी क्रीज पर मौजूद है। साहा की 44 रनों की पारी का अंत रविंद्र जडेजा ने किया।

राजस्थान रॉयल्स की हार के बावजूद मुस्ताफिजुर रहमान ने मैदान पर किया कुछ ऐसा कि हर कोई रह गए हैरान

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग के यूएई एडिशन के एक अहम मुकाबले में राजस्थान रॉयल्स की टीम को रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के हाथों 7 विकेट से हार का सामना करना पड़ा। मिडिल ऑर्डर के लचर प्रदर्शन के बाद टीम के गेंदबाज भी कुछ खास कमाल नहीं दिखा सके। आरसीबी के खिलाफ मुस्ताफिजुर रहमान एकमात्र ऐसे गेंदबाज रहे, जिन्होंने बल्लेबाजों को जमकर तंग किया और 3 ओवर में 2 विकेट झटके। लेकिन, वह अपनी बॉलिंग नहीं, बल्कि मैदान पर की गई अपनी हैरतअंगेज फील्डिंग की वजह से काफी सुर्खियां बटोर रहे हैं। मुस्ताफिजुर ने मैदान पर ऐसा एफर्ट दिखाया जिसको देखकर हर कोई दांतों तले उंगली दबाने को मजबूर हो गया है। दरअसल, आरसीबी की पारी के 9वें ओवर में ग्लेन मैक्सवेल ने कार्तिक त्यागी की गेंद पर जोरदार पुल शॉट खेला। मैक्सवेल के शॉट लगाते ही ऐसा लगा कि बॉल सिक्स के लिए जाएगी, लेकिन वहां फील्डिंग कर रहे मुस्ताफिजुर रहमान ने गजब की फुर्ती दिखाई और हवा में छलांग लगाते हुए गेंद को पकड़ा और बाहर की तरफ फेंक दिया। मुस्ताफिजुर कैच तो नहीं लपक सके, पर उन्होंने छक्के को अपनी जबरदस्त फील्डिंग से महज एक रन में तब्दील कर दिया। कमेंटेटर ने भी राजस्थान के इस बॉलर की फील्डिंग एफर्ट के लिए जमकर तारीफ की। सोशल मीडिया पर इसका वीडियो काफी वायरल हो रहा है। टॉस हारकर पहले बैटिंग करने उतरी राजस्थान रॉयल्स की टीम ने एविन लुईस की 58 रनों की दमदार पारी के बूते 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 149 रन बनाए।

आय से अधिक संपत्ति के मामले में बरी हुये पूर्व मंत्री रंगनाथ मिश्र

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज एमपी एमएलए कोर्ट ने दिया फैसला, वर्ष 2012 में दर्ज हुआ था मामला, फैसले से समर्थकों में छायी खुशी की लहर

भदोही। उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री रह चुके पंडित रंगनाथ मिश्र को प्रयागराज की एमपी एमएलए स्पेशल कोर्ट ने बुधवार को आय से अधिक सम्पत्ति के मामले में बाइज्जत बरी कर दिया है। श्री मिश्र के उपर वर्ष 2012-13 में मुकदमा दर्ज किया गया था। उनके बरी होने से समर्थकों में खुशी की लहर व्याप्त है।

बता दें कि बता दें अक्टूबर 2012 में जिले के औराई थाने में पूर्व मंत्री पंडित रंगनाथ मिश्र के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया था। यह मुकदमा विजिलेंस के महानिदेशक ओपी दीक्षित ने दर्ज कराया था। एमपी/एमएलए स्पेशल कोर्ट जज आलोक कुमार श्रीवास्तव ने बुधवार को फैसला सुनाते हुये उन्हें बरी कर दिया। गौरतलब है कि पिछले साल 2020 में ईडी ने आय से अधिक संपत्ति मामले में रंगनाथ मिश्रा की पांच करोड़ रुपये की संपत्ति कुर्क की थी। ईडी के मुताबिक रंगनाथ मिश्र और उनके परिजन के प्रयागराज स्थित टैगोर टाउन के जॉर्ज टाउन विस्तार स्थित 250.83 वर्ग मीटर और 899.25 वर्ग मीटर के दो प्लॉट कुर्क किए गए थे। मिश्रा और उनके परिवार के सदस्यों के खिलाफ धन शोधन निवारण अधिनियम-2002 (पीएमएलए) के तहत यह कार्रवाई की गई। आरोप था कि रंगनाथ मिश्र ने वर्ष 2010 में सरकार में मंत्री रहते हुए अपने और परिजन के नाम पर ये संपत्तियां बनाई थीं। बताते चलें कि श्री मिश्र भदोही के औराई विधानसभा सीट से चार बार विधायक रहे। जिसमें 1993, 1997 और 2005 में भारतीय जनता से चुने गये थे जबकि बसपा के टिकट पर 2007 में चौथी बार विधायक बने। रंगनाथ मिश्र भाजपा और बसपा की सरकारों में गृह राज्य मंत्री, माध्यमिक शिक्षा मंत्री सहित यूपी सरकार में कई मंत्रालयों की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। मौजूदा समय में वे बहुजन समाज पार्टी के नेता है। पंडित रंगनाथ मिश्र को न्यायालय द्वारा बाइज्जत बरी किये जाने की सूचना पाकर समर्थकों में हर्ष की लहर दौड़ गयी। जगह-जगह पर इसके उपलक्ष्य में ढोल नगाड़ों के साथ समर्थकों ने जश्न मनाया। वहीं न्यायालय के इस फैसले को सही निणय बताते हुये पूर्व मंत्री के सहसेपुर स्थित आवास पर बधाई देने वालों का तांता लगा रहा। मीडिया से बात करते हुये पूर्व मंत्री श्री मिश्र ने बताया कि 1980 से लेकर 2012 तक मुझ पर एक भी मुकदमा नहीं था। अवसरवादी राजनीतिज्ञों ने मेरे प्रति कुचक्र रच कर फसाने का कार्य किया जिसको आज माननीय न्यायालय ने दोषमुक्त कर सच्चाई सबके सामने लाकर रख दिया। कहा कि चार बार विधायक और प्रदेश की सरकार में मंत्री रहते हुये मैंने भदोही जनपद के साथ ही पूर्वांचल के विकास को लेकर जो अभूतपूर्व कार्य किया उससे विचलित मेरे राजनैतिक विरोधियों ने एक गहरी साजिश रची थी । लेकिन वह अपने गलत मंसूबे में सफल नहीं हो पाये और न्यायालय में उनका झूठ बेनकाब हुआ। कहा कि जनता का सन्ह और आशीर्वाद हमेशा मेरे साथ रहा है। कहा कि सत्य परेशान हो सकता है, लेकिन पराजित नही। पूर्व मंत्री श्री मिश्र के पुत्र एवं ब्लाक प्रमुख औराई बृजमोहन मिश्र ने कहा कि हमारे परिवार को जनता के आशीर्वाद और न्यायालय पर पूर्ण विश्वास था कि एक दिन जीत हमारी ही होगी। क्योंकि सच को झूठ नही दबा सकता।

पूर्व मंत्री के बाइज्जत बरी होने हर्ष

गोपीगंज। भाजपा व बसपा सरकार में मंत्री रहे रंगनाथ मिश्रा को एमपी/एमएलए कोर्ट से बरी होने पर हर्ष व्यक्त किया गया। पूर्व मंत्री रंगनाथ मिश्रा को कोर्ट से बरी होने पर विकास खंड औराई के अमवा में सुरेंद्र नाथ मिश्रा के आवास पर जुटे सैकड़ो लोगों ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि उनके बाइज्जत बरी होने पर राजनीतिक साजिश बेनकाब हो गया। इस दौरान माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया गया। मुख्य रूप से सुरेन्द्र नाथ मिश्रा, बबलू पाठक, राजकुमार तिवारी, रतनेश तिवारी, साधु तिवारी, शिवाकांत शुक्ला आदि लोग रहे।

किसी भी प्रकारकी समस्या होने पर फोन करें बेटियां : ऊषा रानी

महिला आयोग की सदस्य ऊषा रानी ने औराई थाने का किया निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

भदोही। गुरूवार को महिला आयोग की सदस्य ऊषा रानी जी अपने जनपद भ्रमण के दौरान जिले के विकास खंड औराई के सभागार में महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा आयोजित मिशन शक्ति के अन्तर्गत पोषण पंचायत कार्यक्रम का का शुभारम्भ किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ दीप प्रज्ज्वलित करने के बाद स्वागत गीत गाकर किया गया। इस दौरान महिला आयोग की सदस्य को बुके देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में आगनबाड़ी कार्यकत्रियों के द्वारा विभिनन्प्रकार के पोषण पंचायत कार्यक्रम के तहत गीत प्रस्तुत की गई। महिला विभाग द्वारा नुक्कड़ नाटक कार्यक्रम भी किया गया। बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार विभाग की तरफ से अनेक स्टाल लगाये गये थे। जिसका अवलोक सदस्या द्वारा किया गया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आपके इस कार्यक्रम के बारे में मुख्यमंत्री जी तक जरूर संदेश पहुँचाया जायेगा। उन्होंने कहा कि किसी भी महिला या लड़कियों के साथ यदि अपराध या गलत कार्य, छेड़-छाड़ का मामला आता है तो मेरे व्यक्तिगत मोबाइल नम्बर और महिला हेल्पलाइन नम्बर पर तुरन्त सम्पर्क करें। उन्होंने सभी लोगों को आह्वान किया कि कोविड-19 का अनुपालन अवश्य करें, मास्क लगाये, एवं प्रतिदिन हाथ धोये, सेनीटाइजर का अवश्य प्रयोग करें, जिससे की कोई भी बीमार न होने पाए। इस मौके पर ऊषा रानी से महिलाओं की गोद भराई एवं बच्चों को अनन्प्राशन कराया गया। इस दौरान उन्होंने पोषण पंचायत कार्यक्रम में विभिनन् प्रस्तुतियों पर खुशी जाहिर की। महिला विभाग के द्वारा नुक्कड़ नाटक, गीत प्रस्तुत करने पर आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों की सराहना की।इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी भानु प्रताप सिंह ने बताया कि राष्ट्रीय पोषण माह सितम्बर 2021 के अन्तर्गत विभिनन् कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। पोषण जन आदोलन की गतिविधियों को जोड़ने का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी कार्यकत्री एक सशक्त महिला के रूप में हर गॉव में कार्य कर रही है। जिससे पोषण सम्बन्धित समाधान हो रहा है। अगर कोई समस्या आती है तो उसका तत्काल निराकरण किया जाता है। उन्होंने कहा कि हर परिवार की आर्थिक एवं समाजिक स्थिति सही है तो उनका पोषण सही रहेगा।

औराई ब्लाक सभागार में मिशन शक्ति अभियान के तहत हुआ पोषण पंचायत का आयोजन

गांधी जयंती व राजनैतिक जागरुकता गोष्ठी तीन अक्टूबर को

गोपीगंज। अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज वैश्य (हलवाई) मोदनवाल महासभा के तत्वावधान में तीन अक्टूबर दिन रविवार सुबह 10:00 बजे से शाम 4:00 बजे तक गांधी जयंती एवं राजनैतिक जागरूकता व संगठनात्मक संगोष्ठी का आयोजन शिव सावित्री लॉन, मिर्जापुर रोड पर किया गया है । जिसमें सभी स्वजातीय बंधुओं को आमंत्रित किया गया है। यह जानकारी देते हुये विनोद मोदनवाल ने बताया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रहलाद दास गुप्ता अध्यक्ष नगर पालिका गोपीगंज होंगे।

ताकि बनी रहे राष्ट्रीय एकता, सांप्रदायिक सौहार्द का भावना : अनिरूद्ध

अखंड भारत संदेश

भदोही। राष्ट्रीय एकीकरण समिति की बैठक जिला पंचायत अध्यक्ष अनिरूद्ध त्रिपाठी की अध्यक्षता में जिला पंचायत सभागार में हुई। जिसमें उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय एकता एवं सांप्रदायिक सौहार्द की भावना बनी रहे ताकि हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि समुदाय में किसी भी जाति वर्ग का हो सभी को मिल जुलकर रहना चाहिए, और किसी भी प्रकार का मतभेद न हो। उन्होंने समिति के सदस्यों से कहा की आप सब मिलकर राष्ट्रीय एकता की भावना के साथ कार्य करें, ताकि समाज में हमेशा खुशी का माहौल रहे और सौहार्द बना रहे।

उन्होंने बताया कि बैठक में समिति का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता, भाई-चारा, धर्म निरपेक्षता एवं लोकतंत्र की भावना को बढ़ाने, साम्प्रदायिक एकता एवं सौहार्द का वातावरण कायम रखने के लिए कार्यक्रम आयोजन किया जाना है। जिसमे मुख्य रूप से उद्यमियों, शिक्षक, छात्र, युवा वर्ग एवं महिला को शामिल किया जाना है। साथ ही प्रमुख त्यौहारों को सामूहिक रूप से मनाया जाना है।

परीक्षित मोक्ष व कलयुग आगमन की कथा का कराया रसपान

गोपीगंज। क्षेत्र के तिलंगा गांव में चल रहे संगीतमय श्री मदभागवत कथा ज्ञान यज्ञ के अन्तिम दिन प्रसिद्ध कथावाचक राकेश जी ने परीक्षित मोक्ष कलयुग आगमन कथा का सजीव चित्रण कर श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। ज्योतिषाचार्य पंडित भोलानाथ शास्त्री ने श्रीमद्भागवत महापुराण महात्म्य, कथा का समापन किया। एक सप्ताह तक चले कथा में व्यास पीठ से यज्ञाचार्य पंडित दीपक चतुर्वेदी के कृपापात्र राकेश जी महाराज ने बहुत ही सुन्दर कथा सुनाया।

सीएम योगी ने मंच पर बच्चों को गोद लेकर खिलाई खीर, दी आवास की चाबी और चेक

कानपुर (एजेंसी)। डीएवी मैदान में सीएम योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को 20 लाभाथिर्यों को मंच पर बुलाकर उनको विभिनन योजनाओं का लाभ दिया। पीएम आवास ग्रामीण व शहर के लाभाथिर्यो को आवास की चाबी दी। अन्य लाभाथिर्यों को अलग-अलग योजनाओं की चेक दी गईं। सीएम से मिलकर लाभार्थी फूले नहीं समाए। हालांकि समय कम होने से 10 लाभाथिर्यों और दो बच्चों को मंच पर अनन्प्राशन के लिए नहीं बुलाया जा सका। सीएम ने मंच पर खड़े होकर सबसे पहले तीनों बच्चों को बारी-बारी गोद में उठाया। फिर उनका तिलक किया। इसके बाद माला पहनाई और खीर खिलाई। कई बच्चों को खिलौने भी दिए। फिर खीर खिलाकर अनन्प्राशन किया। वहीं, सीएम ने दर्श की मां साक्षी शर्मा, रिद्धि की मां रेनू और वंशिका की मां गुड़िया को पौष्टिक आहार किट भी दी। सीएम की जनसभा में अलग-अलग 12 योजनाओं के 16400 लाभाथिर्यों को बुलाया गया। सभी को बसों से लाया गया। इसके लिए अफसरों की ड्यूटी लगाई गई थी। सबसे ज्यादा स्ट्रीट वेंडर पीएमवाईजी अर्बन के 4500 लाभाथिर्यों को बुलाया गया। इसी तरह उज्जवला योजना और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के दो-दो हजार लाभाथिर्यों को बुलाया गया था। अपर श्रम आयुक्त एसपी शुक्ला ने बताया कि श्रम विभाग की कन्या विवाह सहायता योजना और मातृत्व शिशु एवं बालिका योजना के 497 लाभाथिर्यों को 2.23 करोड़ का भुगतान किया गया।

प्रधानमंत्री आवास शहरी- राघवेंद्र, गुड्डी सोनकर, निसार बानो,

प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना-सत्य नरायण, पनने, अभिषेक कुमारकिसान सम्मान निधि-हरपाल सिंह, अर्जुन सिंह, बचान, गिरीश कुमार व विनोद कुमार ग्रामीण आजीविका मिशन-आरती सिंह, रेनू, उपासना, पीएम आवास ग्रामीण-सुनीता, रूखसाना, अनीता, कन्या विवाह योजना-संतलाल, राम स्वरूप, प्यारेलाल, अनन्प्राशन- दर्श, रिद्धि, वंशिका।

सिद्धू की नाराजगी नहीं हुई दूर? चन्नी संग बैठक के बाद भी नेताओं ने साधी चुप्पी, मीडिया से नहीं की बात

नई दिल्ली (एजेंसी)। पंजाब कांग्रेस के नेता नवजोत सिंह सिद्धू की नाराजगी दूर हुई या नहीं? अभी इसपर से सस्पेंस खत्म नहीं हुआ है। प्रदेश अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने के करीब 72 घंटे बाद नवजोत सिंह सिद्धू और राज्य के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चनने के बीच बैठक हुई। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में कहा जा रहा है कि पंजाब भवन में हुई इस बैठक में दोनों नेताओं के बीच कई मुद्दों पर चर्चा हुई। हालांकि, मीटिंग खत्म होने के बाद दोनों ही नेताओं की तरफ से बैठक को लेकर कुछ भी नहीं कहा गया। सिद्धू दागी अधिकारियों की नियुक्ति को लेकर नाराज हैं।

कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में सूत्रों के हवाले से कहा जा रहा है कि नवजोत सिंह सिद्धू और मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चनने की बैठक में कुछ मुद्दों पर तो सहमति बनी है, लेकिन कई मुद्दे अब भी ऐसे हैं, जिसपर कोई सहमति नहीं बन सकी है। सिद्धू एडवोकेट जनरल और डीजीपी को हटाने पर अड़ गए हैं, जबकि चनने ने कहा कि जिन केसों पर सिद्धू को ऐतराज है, उन पर स्पेशल सॉलिसिटर को लगाया जा सकता है, लेकिन एडवोकेट जनरल को नहीं हटाया जाएगा। असहमति वाले मुद्दों पर यह भी कहा जा रहा है कि इसपर शीर्ष आलाकमान फैसला ले सकता है।

बहरहाल इस मीटिंग के बाद पहले सीएम करीब 6 बजे बैठक स्थल से बाहर निकले और मीडिया से बिना बात किये चले गये। इसके करीब आधे घंटे बाद नवजोत सिंह सिद्धू भी वहां से निकल गए और उन्होंने भी मीडिया से कोई बातचीत नहीं की। इस मीटिंग के बाद इन दोनों नेताओं के अलावा किसी अन्य पार्टी नेता ने भी बैठक को लेकर कोई जानकारी नहीं दी। इससे पहले नवजोत सिंह सिद्धू सीएम से मिलने के लिए पटियाला से चंडीगढ़ पहुंचे थे। मीटिंग से ठीक पहले सिद्धू ने राज्य के नये डीजीपी पर निशाना साधा था और कहा था कि उन्होंने दो सिख युवकों को गलत तरीके से एक केस में फंसाया और बादल को क्लीन चिट दी।

चन्नी सरकार में वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी इकबाल प्रीत सिंह सहोता को पंजाब पुलिस के महानिदेशक का अतिरिक्त प्रभार दिया गया है। सहोता को प्रभार दिए जाने से नाराज सिद्धू ने कांग्रेस की पंजाब इकाई के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया था। सहोता फरीदकोट में गुरु ग्रन्थ साहिब की बेअदबी की घटनाओं की जांच के लिए तत्कालीन अकाली सरकार द्वारा 2015 में गठित एक विशेष जांच दल के प्रमुख थे। अमरिंदर सिंह को मुख्यमंत्री पद से हटाए जाने के बाद और राज्य में अगले साल की शुरुआत में महत्वपूर्ण विधानसभा चुनावों से पहले पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सिद्धू के अपने पद से इस्तीफा दे देने से कांग्रेस की पंजाब इकाई में उथल-पुथल मची है। नई कैबिनेट और अन्य शीर्ष अधिकारियों की हालिया नियुक्तियों को लेकर पंजाब कांग्रेस में गुटबाजी खुल कर सामने आ गई। बुधवार को पत्रकारों से बात करते हुए चनने ने कहा था मैंने आज सिद्धू साहब से टेलीफोन पर बात की है।

स्तनपान कराना मां का मौलिक अधिकार, इससे वंचित नहीं किया जा सकताः कर्नाटक हाई कोर्ट

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक हाई कोर्ट ने कहा है कि स्तनपान कराने वाली मां के लिए स्तनपान संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकारों के तहत एक अनिवार्य अधिकार है। जस्टिस कृष्ण एस दीक्षित की सिंगल बेंच ने महिला हुसन बानो की ओर से अपने बच्चे के संरक्षण की अपील के साथ दायर याचिका पर सुनवाई के दौरान यह टिप्पणी की। इस बच्चे को बेंगलुरु के एकअस्पताल से चुराकर कोप्पल कस्बे की निःसंतान महिला अनुपमा देसाई को बेच दिया गया था। अदालत ने यह भी कहा कि स्तनपान करने वाले शिशु के स्तनपान के अधिकार को मां के अधिकार के साथ आत्मसात किया जाना चाहिए। अदालत ने कहा कि स्तनपान कराने वाली मां और स्तनपान करने वाला बच्चा भारतीय संविधान में उल्लिखित मौलिक अधिकारों के तहत गारंटीकृत जीवन के अधिकार के तहत संरक्षित समवर्ती अधिकार हैं। पीठ ने इस बात पर जोर देते हुए कहा कि सभ्य समाज में इस तरह की घटना नहीं होनी चाहिए। पीठ ने कहा, यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि यह सुंदर बच्चा बिना किसी गलती के स्तनपान के बिना रहा, इसकी स्तनपान कराने वाली मां की अब तक इस तक पहुंच नहीं थी। बच्चे को पाल रही मां ने अदालत से बच्चे को अपने पास रखने का आग्रह किया था क्योंकि उसने एक साल से अधिक समय तक बच्चे की देखभाल की थी। हालांकि, अदालत ने देसाई की दलील को मातृत्व की अवधारणा के खिलाफ घृणित करार दिया। जस्टिस दीक्षित ने कहा, बच्चे संपत्ति नहीं हैं जिन्हें आनुवंशिक मां और एक अजनबी के बीच उनकी संख्यात्मक बहुतायत के आधार पर बांटा जा सकता है।

सीरियल रेपिस्ट को फंदे पर लटकाने का रास्ता साफ, 18 से ज्यादा रेप-मर्डर करने वाले की पूरी कारस्तान

बेंगलुरू (एजेंसी)। पानी मांगने के बहाने घरों में घुसकर महिलाओं से रेप और फिर मर्डर करने वाले सीरियल रेपिस्ट उपेश रेड्डी को कर्नाटक हाईकोर्ट ने झटका दिया है। निचली अदालत के फांसी की सजा को बरकरार रखते हुए हाई कोर्ट ने उसकी उम्रकैद की मांग को खारिज कर दिया। दोषी उमेश अक्सर उन महिलाओं को निशाना बनाता था, जो घर में अकेली होती थी। उसे नौ महिलाओं के साथ दरिंदगी और हत्या के आरोप में दोषी करार दिया गया है। हालांकि पुलिस सूत्रों का कहना है कि उसने कम से कम 18 महिलाओं के साथ रेप और उनकी हत्या की है। कर्नाटक हाईकोर्ट ने बुधवार को मामले की सुनवाई करते हुए उमेश रेड्डी की फांसी की सजा को बरकरार रखा। मामले में जस्टिस अरविंद कुमार और जस्टिस प्रजीप सिंह की अदालत ने टिप्पणी करते हुए कहा कि अपराध को देखते हुए दोषी नरमी का हकदार नहीं है। मामले में जांच करने वाले इंस्पेक्टर बीएन न्यामेगौड़ा का कहना है कि उमेश बेहद क्रूर और शातिर किस्म का अपराधी है। वह सुबह 11 बजे से 2 बजे के बीच घर में रहने वाली महिलाओं को निशाना बनाता था। उन्होंने कहा कि वह गिरफ्तारी से पहले पांच बार पुलिस को चकमा भी दे चुका है। बीएन न्यामेगौड़ा के मुताबिक, केंद्रीय सशस्त्र रिजर्व बल(सीआरपीएफ) में शामिल होने के बाद ही उमेश की आपराधिक प्रवृत्ति शुरू हो गई थी। ट्रेनिंग के बाद वह कश्मीर में तैनात था और अपने कमांडेंट की बेटी के साथ ही रेप करने के बाद कैंप से फरार हो गया। उस वक्त उसकी आपराधिक इतिहास के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी, इसलिए सीआरपीएफ से भागकर वह चित्रदुर्ग आ गया और नवंबर 1996 में जिला सशस्त्र रिजर्व (डीएआर) में एक कांस्टेबल बन गया। लेकिन वह वहां भी नहीं रहा, वहां भी एक बलात्कार के मामले में वह पकड़ा गया था। उसने पहले चित्रदुर्ग के केईबी कॉलोनी में एक लड़की के साथ बलात्कार करने की कोशिश की, लेकिन लड़की ने शोर मचा दिया। कुछ ही दिनों बाद उसने उसी जिले में एक महिला के साथ बलात्कार किया और उसकी हत्या कर दी। उसे 1997 में बलात्कार के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। लेकिन दो महीने के भीतर ही वह जेल से भाग गया। न्यामेगौड़ा ने बताया, ह्वरेड्डी पहली बार तब भागा जब उसे मार्च 1997 में बेल्लारी जेल से शिफ्ट किया जा रहा था। बाद में उसे जुलाई 1997 में महिलाओं के अंडरगारमेंट्स चोरी करने का प्रयास करते हुए गिरफ्तार किया गया था। लेकिन 24 घंटे के अंदर वह फरार हो गया।

मध्य प्रदेशः महिला ने 2 सौतेले बच्चों का गला दबाया फिर चाकू से गोद डाला

नई दिल्ली (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के दतिया जिले में 37 साल की एक महिला पर आरोप है कि उसने अपने 2 सौतेले बच्चों का गला दबाया और फिर चाकू से गोद कर उनकी हत्या कर दी। पुलिस ने गुरुवार को बताया कि उसने इस मामले में आरोपी महिला को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी महिला का नाम ज्योति प्रजापति बताया जा रहा है। जिन दो मासूमों का कत्ल किया गया है उसमें 7 साल का अर्णब और 11 साल की जाह्नवी शामिल है। बताया जा रहा है कि दोनों का कत्ल करने के बाद ज्योति प्रजापति बाजार चली गई थी। ज्योति को बुधवार की शाम कोतवाली इलाके में स्थित उसके घर से गिरफ्तार किया गया। दतिया के सहायक पुलिस अधीक्षक कमल मौर्या ने कहा कि आरोपी ने बच्चों का गला अलग-अलग कमरे में दबाया और फिर उसके बाद एक चाकू से उन्हें कई बार गोदा। बच्चों को खून से लथपथ छोड़ कर महिला बाजार चली गई थी। पुलिस के मुताबिक दोनों बच्चों की जान लेने के बाद महिला स्थानीय बाजार में चली गई।

मामला उस वक्त उजागर हुआ जब महिला के पति अरविंद वहां पहुंचे। अरविंद एक मजदूर के तौर पर काम करते हैं। घर पहुंचने के बाद उन्होंने देखा कि उनके बच्चे मृत पड़े हैं। पुलिस के मुताबिक महिला के बाजार से आने के बाद पुलिस ने उससे पूछताछ की थी। जिसके बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस का कहना है कि अभी यह नहीं पता चल सका है कि इन हत्याओं के पीछे वजह क्या थी? शुरुआती जांच में पता चला है कि महिला अपने सौतेले बच्चों को पसंद नहीं करती थी। इसी वजह से उसने यह हत्याएं की हैं।

पेपर लीक के मास्टरमाइंड की तस्वीरें शिक्षा मंत्री के साथ, भाजपा ने कहा - सीबीआई जांच हो

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का आरोप है कि राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा में गड़बड़ी करने वालों के तार कांग्रेस पार्टी से जुड़े हैं। गुरुवार को इस मामले भाजपा ने हाल ही में आयोजित कराए गए शिक्षक पात्रता परीक्षा में गड़बड़ी की केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो से जांच कराने की मांग की है। राज्य भाजपा अध्यक्ष सतीश पूनिया ने दावा किया है कि इस परीक्षा में पेपर लीक करने वाले मास्टरमाइंड के तार कांग्रेस से भी जुड़े हैं। पूनिया ने आरोप लगाया है कि इस मामले में पात्रता परीक्षा के पेपर लीक का आरोपी बाटी लाल मीणा कांग्रेस का कार्यकर्ता है। भाजपा का यह भी आरोप है कि बाटी लाल मीणा और कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा की कुछ तस्वीरें भी सोशल मीडिया पर मौजूद हैं। हालांकि, कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने इन आरोपों से पूरी तरह इनकार किया है। उनका कहना है कि मीणा से उनका कोई लिंक नहीं है।

इस मामले में पुलिस का कहना है कि मीणा अभी छिपता फिर रहा है और उसे पकड़ने की कोशिशें की जा रही हैं। सतीश पूनिया ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, मीणा कांग्रेस पार्टी का रजिस्टर्ड कार्यकर्ता है। पार्टी के कई नेताओं के साथ उसकी तस्वीर है जिसमें डोटासरा भी शामिल हैं। यह सभी तस्वीरें सोशल मीडिया पर मौजूद हैं। इस मामले में भाजपा ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से मांग की है कि वो सीबीआई जांच के आदेश दें। पूनिया ने यह भी मांग की है कि राज्य के शिक्षा मंत्री को उनके पद से हटाया जाए। बीजेपी के इन आरोपों पर दोतसारा की तरफ से भी प्रतिक्रिया आई है। भाजपा के सारे आरोपों को गलत बताते हुए डोटासरा ने कहा, बाटी लाल मीणा कौन है, मैं नहीं जानता। कांग्रेस में उसे कोई भी पद नहीं मिला है। जहां तक मुझे जानकारी है उस युवक को राजनेताओं के साथ फोटो खिंचवाने की आदत है।पूनिया ने पूछा कि अगर इस परीक्षा के पेपर लीक नहीं हुए थे तब सरकार ने सरकारी कर्मचारियों को सस्पेंड क्यों किया? उन्होंने कहा कि सरकार के इस एक्शन से यह साबित होता है कि पेपर अहले सुबह ही लीक हो गए थे और परीक्षा में गड़बड़ी हुई है। उन्होंने कहा कि परीक्षा में हुई गड़बड़ी को लेकर भारतीय जनता युवा मोर्चा पूरे राज्य में प्रदर्शन करेगी।

: अनिल देशमुख केसः सीबीआई ने महाराष्ट्र के मुख्य सचिव और डीजीपी को भेजा समन

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री अनिल देशमुख पर 100 करोड़ रुपए की वसूली के आरोपों की जांच कर रही सीबीआई ने गुरुवार को राज्य के मुख्य सचिव सीताराम कुंटे और डीजीपी संजय पांडे को तलब किया है। देशमुख पिछले तीन महीने से फरार चल रहे हैं। बता दें की सीबीआई के साथ-साथ प्रवर्तन निदेशालय भी मनी लॉन्ड्रिंग की जांच कर रहा है। आपको बता दें कि मुंबई पुलिस के पूर्व कमिशन्र परमबीर सिंह ने अपनी एक चिट्ठी में आरोप लगाया था कि अनिल देशमुख उगाही में शामिल थे। उन्होंने मुंबई पुलिस के एक अधिकारी सचिव वाजे पर दवाब बनाया था कि वो हर महीने 100 करोड़ रुपए की उगाही करें। परमबीर सिंह ने यह चिट्ठी राज्य के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को लिखी थी।

कलह का ठीकरा नवजोत सिंह सिद्धू पर फोड़ बोले कैप्टन- कहीं से लड़ें चुनाव, जीतने नहीं दूंगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। चंडीगढ़ पहुंचने के बाद कैप्टन अमरिंदर सिंह ने नवजोत सिंह सिद्धू पर हमला बोला है। चंडीगढ़ में पत्रकारों से बातचीत में अमरिंदर सिंह ने साफ किया है कि वो अब कांग्रेस के साथ नहीं रहेंगे। उन्होंने कहा कि मैं पहले कह चुका हूं कि कांग्रेस छोड़ दूंगा। पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह ने कहा कि सिद्धू पंजाब के लिए सही नहीं हैं। अमरिंदर सिंह ने साफ किया कि सिद्धू कहीं से भी चुनाव लड़ें लेकिन वो उन्हें जीतने नहीं देंगे। अमरिंदर सिंह ने पार्टी में कलह का सारा ठीकरा सिद्धू पर फोड़ा है। उन्होंने कहा कि चनने का काम सरकार चलाना है। सिद्धू का काम पार्टी चलाना है। चनने के काम में सिद्धू की दखलअंदाजी नहीं होनी चाहिए। कांग्रेस की मौजूदा स्थिति पर अमरिंदर सिंह ने कहा कि सिद्धू जैसा हाल कांग्रेस में कभी नहीं हुआ है। अमरिंदर सिंह के बीजेपी में शामिल होने को लेकर लगाई जा रही अटकलों पर विराम लगाते हुए उन्होंने कहा कि मैं बीजेपी में नहीं जाउंगा। उन्होंने बताया कि दिल्ली में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोवाल से उनकी मुलाकात हुई थी। इस मुलाकात में सुरक्षा को लेकर बातचीत हुई है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान से ड्रोन का आना सुरक्षा के लिए खतरा है।

इससे पहले एक निजी चैनल से बातचीत में अमरिंदर सिंह ने कहा था कि पंजाब में आम आदमी पार्टी का ग्राफ बढ़ रहा है, लेकिन कांग्रेस की लोकप्रियता 20 प्रतिशत घट गई है। डोवाल से मुलाकात के संदर्भ में उन्होंने कहा, सुरक्षा चिंताओं को लेकर मै उनसे मिला। मै मुख्यमंत्री भले ही नहीं हूं, लेकिन पंजाब तो हमारा है... पहले जैसे हालात न पैदा हों, एनएसए से मुलाकात का यही मकसद था। गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात को लेकर सिंह ने कहा, किसान आंदोलन को एक साल पूरा हो गया।

कश्मीर से तालिबान तक पाकिस्तान का साथ देने वाले तुर्की के राष्ट्रपति की बाइडन ने की बेइज्जती

इस्तांबुल (एजेंसी)। दुनिया में बेहद अलग-थलग पड़ चुके पाकिस्तान को यदि हर मुद्दे पर चीन के अलावा किसी देश का साथ मिलता है तो वह है तुर्की। बात कश्मीर की हो या तालिबान की, तुर्की के राष्ट्रपति तैयब एदीगान इमरान खान का साथ निभाते नजर आते हैं। अब वह इमरान को अमेरिका से मिली बेइज्जती के हमदर्द भी बन गए हैं। जी हां, जिस तरह अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन से पहली बातचीत को इमरान तरस रहे हैं उसी तरह अब तैयब एदीगान को भी बाइडेन ने ठेंगा दिखा दिया है। जिससे तुर्की के राष्ट्रपति को ऐसी मिर्जी लगी है कि वह ना सिर्फ बाइडन की बुराई करने लगे हैं, बल्कि रूस और तालिबान से दोस्ती बढ़ाने की बात और जोरशोर से कर रहे हैं। असल में 23 सितंबर को तैयब संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक में हिस्सा लेने के लिए अमेरिका गए थे। इस दौरान वह अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन से भी मुलाकात करना चाहते थे। लेकिन बाइडेन ने उन्हें इसके लिए समय नहीं दिया।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं. UPHIN 2001/9025

महिला की किडनैपिंग, रेप और हत्या के लिए लंदन के एक पुलिस अफसर को उम्रकैद की सजा

लंदन (एजेंसी)। सारा एवर्ड की हत्या के लिए एक ब्रिटिश पुलिस अधिकारी को पैरोल के बिना जेल में उम्रकैद की सजा दी गई है। लंदन के एक सेवारत अधिकारी 48 साल के वेन कूजेंस, जिन्होंने राजनयिक परिसर में किडनैप, बलात्कार और हटाया के लिए दोषी ठहराया गए थे। 33 साल की सारा एवर्ड को वेन कूजेंस ने 3 मार्च को किडनैप कर लिया था। सारा उस वक्त अपने एक दोस्त के अपार्टमेंट से घर लौट रही थी। बाद में उसकी बॉडी लंदन से करीब 80 किलोमीटर दूर वुडलैंड में मिला था। पोस्टमॉर्टम में पता चला था कि सारा की मौत गर्दन दबाने से हुई है। मामले को लेकर क्राउन प्रॉसिक्यूशन सर्विस के निक प्राइस ने कहा है कि वेन कूजेंस ने उसके साथ घटिया व्यवहार किया। यह वास्तव में एक बुरी बात थी।

अफगानियों के लिए मुश्किल होगी इस साल की सर्दी, खाने-पीने की चीजों की भी किल्लत

काबुल (एजेंसी)। इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ रेडक्रॉस के क्षेत्रीय निदेशक एलेक्जेंडर मैथ्यू ने बृहस्पतिवार को कहा कि यदि अफगानिस्तान में मजदूरी और सेवाओं, खासकर स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए धन की भुगतान बहाली नहीं हो पाती है तो देश में गंभीर वित्तीय संकट के चलते आगामी सदिर्यों में एक ''बड़ा मानवीय संकट'' उत्पनन हो जाएगा। मैथ्यू ने कहा कि अफगानिस्तान में सूखा और गरीबी की वजह से खाने-पीने की चीजों की कमी के चलते सदिर्यों का मौसम एक बड़ी परेशानी बनने जा रहा है। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं में कटौती से अनेक अफगान लोगों, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के लिए बड़ा जोखिम पैदा हो सकता है।यह चेतावनी ऐसे समय आई है जब काबुल में समान शिक्षा अधिकारों की मांग को लेकर महिलाओं के नेतृत्व में हुए प्रदर्शन को दबाने के लिए तालिबान ने गोलीबारी कर दी। महिला प्रदर्शनकारियों के हाथों में लगे पोस्टर देश की स्थिति बताने के लिए काफी थे जिन पर लिखा था, ''हमारी किताबें मत जलाओ।'

इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ रेडक्रॉस और रेडक्रॉस क्रीसेंट सोसाइटी ने अफगानिस्तान के 16 प्रांतों में स्वास्थ्य केंद्रों, आपात राहत और अन्य सेवाओं के संचालन को जारी रखने के लिए तीन करोड़ 80 लाख डॉलर की मदद दिए जाने की अपील की है। मैथ्यू ने काबुल में एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, ''अफगानिस्तान में वित्तीय समस्या का समाधान करने के लिए कुछ किए जाने की जरूरत है, ताकि लोगों को कम से कम वेतन तो मिल पाए और उनके लिए आवश्यक चीजों की आपूर्ति, बिजली-पानी उपलब्ध हो सके। विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने अगस्त के महीने में अफगानिस्तान पर तालिबान का कब्जा होने के बाद देश को मिलने वाली मदद पर रोक लगा दी है, जबकि अमेरिका ने अफगान सेंट्रल बैंक की ओर से अमेरिकी खातों में जमा अरबों डॉलर की राशि फ्रीज कर दी है।